श्री पंचगुरुभ्यो नमः। श्री चंद्रप्रभाय नमः।

मुनिराज श्री इन्द्रनन्दि विरचित

श्री ज्वालामालिनी कल्प

भाषा टीका और मंत्र तंत्र यंत्र सहित

टीकाकार-

काव्य साहित्य तीर्थाचार्य, प्राच्य-विद्यावारिधि

श्री पं० चंद्रशेखरजी शास्त्री-देहली

प्रकाशक-

मूलचंद किसनदास कापडिया

दिगम्बर जैन पुस्तकालय, गांधी चौक-सूरत

प्रथमा वृति] वीर सं. २४९२ [प्रति १०००

मूल्य : पांच रुपये



निवेदन

जैन शास्त्रोंमें मंत्र शास्त्र और औषधिशास्त्र अनेक हैं उनमें मंत्र शास्त्रकी महिमा तो अपरंपार है। मंत्र शास्त्रोंमेंसे श्री ऋषि मण्डल यंत्र कल्प, भक्तामर स्तोत्र कल्प, कल्याण मंदिर स्तोत्र कल्प, णमोकार मंत्र कल्प–माहात्म्य तो यंत्रमंत्र व साधनविधि सहित प्रकट हो चुके हैं। लेकिन और भी मंत्रशास्त्र अन्धकारमें मौजूद थे व प्रकट नहीं हो सके थे ऐसे समयमें आजसे ३७ वर्ष पर जब हम सहकुटुम्ब श्री शिखरजीकी यात्रार्थं गये थे तब लौटते समय देहलीमें धर्मपुराकी धर्मशालामें ठहरे थे जिसकी सूचना मिलते ही वहांके एक महान् ब्राह्मण विद्वान श्री० पं० चन्द्रशेखरजी शास्त्री जो विद्यावारिधि आदि पदवीधारी थे हमसे मिलने आये थे। उनसे जैन साहित्य व मंत्र शास्त्रोंकी चर्चा करते हुए उन्होंने बताया कि जैन मंत्रशास्त्र तो अगाध हैं। "हमने यहां (देहली) के शास्त्र भण्डारसे बड़ी मेहनतसे भैरव पद्मावती कल्प, ज्वालामालिनी कल्प, अंबिका कल्प, मंत्र–व्याकरण व बीज कोष मूल प्राप्त करके उनकी प्रेस कॉपी की है व उन्हें हिन्दी अर्थ सहित तैयार किये हैं। यदि आप इनमेंसे जो छपाना चाहें मैं आपको उचित मूल्य पर दे सकता हूं" तो हमने आपकी ये प्रेस कापियां मंगाकर देख ली थीं फिर सूरत आकर उनमेंसे "भैरव पद्मावती कल्प" यंत्र मंत्र व साधनविधि सहित आपसे मंगा लिया था बादमें अनेक कारणवशात् यह ग्रन्थ हम जल्दी प्रकट नहीं कर सके थे लेकिन आजसे १३ वर्ष पूर्व यह ग्रन्थ प्रकट किया था जो करीब–करीब बिक चुका है। (सिर्फ इनीगिनी प्रतियां शेष हैं)

इस ग्रन्थके मुख पृष्ठपर हमने प्रकट किया था कि आगे हम "ज्वालामालिनी कल्प" भी प्रकट करनेकी भावना रखते हैं ऐसा पढ़कर हमारे पास इस कल्पके लिए मांग आती ही रहती थी। इसलिए हमने पं० चंद्रशेखरजी शास्त्रीसे पत्रव्यवहार करके इस "ज्वालामालिनी कल्प" मंत्र-शास्त्र जो हिन्दी अर्थ व यंत्र-मंत्र व साधन विधि सहित है, देहलीसे मंगा लिया था जिसको भी प्रकट करनेमें अनेक कार्यवशात् विलंब हुआ तो भी हर्ष होता है कि यह मंत्र-शास्त्र आज हम साधन विधि व यंत्र मंत्र सहित प्रकट कर रहे हैं।

जब "भैरव पद्मावती कल्प" बारहवीं शताब्दिमें श्री मल्लीषेण-सूरिने रचा था, और यह "ज्वालामालिनी कल्प" यंत्र-शास्त्र मुनिराज श्री इन्द्रनन्दीने दशवीं शताब्दिमें रचा था। यह मंत्र-शास्त्र दस परिच्छेदोंमें शास्त्रोक्त मन-चाहे विधान करीब ७५ प्रकारकी साधन विधि सहित हैं तथा इसमें उसकी साधनाके २३ यंत्र भी बड़ा भारी खर्च करके दिये गये हैं।

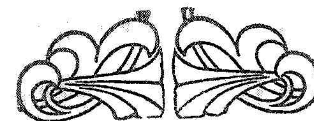
"भैरव पद्मावती कल्प" की प्रस्तावना तो श्री० पं० चंद्रशेखरजी शास्त्रीने लिख दी थी लेकिन 'ज्वालामालिनी कल्प' को हमने छापकर पूर्ण किया और आपको इसकी प्रस्तावनाके लिये देहली लिखा गया तब आपके पुत्र श्री चन्द्रमणिका पत्र आया कि हमारे पिताजी (पं० चन्द्रशेखरजी शास्त्री) तो १ वर्ष हुये गुजर गये हैं आदि। तब हमने इस यंत्रशास्त्रपर किसी महान विद्वानसे प्रस्तावना लिखाना उचित समझा व ऐसे विद्वान् हमें मिल गये जिनका नाम है-प्रो० उमाकांत प्रेमानन्द शाह एम. ए. पी. एच. डी. बड़ौदा। आप यंत्र शास्त्रके बड़े भारी विद्वान हैं व बड़ौदामें ओरिएंटल इनस्टीटयूटमें उच्च पद पर आसीन हैं तथा आप जैन दिगंबरके मार्गदर्शक हैं। आपने इस मंत्र शास्त्रकी प्रस्तावना बड़ी विद्वत्तापूर्वक लिख दी है जिसके लिये हम आपका हार्दिक उपकार मानते हैं।

इस ग्रन्थके श्लोकोंको जहांतक हो हमने शुद्ध किये हैं तो भी इसमें अशुद्धियां रह गई हैं ऐसा प्रस्तावना लेखकका अभिप्राय है तो भी सभी श्लोकोंका हिन्दी अर्थ तो ठीकर किया गया है।

हमारे ८ वें तीर्थंकर भगवान चन्द्रप्रभुकी कुलदेवी श्री ज्वालामालिनी थी उन्हींके नामसे ही यह मंत्र शास्त्र रचा गया है जो अक्षरशः पढ़ने, मनन करने व साधना करने योग्य है। हां, यह कार्य बड़े परिश्रमका है अतः बहुत कम भाई बहिन इसकी साधना कर सकेंगे तो भी यह मंत्र शास्त्र प्रत्येकको स्वाध्याय करनेयोग्य तो है ही।

इस ग्रन्थकी कोपीमें, यंत्रोंके ब्लोक बनानेमें तथा आज-कलकी छपाई व कागजकी मंहगीमें भी हमने इस ग्रन्थको प्रकट करनेका साहस किया है। आशा है इस मंत्र शास्त्रका भी शीघ्र प्रचार हो जायगा।

वीर सं. २४९२, सं. २०२३ भाद्रपद वदी ५ रविवार ता. ४-९-६६	निवेदक :— मूलचंद किसनदास कापड़िया-सूरत —प्रकाशक



प्रास्ताविक

श्री० सेठ मूलचन्दजी कापडिया सूरतने " भैरव पद्मावती-कल्प " नामक श्री० मल्लिषेणसूरि कृति ग्रंथ वीर संवत् २४७९ में प्रसिद्ध किया था। यह ग्रंथ स्व० श्री० पं० चन्द्रशेखरजी शास्त्री (देहली) कृत भाषा टीका समेत छपा था, और उसका सम्पादन भी उन्होंने किया था।

इस वर्ष श्री कापडियाजी, मुनिराज श्री० इन्द्रनन्दि-विरचित " श्री ज्वालामालिनी कल्प " प्रसिद्धिमें ला रहे हैं। साथमें स्व० पं० चन्द्रशेखरजी शास्त्री रचित भाषा टीका और यन्त्रादि, विषयानुक्रम, के अलावा ज्वालामालिनी साधनविधि, ज्वालिनी-स्तोत्र, ब्राह्मादि अष्टमातृका पूजा आदि प्रकट कर रहे हैं जिसके लिए आप धन्यवादके पात्र हैं।

इन्द्रनन्दी रचित यह ग्रन्थ श्री मल्लिषेणके " भैरव पद्मावती कल्प " से प्राचीन है। यह ग्रन्थ प्रसिद्ध हो ऐसी मेरी आकांक्षा बहुत समयसे थी क्योंकि जैन मन्त्र-तन्त्र शास्त्रके इतिहासमें इस ग्रन्थका अनोखा स्थान है। उपलब्ध जैन तन्त्र ग्रन्थोंमें, खास करके दिगम्बर जैन तन्त्र ग्रन्थोंमें इससे प्राचीन कोई ग्रन्थ शायद नहीं है।

स्व० रायबहादुर हीरालालजीने A Catalogue of Sanskrit and Prakrit manuscripts in the Central

Provinces and Berar नामक ग्रन्थसूची नागपूरसे ई० स० १९२६ में प्रसिद्ध की थी जिसमें इस ग्रन्थका निर्देश था। अपनी Introduction में उन्होंने श्री इन्द्रनन्दीके बारेमें लिखते हुए लिखा कि—

By this author we have the work Jvalamalini-Kalpa. It deals with the cult. of propitiating the goddess of fire Jvalamalini. The work opens with an account of the circumstances of the origin of the cult. Elacharya, a sage and leader of Dravida-gana, lived at Hemagrama in Daksinadesa. He had a female pupil named Kamala-Sri. Once she became possessed of a Brahma-Rakshahsa under whose influence she indulged in all sorts of acts and talks decent or indecent. xx Elacharya sought the aid of Vahnidevata that dwelt on the top of the Nilagiri hills. He inculcated the art which Indra-nandi long after him professes to expose in writing.

जैसा कि इस ग्रंथको पढ़नेसे मालूम होगा, द्रविडगणके नायक श्री हेलाचार्यने अपनी शिष्या कमलश्री जो ब्रह्मराक्षससे ग्रहित थी उसकी ग्रहपीडा मिटानेके लिए वह्नि-देवता (ज्वालामालिनी देवी) की साधना की थी। यह साधनविधि परम्परासे इन्द्रनन्दीको प्राप्त हुई जिन्होंने इस ग्रन्थकी रचना की।

रायबहादुर हीरालालजीने इन्द्रनन्दीकी गुरु-परम्परा इस तरह दी है—

द्राविड–गण
|
ईन्द्रदेव
|
ईन्द्रनन्दी
|
वासवनन्दी
|
वर्षनन्दी
|
हर्षनन्दी
|
हर्षनन्दी
|
ईन्द्रनन्दी (इस ग्रन्थके रचयिता)

श्री कापडियाजीने इस ग्रन्थको स्व० पं० चन्द्रशेखरजी शास्त्रीने अपनी भाषा टीका सहित जो प्रति लिखी थी उसके आधार पर छापा है। इसमें ग्रन्थके अंतमें ग्रन्थ कर्ताकी प्रशस्ति नहीं है। इस प्रशस्तिमें ग्रन्थ रचनाका समय आदिकी महत्वपूर्ण हकीकत है जो रायबहादुर हीरालालजीने दी है और जो मैंने जैन-सिद्धांत-भवन, आराकी एक प्रतिमें भी देखी है। दशम परिच्छेदके अन्तके बाद, आरावाली प्रतिमें (पृ० ३७ ब से) निम्नलिखत पाठ है—

द्रविण समय मुख्यो जिनपतिमार्गोचितक्रियापूर्णः ।
व्रतसमितिगुप्तिगुप्तो हेलाचार्यो मुनिर्जयतु ॥
यावत्क्षितजलधिशशाङ्काम्बरताराकुलाचला—
स्तावद्-हेलाचार्योक्तार्थे स्थेयाज्ज्वालिनीकल्पः ॥

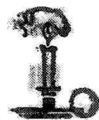
आसीदिन्द्रादिदेवस्तुतपदकमलश्रीन्द्रनन्दिमुनीन्द्रो ।
नित्योद्यत्सच्चरित्रप्रविमलजलनिर्धौतपापोपलेपः ॥
××××वामलोद्यत्प्रगुणगुणभृतोत्तीर्णसिद्धा—
न्ताम्भोराशिस्त्रिलोकयम्बुजवनविचरत् सद्यशो राजहंस ॥
यद्वृत्तं दुरितारिसैन्यहनने चण्डासिधारायते ।
चित्तं यस्य शरत्सरः सलिलवत्स्वच्छं सदा शीतलम् ॥
कीर्त्तिः शारदकौमुदीशशभृतो ज्योत्स्नेव यस्यामला ।
स श्रीवासवनन्दि सन्मुनिपतिः शिष्यस्तदीयो भवेत् ॥
शिष्यस्तस्य महात्मा चतुरनियोगेषु चतुरमिति विभवः ।
श्री वर्षनन्दिगुरुरिति वुधमधुपनिसेवितपदाब्जः ॥
लोके यस्य प्रसादादजनि मुनिजनः सत्पुराणार्थवेदी ।
यस्याशास्तम्भमूर्धन्यतिविमलयशःश्रीवितानो निबद्धः ॥
×××××पौराणिककविवृषभाद्योतितास्तत्पुराण—
व्याख्यानाद्-हर्षनन्दि प्रथितगुणस्तस्य किं वर्ण्यतेऽत्र ॥
शिष्यस्तस्येन्द्रनन्दि विमलगुणगणोद्दामधामाभिरामः
प्रज्ञातीक्ष्णास्त्रधाराविमलितबहलाज्ञानवल्ली वितानः ।
जैने सिद्धांतवार्धौ विमलितहृदयस्तेन सद्ग्रन्थतोऽयं,
हेलाचार्योदितार्थो व्यरचि निरुपमो ज्वालिनीमन्त्रवादः ॥
अष्टाशतैकषष्टिप्रमाणशकवत्सरेष्वतीतेषु ।
श्रीमान्यखेटकटके पर्वण्यक्षयतृतीयायाम् ॥
शतदलसहितचतुःशतपरिमाणग्रन्थरचनया युक्तं ।
श्रीकृष्णराजराज्ये समाप्तमेतन्मतं देव्याः ॥
इति हेलाचार्यप्रणीतार्थे श्रीमदिन्द्रनन्दियोगीन्द्रविरचित-
ग्रन्थसंदर्भे ज्वालिनी-मते दशविधाकारपरिलेखनं समाप्तम् ॥

श्री रायबहादुर हीरालालजीने भी ग्रन्थ निर्माणका समय बतानेवाला अन्तिम श्लोक अपने प्रास्ताविक वक्तव्यमें दिया है। इसके अनुसार, श्री हे (ए ?) लाचार्यकृत ग्रंथके तात्पर्यानुसार श्रीमद् इन्द्रनन्दि–योगीन्द्रने इस ज्वालिनी–मत संज्ञक ग्रंथकी रचनाकी परिसमाप्ति मान्यखेटमें (वर्तमान मालखेड़–यह राष्ट्रकूट राजाओंकी राजधानी थी–) शक संन् ८६१ (= ई० स० ९३९) में अक्षय तृतीयाके दिन की गई।

अतः यह ग्रन्थ ईसाकी दसवीं शतीके पूर्वार्द्धका होनेसे प्राचीन है। इस ग्रन्थकी प्राचीन हस्तलिखित प्रतियां लेकर इन सबके पाठको देखकर संशोधित पाठमें इसका पुनः सम्पादन करना आवश्यक है।

श्री कापडियाजीका यह प्रकाशन इस ग्रन्थको सर्व प्रथम प्रसिद्धिमें लानेका कार्य करता है। किंतु मुद्रित ग्रन्थमें अशुद्धियां रह गई हैं।

—उमाकांत प्रेमानन्द शाह–वडौदा।
ता० १–९–६६



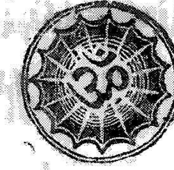
विषय–सूची



श्री ज्वालामालिनी देवी (दक्षिणकी एक धातुकी मूर्ति)

श्री ज्वालामालिनी कल्प ग्रन्थकी श्री चंद्रप्रभुकी अधिष्ठात्रीदेवी

(सेठ माणेकचन्द मलुकचन्द दोशी वकील फलटनसे प्राप्त)



श्री पंचगुरुभ्यो नमः । श्री चंद्रप्रभाय नमः ।

मुनिराज श्री इन्द्रनन्दि विरचित—

श्री ज्वालामालिनी कल्प

भाषाटीका और मंत्र तंत्र सहित

प्रथम परिच्छेद

॥ मंगलाचरण ॥

चंद्रप्रभजिननाथं, चंद्रप्रभमिन्द्रनंदिमहिमानं ।
ज्वालामालिन्यर्चित, चरणसरोजद्वयं वंदे ॥ १ ॥

अर्थ—जिनकी महिमा इन्द्रनन्दिको भी प्रसन्न करनेवाली है, जिनके चरणकमल ज्वालामालिनी नामकी देवीसे पूजे

जाते हैं ऐसे चंद्रमाके समान प्रभावाले भगवान चंद्रप्रभको मैं नमस्कार करता हूं ॥ १ ॥

कुमुददलधवल गात्रा, महिषमहावाहिनोज्वलाभरणा ।
मां पातु वह्नि देवी, ज्वालामाला करालांगी ॥ २ ॥

अर्थ—कुमुदके दलके समान श्वेत शरीरवाली, महिषकी सवारी तथा उज्वल आभूषणवाली, अग्निके समान भयंकर अंगवाली ज्वालामालिनी मेरी रक्षा करे ॥ २ ॥

जयताद्देवी ज्वालामालिन्युद्यत्त्रिशूलपाश ऊषा ।
कोदंडकांड फलवरद, चक्रचिह्नोज्वलाष्टभुजा ॥ ३ ॥

अर्थ—उठे हुए त्रिशूल, पाश, मछली, धनुष, मंडल फल वरद (अग्नि) और चक्रके चिह्नसे उज्वल अष्ट भुजावाली ज्वालामालिनी देवी जयवन्त हो ॥ ३ ॥

अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायान्, सकलसाधुमुनिमुख्यान् ।
प्रणिपत्य मुहुर्मुहुरपिवक्ष्येऽहं, ज्वालिनीकल्पम् ॥ ४ ॥

अर्थ—मैं अर्हंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, सर्व साधुओं और मुख्य मुनियोंको वारम्वार नमस्कार करके ज्वालामालिनी कल्पको कहूंगा ॥ ४ ॥

दक्षिण देशे मलय हेम ग्रामे, मुनिर्ममहात्मासीत् ।
हेलाचार्यो नाम्ना द्रविडगणाधीश्वरो धीमान् ॥ ५ ॥

ग्रन्थ रचनाका कारण—

कमलश्रीकी कथा

अर्थ—दक्षिण देशके मलय हेम नामके ग्राममें द्रविड गणके अधीश्वर हेलाचार्य नामके बुद्धिमान महात्मा मुनि थे ॥५॥

तच्छिष्या कमलश्री श्रुतदेवी वा समस्त शास्त्रज्ञा ।
सा ब्रह्मराक्षसेन ग्रहीता, रौद्रेण कर्मवशात् ॥ ६ ॥

अर्थ—उनकी एक समस्त शास्त्रोंको जाननेवाली दूसरी श्रुतदेवीके समान कमलश्री नामकी शिष्याको भाग्यवश रौद्र ब्रह्मराक्षसने पकड़ लिया ॥ ६ ॥

रोदिति हाहाकारैः स्फुटाट्ट हासं तनोति संध्यायां ।
जपति पठत्यथ वेदान्, हसति पुनः कह कह ध्वनिना ॥७॥

अर्थ—अब वह कभी तौ हाहाकार करके रोती, कभी सायंकालके समय अट्टहास कर करके हंसती, कभी जप करती, कभी वेदोंको पढ़ती और कभी कहकहा लगाकर हंसती ॥ ७ ॥

को सा वास्ते मंत्री, यो मोचयति स्वमंत्रशक्त्या मां ।
वक्तीति सावलेपं, सविकारं जृंमणं कुरुते ॥ ८ ॥

अर्थ—वह कभी२ कष्टसे कहती, कि ऐसा कौन मंत्र-

शास्त्री है, जो मुझे अपने मंत्रकी शक्तिसे छुड़ावे और फिर विकारसे जंभाई लेने लगती ॥ ८ ॥

दृष्ट्वा तामिति दुष्टग्रहेण, परिपीडितां मुनीन्द्रोऽसौ ।
व्याकुलितोऽभूतत्प्रविधानकर्तव्यतामूढः ॥ ९ ॥

अर्थ—वह मुनिराज हेलाचार्य उसको इस प्रकार दुष्ट ग्रहसे पीड़ित देखकर किंकर्तव्य विमूढ होकर बड़े दुःखी हुए ॥ ९ ॥

तद्ग्रहविमोक्षणार्थं, तद्ग्रहसमीपनीलगिरिशिखरे ।
विधिनैव वह्नि देवांस, साधयामास मुनिमुख्यः ॥ १० ॥

अर्थ—इसके पश्चात् उन महामुनिने उस ग्रहको छुड़ानेके वास्ते उसके घरके समीप नीलगिरि पर्वतके शिखर पर विधिपूर्वक वह्निदेवी (ज्वालामालिनि) को सिद्ध किया ॥१०॥

दिन सप्तकेन देव्या, प्रत्यक्षीभूतया पुरः स्थितया ।
मुनिरुक्तः किं कार्यं, तवार्य्य वद मुनिरुवाचेत्थं ॥ ११ ॥

अर्थ—सात दिनके पश्चात् देवीने प्रत्यक्षरूपसे सामने आकर उस मुनिसे कहा—हे आर्य ! आपका क्या कार्य है ? मुझे बतलाईये ॥ ११ ॥

मुनिने इस प्रकार कहा—

कामार्था ह्यैहिकफलसिद्धार्थं, देविनोपरुद्धासि ।
किन्तु मया कमलश्रीग्रहमोक्षायोपरुद्धासि ॥ १२ ॥

अर्थ—हे देवि ! मैंने आपको काम अर्थ आदि लौकिक फलोंकी सिद्धिके वास्ते नहीं बुलाया है किन्तु कमलश्रीको ग्रहसे छुड़ानेके लिये बुलाया है ॥ १२ ॥

तस्मात्तद् ग्रहे मोक्षं, कुरु देव्येतावदेव मम कार्यं ।
तद्वचनं श्रुत्वासा बभाण, तदिदं कियन्मात्रं ॥ १३ ॥

अर्थ—इस वास्ते हे देवि ! आप उस ग्रहको छुड़ाकर मेरा इतना कार्य कर दीजिए । उसके वचन सुनकर वह बोली—यदि यही है तो यह कितना काम है ? ॥ १३ ॥

मा मनसि कृथाः खेदं, मंत्रेणानेन मोक्षयेत्युक्त्वा ।
मृदुतरमायस पत्रं, विलिखितमंत्रं ददौ तस्मै ॥ १४ ॥

अर्थ—मनमें खेद मत करो, इस मन्त्रसे छुडालो, यह कहकर उसने कोमल लोह पत्र पर लिखा हुवा मंत्र उस मुनिको दे दिया ।

तन्मन्त्रविधिमजानन् , पुनरपि मुनियो बभाणतां देवीं ।
माऽस्मिन्वेद्मिन किमप्य, हमतो वितृत्ये तदभि देहि ॥ १५ ॥

अर्थ—उस मंत्रकी विधिको न जानते हुए उन मुनि-

राजने फिर उस देवीसे कहा—"मैं इसकी विधिको नहीं जानता हूं" अतएव आप मुझको इसकी पूर्ण विधिको कहें ।

तस्मै तया ततस्तद्व्याख्यातं, सोपदेशमथ तत्वं ।
पुनरपि तद्भक्तिवशाद्ददामि तत्सिद्ध विद्येत्यं ॥ १६ ॥

अर्थ—तब उस देवीने उपदेश सहित उस तत्वको मुनिको बतलाया और कहा—"उस सिद्ध विद्याको मैं तुम्हारी भक्तिके वशसे फिर भी देती हूं।"

साधनविधिना यस्मै, त्वं दास्यसि होमजपविहीनोऽपि ।
भविता ससिद्ध विद्या, नोदास्यसि यस्यसोऽत्र पुनः ॥१७॥

अर्थ—तुम हवन तथा जपसे रहित हो जानेपर भी साधन विधिसे जिसको भी दोगे यह विद्या उसको ही सिद्ध हो जावेगी और जिसे न दोगे उसको सिद्ध न होगी ॥ १७ ॥

उद्यान वने रम्ये जिन भवने, निम्नगा तटे पुलिने ।
गिरिशिखरेऽन्य स्मिन्वा स्थित्वा, निर्जन्तुके देशे ॥ १८ ॥

अर्थ—उद्यान, सुन्दर बन, जैन मंदिर, नदीका किनारा, या पासका प्रदेश, पर्वतके शिखर पर अथवा किसी अन्य एकांत स्थानमें स्थित होकर ॥ १८ ॥

प्रजाप्य नियतं तथा युतं हुत्वा प्रकरोतु ।
प्रकरोतु पूर्वसेवां प्रणिगद्यैवं स्वधामगता ॥ १९ ॥

अर्थ—*जप करना चाहिये । और दश सहस्र (अयुत) हवन करके अपने कार्यको पूर्ण करना चाहिये । ऐसा कहकर वह देवी अपने स्थानको चली गई ॥ १९ ॥

तत्र स्थित एवं ततस्तमसौ दंदह्यमानमाध्याय ।
दहनाक्षरैरुदन्तं दुष्टं निर्घाटयामास ॥ २० ॥

अर्थ—तब उस मुनिने वहां बैठे-बैठे ही उस पीड़ा देनेवाले तथा दहन करनेवाले अक्षरोंके वेगसे रोनेवाले दुष्ट ब्रह्मराक्षसको दूर कर दिया ॥ २० ॥

निर्घाटितो ग्रहश्चेद्यात्वेकं, भुवदहन ररररर बीजं ।
शेष दश निग्रहाणां किमस्त्य, साध्यो ग्रहः कोऽपि ॥

अर्थ—जब जलानेवाले प्रबल बीजाक्षरोंसे एक ऐसा ग्रह दूर हो गया तो फिर शेष दश ग्रहोंमेसे किस ग्रहको दूर करना कठिन हो सकता है ? अर्थात् सभी दूर किये जा सकते हैं ॥२१॥

ग्रंथकी गुरु परम्परा

देव्यादेशाच्छास्त्रं तत्पुनर्ज्वालिनीमतंततश्चेदं ।
तच्छिष्यो गाङ्गमुनिर्नीलग्रीवो विजाब्जरव्यो ॥ २२ ॥

---

*हवन दशांश होता है । जब दश हजार हवन है, तो जप एक लाख करना चाहिये ।

अर्थ—उसके पश्चात् ज्वालामालिनीदेवीके मतका यह शास्त्र देवीकी आज्ञासे उस मुनिराजके शिष्य गांग मुनि नीलग्रीव और विजाब्ज ॥ २२ ॥

भार्याक्षान्तर सब्बा विरुवट्ट: क्षुल्लक स्तथेत्यनया ।
गुरु परिपाट्या विच्छेनसम्प्रदायेन वागच्छत् ॥ २३ ॥

अर्थ—भार्याक्षान्तर सब्ब तथा विरुवट्ट नामके क्षुल्लकके पास इस प्रकार गुरु परिपाटीसे नष्ट न होकर सम्प्रदायसे आया ॥ २३ ॥

कंदर्प्पेण ज्ञातं तेनापि स्वनुत निर्विशेषाय ।
गुणनंदि श्री मुनये व्याख्यातं सोपदेशं तत् ॥ २४ ॥

अर्थ—इसके पश्चात् इसका ज्ञान कंदर्प नामके मुनिको हुआ और उन्होंने इसका व्याख्यान उपदेश सहित अपने शिष्य गुणनंदिके सामने किया ॥ २४ ॥

पार्श्वे तयोर्द्वयोरवि तच्छास्त्रं ग्रंथतोऽर्थतश्चापि ।
मुनिनेन्द्रनन्दिनाम्नाय सम्यगीडितं विशेषेण ॥ २५ ॥

अर्थ—उन दोनोंके पास इंद्र नंदि नामके मुनिने उस शास्त्रको ग्रंथरूपसे तथा अर्थरूपसे भली प्रकार पढ़कर विशेषरूपसे कहा ॥२५॥

क्लिष्टं ग्रंथं प्राक्तन शास्त्रं तदेति स्वचेतसि निधाय ।
तेनेन्द्रनंदिमुनिना ललितार्या वृतगीताद्यैः ॥ २६ ॥

अर्थ—प्राचीन शास्त्र बड़ा क्लिष्ट ग्रंथ है । अपने मनमें यह सोचकर उस इंद्रनंदि मुनिने सुन्दर आर्या गीति आदि छन्दोंसे ॥ २६ ॥

हेलाचार्योत्कार्थं ग्रंथपरावर्तनेन रचितमिदं ।
सकलजगदेकविस्मयजगतिजनहितकरं शृणुत ॥ २७ ॥

अर्थ—हेलाचार्यकी प्रशंसाके वास्ते संपूर्ण जगतको आश्चर्य करनेवाला तथा संसारके प्राणियोंका हित करनेवाला यह शास्त्र उस प्राचीन शास्त्रके बदलेमें बनाया इसे सुनो ।

ग्रन्थकी अनुक्रमणिका

मंत्रिग्रहसन्मुद्रा मण्डलकटुतैलजंत्रवश्यसुतंत्रं ।
स्नपनविधिर्नीराजनविधिरथ साधनविधि श्चेति ॥ २८ ॥

अर्थ—मंत्री ग्रह, बीजाक्षर विधान, मंडल, कम्पन तैल, वश्ययंत्र, वश्यतंत्र, वसुधारा स्नान विधि, नीराजन विधि, और साधन विधि ।

अधिकारादेषां दश, चिदात्मनां स्वरूपनिर्देशं ।
वक्ष्येहं संक्षेपात्प्रकटं, देव्या यथोद्दिष्टं ॥ २९ ॥

अर्थ—इन दश अधिकारोसे मैं संक्षेपमें देवीके कथनानुसार इस ग्रंथका वर्णन करूंगा ॥ २९ ॥

मन्त्रीके लक्षण

मौनीर्नियमित चितो मेधावि बीजदारण समर्थः ।
मायामदनमदोनः सिध्यति मंत्रिर्नसंदेहः ॥ ३० ॥

अर्थ—मौनसे रहनेवाला, चित्तको नियममें रखनेवाला, बुद्धिमान, बीजाक्षरोंको अलग करनेमें समर्थ माया कामदेव तथा मदसे रहित मंत्रवाला पुरुष निस्संदेह सिद्धिको प्राप्त कर लेता है ।

सम्यग्दर्शनशुद्धो देव्यर्चनतत्पुरो व्रतसमेतः ।
मंत्रजपहोमनिरतो नालस्यो ज्ञायते मंत्री ॥ ३१ ॥

अर्थ—जो शुद्ध सम्यग्दृष्टी देवीको पूजनेवाला व्रती मन्त्र जप तथा हवनको करनेवाला तथा आलस्य रहित हो वह मंत्री 'मंत्रवाला' होता है ॥ ३१ ॥

देवगुरुसमय भक्तः सविकल्पः सत्यवाक् विदग्धश्च ।
वाक्पटुरपगतशुक्रः शुचिरौद्रमना भवेन्मंत्री ॥ ३२ ॥

अर्थ—देव शास्त्र तथा गुरुका भक्त सावधान सत्यवादी बुद्धिमान् बोलनेमें चतुर ब्रह्मचारी पवित्र तथा रौद्र मनवाला मंत्री होता है ।

देव्याः पदयुगभक्तो हेलाचार्यक्रमाब्जभक्तियुतः ।
स्वगुरूपदिष्टमार्गेण वर्तते यः स मंत्री स्यात् ॥ ३३ ॥

अर्थ—जो देवीके चरणकमलका भक्त हो, हेलाचार्यके चरण कमलमें भक्ति रखता हो और अपने गुरुके बतलाये हुए मार्ग पर चलनेवाला हो, वह मंत्री होता है ॥ ३३ ॥

विद्यागुरुभक्तियुते तुष्टिं पुष्टिं ददाति खलु देवी ।
विद्यागुरुभक्तिवियुक्ते चेतसि द्वेष्टि सुतरांसा ॥ ३४ ॥

अर्थ—देवी विद्या तथा गुरुमें भक्ति रखनेवाले पुरुषको तुष्टि और पुष्टि दोनों ही देती है, तथा विद्या और गुरुमें भक्ति न रखनेवालोंसे चित्तमें स्वभावसे अत्यन्त द्वेष करती है ॥ ३४ ॥

सम्यग्दर्शनदूरो वाकुंठपूछांदसो भयसमेतः ।
शून्यहृदयश्च लज्जः शास्त्रेऽस्मिन् नो भवेन्मंत्री ॥ ३५ ॥

अर्थ—जो सम्यग्दर्शनसे रहित हो, अशुद्ध वाणीवाला हो, वेद पाठी हो, भय करनेवाला हो, शून्य हृदय हो, और लज्जा करता हो, वह इस शास्त्रमें मन्त्री नहीं हो सकता ॥ ३५ ॥

इति हेलाचार्य प्रणीत अर्थमें श्रीमान् इन्द्रनन्दि मुनि विरचित ग्रन्थ ज्वालामालिनी कल्पकी आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री कृत भाषा टीकामें मंत्री लक्षणवाला पहला परिच्छेद समाप्त हुआ ॥ १ ॥

द्वितीय परिच्छेद

ग्रहोंके पकड़नेके कारण

अतिहृष्टमति विषणं भवांतरस्नेहवैरसम्बधं ।
भीतं चान्यमनस्कं गृहाः प्रगृह्णंति भुवि मनुजं ॥१

अर्थ—अत्यन्त प्रसन्न मनवाले, दुःखी मनवाले, अथवा अन्य मनस्क और डरपोक पुरुषको पूर्व जन्मके प्रेम अथवा वैरके सम्बन्धसे ग्रह पकड़ लेते हैं ॥ १ ॥

रतिकामा वलिकामा निहन्तुकामा ग्रहाः प्रग्रहणन्ति ।
वैरेण हन्तु कामा गृहणान्त्यवशेषकारणैः शेषाः ॥ २ ॥

अर्थ—कोई ग्रह रतिकी इच्छासे, कोई बलिकी इच्छासे, कोई मारनेके लिये, कोई वैरके कारणसे घातके लिये, तथा शेष ग्रह अन्य कारणोंसे, पुरुषको पकड़ते हैं ॥ २ ॥

ग्रहोंके भेद

तेऽपि ग्रहा द्विधास्यु र्दिव्यादिव्यग्रहप्रिभेदेन ।
दिव्याश्चापि द्विधा पुरुषस्त्रीग्रहविभेदेन ॥

अर्थ—वह ग्रह दो प्रकारके होते हैं—दिव्य और अदिव्य, उनमेंसे दिव्य ग्रहोंके भी दो भेद होते हैं-पुरुष ग्रह तथा स्त्री ग्रह ॥

कौन ग्रह किसको पकडता है ?

पुरुषग्रहोथ पुरुषं स्त्रियं तथा स्त्री ग्रहो न गृह्णाति ।
पुरुष ग्रहस्तु वनितां गृह्णाति स्त्रीगृहः पुरुषं ॥ ४ ॥

अर्थ—साधारणतः पुरुष ग्रह पुरुषको और स्त्री ग्रह स्त्रीको ग्रहण नहीं करते, किंतु पुरुष ग्रह स्त्रीको और स्त्री ग्रह पुरुषको ही ग्रहण करते हैं ॥ ४ ॥

रतिकामेग्रहनियमः प्रोक्तोऽयं नेतरत्र नियमोऽस्ति ।
पुरुषगृहोऽपि पुरुषं गृह्णाति स्त्रीगृहोपि वनितानां ॥ ५॥

अर्थ—यह नियम ग्रहोंके रतिकी कामनासे पकड़नेसे है । अन्यत्र नहीं है, क्योंकि अन्य इच्छाओंमें पुरुषग्रह पुरुषको और स्त्री ग्रह स्त्रीको भी ग्रहण करते हैं ॥ ५ ॥

दिव्य पुरुष ग्रहोंके लक्षण

देवो नागो यक्षो गंधर्वो ब्रह्म राक्षसश्चैव ।
भूतो व्यंतर नामेति सप्त पुरुष ग्रहास्तेस्युः ॥ ६ ॥

अर्थ—देव, नाग, यक्ष, गंधर्व, ब्रह्म, राक्षस, भूत, और व्यंतर, यह सात पुरुष ग्रह होते हैं ॥ ६ ॥

देवः सर्वत्रशुचिर्नागः शेते भनक्ति सर्वांगं ।
क्षीरं पिबति च नित्यं यक्षो रोदिति हसति बहुधा ॥७॥

अर्थ—देव सदा पवित्र रहता है, नाग सोता है, सब अंगको तोड़ डालता है और नित्य दूध पीता है। यक्ष बहुत प्रकारसे रोता है और हसता है ॥ ७ ॥

गंधर्वो गायति सुस्वरेण सुब्रह्म राक्षसः संध्यायां ।
जयति च वेदान् पठति स्त्रीष्वनुरक्तः सगर्वश्च ॥ ८ ॥

अर्थ—गंधर्व अच्छे स्वरसे गाता है, ब्रह्म राक्षस संध्याके समय जप करता है, वेदोंको पढ़ता है, स्त्रियोंमें अनुरक्त रहता है, और बड़ा घमंडी होता है ॥ ८ ॥

नेत्रे विस्फारयति श्लथगति जृंभति मनोति हस्ति च भूतः ।
मूर्च्छति रोदिति धावति बहुमोजी व्यंतर स्तथा भुवि पतति ॥९॥

अर्थ—भूत आंख फाड२ कर देखता है, शिथिल गतिसे जंभाई लेता है, मिन२ करके बोलता है, और हँसता है। व्यंतर मूर्छित होता है, रोता है, दौडता है, बहुत भोजन करता है, और जमीन पर गिर२ पड़ता है ॥ ९ ॥

दिव्यपुरुषगृहाणां लक्ष्मणमेवं मया समुद्दिष्टं ।
दिव्यस्त्रीग्रहलक्षणमधुना व्यावर्ण्यते श्रृणुत ॥ १० ॥

अर्थ—इस प्रकार दिव्य पुरुष ग्रहोंका लक्षण कहा गया। अब दिव्य स्त्री ग्रहोंका लक्षण कहा जाता है ॥ १० ॥

दिव्य स्त्री ग्रह और उनके लक्षण

काली तथा कराली कंकाली काल राक्षससी जंघी ।
प्रेताशिनी च यक्षी वैताली क्षेत्रवासिनी चेति ॥११॥

अर्थ—काली, कराली, कंकाली, कालराक्षसी, जंघी, प्रेताशिनी, यक्षी, वैताली, और क्षेत्रवासिनी, यह नौ स्त्री ग्रह हैं।

कृष्णं भवेच्छरीरं हृत्करलोचनानि दह्यंते ।
काल्यामपि देहस्य करालिकार्तो न भुन्क्तेऽन्नं ॥ १२॥

अर्थ—कालीसे पकड़े हुयेका शरीर कृष्ण हो जाता है। और हथेली हृदय तथा नेत्रोंमें जलन मालूम होती है। करालीसे पीडित अन्न नही खाता ॥ १२ ॥

मुखमापांडुरमंगं कृशंचकं कालिका गृहीतस्यभ्रमति ।
निशि वदति कौलिकमथाट्टहासं करोति राक्षस्यार्तः ॥१३॥

अर्थ—कंकालीसे पकड़े हुएका मुख तथा अंग पीला पड़ जाता है। राक्षसीसे पीड़ित हुआ रात्रिमें घूमता है, ऊंची२ बातें करता और अट्टहास करके हंसता है ॥ १३ ॥

जंघी ग्रहीत मनुजो मूर्च्छति रोदिति कृशं शरीरं स्यात् ।
प्रेताशिनी ग्रहीतश्चकितो वा भी करध्वनिना ॥ १४ ॥

अर्थ—जंघीसे ग्रहण किया हुआ मनुष्य मूर्च्छित होता है, रोता है, और उसका शरीर कृश हो जाता है, प्रेताग्निनीसे ग्रहण किया हुआ भय करनेवाली ध्वनिसे शब्द करता हुआ चकित हो जाता है।

उत्तिष्ठति दष्टोष्टः स एव वीर ग्रहो बुधैः प्रोक्तः।
मासद्वि तयात्परतस्तस्य चिकित्सा न लोकेऽस्ति ॥ १५ ॥

अर्थ—ऐसा व्यक्ति होंठ चबा२ कर उठता है। पंडितोंने इसीको वीर ग्रह कहा है। इसकी चिकित्सा दो माससे आगे संसारभरमें नहीं हो सकती ॥ १५ ॥

भोक्तुं न दद्दाति न च प्रियांगना संगमं तथा कर्तुं।
स्वयमेव प्रच्छन्नं जीवति सहते न वट यक्षी ॥ १६ ॥

अर्थ—वट यक्षीसे पीड़ित पुरुष न खाता है। और न अपनी प्रिय स्त्रीका ही संग करता है। यक्षी गुप्त रूपसे उसके साथ रहती है ॥ १६ ॥

शुष्यति मुखं कृशं स्याद्गात्रं वैतालिका ग्रही तस्य।
तत्क्षेत्रवासिनी पीड़ितो नरो नर्ति हा हसति ॥ १७ ॥

अर्थ—वैतालिकासे पकड़े हुएका मुख सूख जाता है और शरीर कृश हो जाता है। क्षेत्रवासिनीसे पीड़ित पुरुष नाचता है और हा हा करके हंसता है ॥ १७ ॥

विद्युन्निभमावेशं गृह्णाति च वदति कौलिकी भाषां।
धावति वेगे नेति स्त्रीग्रहमल्लक्षणं प्रोक्तं ॥ १८ ॥

अर्थ—ऐसा व्यक्ति बिजलीके समान आवेशको ग्रहण करता है। ऊँची ऊँची बातें करता है और वेगसे दौड़ता है। यह दिव्य स्त्री ग्रहोंका लक्षण कहा गया ॥ १८ ॥

मिथ्याग्रहस्तथान्ये विद्यन्ते तानपि विद्वान्सः।
सत्य ग्रहान् प्रकुर्वन्ति शेमुषी वैभवबलेन ॥ १९ ॥

अर्थ—विद्वान् लोग बुद्धिके बलसे मिथ्या ग्रहों (अदिव्य ग्रहों) को सत्य ग्रह (दिव्य ग्रह) कर देते हैं ॥ १९ ॥

अ क ख ग घ जैश्च उततपैयं श र ष ल स ल
क्ष व हर लैश्चान्योन्य।
परिवर्तितै रल युतै र्निर्दिष्टं भूत देव कौलिक मे तत् ॥२०॥

अर्थ—इन ग्रहोंका निवारण अ, क, ख, ग, घ, ज, उ, त, त, प, य, श, र, ष, ल, क्ष, व, ह, र और ल, से एक दूसरेको अ और ल से युक्त करके भूत और देवोंका कीलन होता है ॥ २० ॥

अदिव्य ग्रह

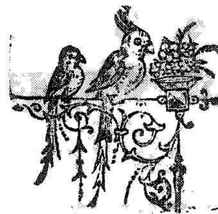
दंष्ट्राशृङ्खलनामादनु ग्रहाः शाखिलश्च शशनागः।
ग्रीवा भंगोच्चलितौ षड पस्मार ग्रहाः प्रोक्ताः ॥ २१ ॥

अर्थ—दंष्ट्रा, श्रृङ्खल, दनु, शाखिल, शशनाग, ग्रीवाभंग, और उच्चलित यह छह अपस्मार ग्रह या अदिव्य ग्रह कहे गये हैं ॥ २१ ॥

ये ते ग्रहा ह्यदिव्या मुंचति न जीवितं विना पुण्यात् ।
साध्यास्तंत्रेप्येषां मंत्र ध्याने पुनर्न्नस्तः ॥ २२ ॥

अर्थ—यह अदिव्य ग्रह विना विशेष पुण्यके जीता नहीं छोड़ते, मंत्र शास्त्रसे इनका निवारण सीखकर कष्ट दूर करना चाहिये ।

इतिश्री हेलाचार्य प्रणीत अर्थमें श्रीमान् इन्द्रनन्दि मुनि विरचित
ग्रन्थ ज्वालामालिनी कल्पकी काव्य साहित्य तीर्थाचार्य
प्राच्य विद्यावारिधि श्री चन्द्रशेखर शास्त्री कृत
भाषाटीकामें दिव्यादिव्य ग्रहाधिकार नामक
द्वितीय परिच्छेद समाप्तम् ॥ २ ॥



तृतीय परिच्छेद

सकलीकरण क्रिया

सकलीकरणेन विना मन्त्री स्तंभादिनिग्रहविधाने ।
असमर्थस्तेनादौ सकलीकरणं प्रवक्ष्यामि ॥ १ ॥

अर्थ—मन्त्री पुरुष स्तंभन आदि निग्रहके विधानमें सकलीकरण क्रियाके विना सफल नहीं हो सकता । अतएव आदिमें मैं सकलीकरण क्रियाको कहूंगा ॥ १ ॥

उभयकरांगुलिपर्वसु वं मं हं सं तथैव तं बीजं ।
बिन्यस्य तेन पश्चात्कुर्यात्सर्वांगसंशुद्धिं ॥ २ ॥

अर्थ—दोनों हाथोंकी उंगलियोंके जोडोंमें वं, मं, हं, सं और तं, बीजाक्षरोंको रखकर फिर सब अंगोंकी शुद्धि करे ॥ २ ॥

वामकरांगुलिपर्व्व सु रां, रीं, रूं, रौं, रः, न्यसेच्च रं बीजं ।
हां हीं हूं हौं हः पुन रेतान्यपि विन्यसेत्तद्वत् ॥ ३ ॥

अर्थ—बाएं हाथकी उंगलियोंके जोडोंमें रां, रीं रूं, रौं और रः बीजको रखकर फिर उसी प्रकार हां हीं हूं हौं और हः बीजोंको रक्खे ॥ ३ ॥

वामादीन्येतान्येव देवि पादौ च जघनमुदरं वदनं ।
शीर्षं रक्ष युगं स्वाहा तान्यात्मांग पचके विन्यस्य ॥ ४ ॥

अर्थ—इन्हींको वामांगसे आरंभ करके दोनों पग (पैर) जघन उदर (पेट) वदन (मुख) और शीर्ष (शिर) में लगाकर " रक्ष " और " स्वाहा " लगावे जो इस प्रकार है—

ॐ वं रां ह्रीं ज्वालामालिनि मम पादौ रक्ष२ स्वाहा ।
ॐ मं रीं ह्रीं ज्वालामालिनि मम जघनं रक्ष२ स्वाहा ।
ॐ हं रूं ह्रूं ज्वालामालिनि मम उदरं रक्ष२ स्वाहा ।
ॐ सं रौं ह्रौं ज्वालामालिनि मम वदनं रक्ष२ स्वाहा ।
ॐ तं रः ह्रः ज्वालामालिनि मम शीर्षं रक्ष२ स्वाहा ।

आपादमस्तकान्तं ध्यायेजाज्वल्यमानमात्मानं ।
भूतोरगशाकिन्यो भित्वा नश्यंति दुष्टमृगाः ॥ ५ ॥

अर्थ—अपनेको चरणसे मस्तक तक अत्यंत प्रज्वलित ध्यान करे इस प्रकार भूत सर्प शाकिनी और दुष्ट पशु दूर होकर नष्ट हो जाते हैं ।

क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षैं क्षों क्षौं क्षं क्षः प्राच्यादि दिक्षु विन्यसेत् ।
मूलादापर्यंता दिशाबंधं करोतीदं ॥ ६ ॥

अर्थ—फिर मूलसे चारों ओर पूर्वादि दिशाओंमें क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षं और क्षः को र ख दिशाबंध करे ॥ ६ ॥

आत्मानमभिसमन्ताच्चतुरस्रं वज्रपञ्जरमखण्डं ।
ध्यायेत्पीतं धीमानभेद्यमन्यैरिदं दुर्गं ॥ ७ ॥

अर्थ—फिर वह बुद्धिमान् अपने चारों ओर चौकोर वज्रमय अखण्ड पिंजरेके समान दूसरोंसे अभेद्य पीत वर्णके दुर्गका ध्यान करे ॥ ७ ॥

मंत्रजपहोमकाले नोपद्रवति सुमंत्रिणं कश्चित् ।
दुष्टग्रहो जिघांसुर्नलंघते दुर्गमध्यगतं ॥ ८ ॥

अर्थ—इस दुर्गके बीचमें बैठे हुए मंत्रीके पास मंत्र जप तथा होमके समयमें कोई भी दुष्ट ग्रह और मारनेकी इच्छा करनेवाला लांघकर नहीं आ सकता ॥ ८ ॥

भूतिषु सप्तभिषु त्रिभू, कोष्टा सर्वं दिग्मुखाः ।
लेख्या विधान वत्र्येक, चत्वारिंशत्पद प्रमाः ॥ ९ ॥

अर्थ—सातों प्रकारके भयोंसे पृथ्वीकी रक्षा करनेवाले उस वज्रमय पिंजरेमें सब दिशाओंकी पृथ्वी पर तीन कोठे बनावे। और उनमें विधिपूर्वक इकतालीस पद लिखे ॥ ९ ॥

अब उन पदोंका विस्तार बतलाया जाता है।

नव तत्वान्येकैकं नवपदविंध्योर्लिखेद्विधिक्रमशः ।
तत्कोण त्रिपद चतुष्कैः द्वादश पिंडान् प्रदक्षणतः ॥१०॥

अर्थ—नव तत्वोंमेंसे एक२ को लिखे, वह यह हैं—

द्रां, द्रीं, क्लीं, ब्लूं, सः, हां, आं, क्रों, क्षीं।

फिर क्रमसे विंध्यके नौ पदोंको लिखे—

उसके पश्चात् तीसरे कोठेमें तीन गुण चार अर्थात् बारह पिंडोंको लिखें जो यह हैं—"क्ष्म्ल्व्र्यूं, ह्म्ल्व्र्यूं, म्ल्व्र्यूं, म्ल्व्र्यूं, य्म्ल्व्र्यूं, प्म्ल्व्र्यूं, घ्म्ल्व्र्यूं, झ्म्ल्व्र्यूं' ख्म्ल्व्र्यूं, छ्म्ल्व्र्यूं, क्म्ल्व्र्यूं, क्म्ल्व्र्यूं।"

अत्राष्टमे समुद्देशे द्वादश पिंडाक्षाकार पिंडाद्याः।
स्तंभादिषु ग्रहाणां निग्रहणं चापि वक्ष्यन्ते ॥ ११ ॥

अर्थ—इन बारह पिंड आदिको आगे आठवें समुद्देशमें ग्रहोंके स्तम्भन तथा निग्रह आदिके साथ लिखेंगे ॥११॥

विलिखेच्च जयां विजयामजितां अपराजिता स जंभां।
मोहां गौरीं गांधारीं चक्रों ब्लूं पार्श्वेष्व ॐ जादिकाः ॥१२॥

स्वाहान्ताः क्षीं क्लीं पार्श्वस्थेषु
हां हीं हूं हौं हः श्चतुः कोष्टेषु विलिखेत्।
रेखाग्रेष्वखिलेषु च वज्रान्यथ वज्रपंजरं प्रोक्तम् ॥१३॥

अर्थ—जया, विजया, अजिता, अपराजिता, जंभा मोह, गौरी, गांधारी, क्रों, ब्लूं, का, क्षीं, और, क्लीं को, आदिमें ॐ। और अंतमें, स्वाहा, लगाकर बारह बिंदु पदोंके स्थानमें लिखे। वह इस प्रकार हैं। ॐ जयायै नमः। ॐ विजयायै नमः। ॐ अपराजितायै नमः। ॐ जम्भायै नमः। ॐ मोहायै नमः। ॐ गौर्यै नमः। ॐ गांधार्यै नमः। ॐ क्रों नमः। ॐ ब्लूं नमः। ॐ क्षीं नमः। ॐ क्लीं नमः। चारों कोठोंमें "हां हीं हूं हौं हः" इन पाचों शून्योंको लिखे। और सब रेखाओंके अग्र भागमें वज्रोंको लिखे। यह वज्रमय लिखे। यह वज्रमय पंजरका बर्णन किया गया।

पिंडेषु ह भानां देव्य विधानं पृथक् पृथक् लिख्यं।
तान् स्त्री नेके नैव प्रवेष्टयेन्मध्य पिंडेन ॥ १४ ॥

अर्थ—पिंडोंके लिखनेमें ह, म, आदि अक्षरोंको पृथक्-पृथक्रूपसे लिखकर पिंडोंके अन्दर सावधानीसे लगावे। फिर मध्य पिंडके द्वारा देवीको वेष्टित करे ॥ १४ ॥

रक्षक यन्त्र

खरकेशर मष्टदलं कमलं वाह्यै क्रमाद्दलेषु लिखेत्।
अष्टौ ब्राह्मण्याद्या ब्रह्मादि नमोन्तिमा मातृः ॥ १५ ॥

अर्थ—परागमें ज्वालामालिनीदेवीको लिखकर उसके चारों ओर अष्टदल कमल बनावे जिनमें क्रमसे आठों ब्राह्मणी आदि माताओंको आदिमें ॐ और अंतमें "नमः" लगाकर लिखे ॥ १५ ॥

प र घ ऊ ष छ ठ व पिंडान् चाष्टौ शेषान् पृथक्क्रमाद्विलिखेत्
तथैव प्रण वाद्यान्नवतत्व नमोंतिमान्मंत्री ।। १६ ।।

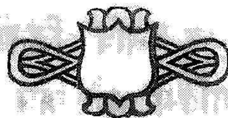
अर्थ—इसके पश्चात् दूसरे क्रमसे, प, र, घ, ऊ, ष, छ, ठ, और, व, पिंडोंको आदिमें ॐ और अंतमें "नमः" लगाकर लिखे ।। १६ ।।

क्रों सर्वदलाग्रेषु ह्रीं सर्वदलांतरेषु लिखेत् ।
ॐ नव तत्वं ज्वालिनी नम इत्या वेष्टयेद्बाह्ये ।। १७ ।।

अर्थ—सर्व दलोंके अग्रभागमें, क्रों, और बीचमें, ह्रीं, लिखकर बाहर "ॐ ह्रीं, क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं ह्रां आं क्रों क्षीं ज्वालामालिन्यै नमः ।" मंत्रसे वेष्टित कर दे ।। १७ ।।

इत्थं कथि तस्यास्य ज्वालिन्याः परम मूलमंत्रस्य ।
मध्ये ध्यायन्मातृभिरष्टाभिः परिवृतां देवीं ।।१८ ।।

अर्थ—इस कहे हुए ज्वालामालिनीके मूलमंत्रके बीचमें अष्ट मातृका देवियोंसे घिरी हुई ज्वालामालिनीदेवीका ध्यान करें ।। १८ ।।



ज्वालामालिनिका ध्यान

अब ज्वालामालिनिदेवीके स्वरूपका ध्यान करनेके वास्ते वर्णन करते हैं

चंद्रप्रभजिननाथं, चंद्रप्रभमिन्द्रनंदि महिमानं ।
भक्त्याकिरीटमध्ये, बिभ्राणं खोतमांगेन ।। १९ ।।

अर्थ—ज्वालामालिनिदेवी इन्द्रोंके प्रसन्न करनेवाली महिमावाले चंद्रमाके समान कांतिवाले भगवान् चंद्रप्रभुकी मूर्तिको भक्तिसे अपने शिर पर मुकुटके अंदर धारण करती है ।। १९ ।।

कुमुददलधवलगात्रां, महिषारूढां समुज्वलाभरणं ।
श्रीज्वालिनि त्रिनेत्रां, ज्वालामालाकरालांगी ।। २० ।।

अर्थ—वह देवी कुमुदके पुष्पके समान श्वेत शरीरवाली, भैंसेके वाहनवाली, उज्वल आभूषणोंवाली, तीन नेत्रवाली और अग्निकी शिखाके समूहसे भयंकर अंगवाली है ।। २० ।।

पाशत्रिशूलकार्मुकरोपण ऊष चक्र फलवर प्रदानानि ।
दधंती स्वकरैरष्टमयक्षेश्वरीं पुण्यां ।। २१ ।।

अर्थ—पाश, त्रिशूल, धनुष, बाण, मछली, चक्र, फल और वरदान देनेको अपने हाथोंमें धारण करनेवाली पुण्य स्वरूप आठवीं यक्षेश्वरी है ।। २१ ।।

श्रीमच्छन्दकशांकुशं हरियुतं कूटं स बिन्दुं लिखेत् ।
बाणान् द्वादशपिण्ड मातृ सहितान् शून्यैश्चतुर्भिर्युतान् ॥
श्चत्रिं वज्र सु पंजरांतरगतो दुष्टैरलंघ्यो भवेत् ।
शाकिन्यादि महाग्रहान् वितथान् रौद्रान् समुच्चाटयेत् ॥२२॥

अर्थ—उस समय आगे आनेवाले "श्रीमत आं क्रौं ईं क्षां द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः क्षल्व्यूं हल्व्यूं भल्व्यूं मल्व्यूं बल्व्यूं रम्ल्व्यूं ऊल्व्यूं खल्व्यूं छम्ल्व्यूं कम्ल्व्यूं क्षीं क्षूं क्षौं क्षः" मंत्रके वज्रमय पिंजरेके बीचमें बैठा हुआ मंत्री दुष्ट ग्रहोंसे अलंघ्य होकर शाकिनी और रौद्र महा ग्रहोंको शीघ्र ही दूर भगा देता है ॥ २२ ॥

पात्रं मुक्त्वा मंत्री बली हि मत्वा गृहाः प्रयान्ति यदि ।
तत्राप्याशा बंधं कुर्यादित्थं सनापैति ॥ २३ ॥

अर्थ—यदि मंत्रीको बली जानकर कोई ग्रह आवे तो दीशाबंध करनेसे वह दूर हो जाता है ।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः ज्वालिनी पादौ च जघनमुदरं वदनं ।
शीर्षं रक्ष द्वय होमांतम् परगात्र पंचके संस्थाप्य ॥ २४ ॥

अर्थ—"ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः ज्वालामालिनी पात्रस्य पादौ जघनं उदरं वदनं शीर्षं रक्ष रक्ष स्वाहा" इत्यादि ऊपरके अनुसार इस मंत्रको अपने पांचों अंगोंमें होमके अन्त तक स्थापित करके ।

ग्रह निग्रह निधान

क्ष ह भ म य र ऊकांतै पूछकार पूर्णेन्दुयुक्त निर्विष बीजैः ।
बिंदूर्द्ध रेफ सहितैर्म्मल वरयूं संयुतै र्द्विषद्विदबीजैः ॥२५॥

अर्थ—क्ष ह भ म य र उ ख छकार और पूर्णचंद्र (ठ) सहित निर्विष (क) बीजोंसे बिन्दु ऊर्ध्व रेफ सहित मलवर और यूं से युक्त शत्रुओंको नष्ट करनेवाले बीजोंसे मुक्त करके,

स्तम्भन स्तोभन ताडन मांध्य प्रेषणं दहनभेदनं बंधाः ।
ग्रीवा भंगं गात्रछेदनहननमाप्यायनं ग्रहाणां कुर्यात् ॥२६॥

अर्थ—ग्रहोंका स्तम्भन, कम करना (स्थिर करके खैंचना) मारना, अंधा करना, जलाना, भेदना, बांधना, ग्रीवाभंग, अंग छेदना, मारण तथा दूरीकरण करे ॥ २६ ॥

ह्रास्यान्निरोधशून्यं स्वरो द्वितीय श्चतुर्थ षष्ठौ च ।
ॐ कारो बिन्दुयुतो विसर्जनीयश्च पंचकलाः ॥ २७ ॥

ॐ कूट पिंड पञ्च स्वर संयुत कूट पंचकं स निरोधं ।
दुष्ट ग्रहां स्तथा द्विस्तम्भ मंत्र इति फट् २ घे घे ॥ २८ ॥

अर्थात् "ॐ क्षल्व्यूं ज्वालामालिनि, ह्रीं, क्लीं, ब्लूं, द्रां, द्रीं, क्षां, क्षीं, क्षूं, क्षौं, क्षः, ह्राः, दुष्ट ग्रहान् स्तम्भय २ ह्रां, आं, क्रों, क्षीं, ज्वालामालिन्याज्ञापयति हुँ फट् २ घे घे ॥"

यह ग्रहोंका स्तंभन मंत्र है। इसमें शृङ्खला मुद्रा होती है।

ॐ शून्य पिंड पंच स्वर युत ह बीज पंचकं स निरोधं।
स्तोभन मंत्रः सर्वग्रहानथाकर्षय द्वयं संवौषट् ॥ २९ ॥

अर्थ—"ॐ हल्व्यूं ज्वालामालिनि ह्रीं क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं ग्वीं हां हीं हूं हौं हः हाः सर्व दुष्ट ग्रहान्स्तोभय२ आकर्षय२ हां आं क्रों क्षीं ज्वालामालिन्याज्ञापयति संवौषट् ।"

यह ग्रहोंका स्तोभन मंत्र है। इसमें शिखि मुद्रा होती है ॥२९॥

भक्ति भ पिंडो, भ्रां, भ्रीं, भ्रौं, भ्रः, सन्निरोधसहितं च।
दुष्ट ग्रह मथ ताडय हुँ फट् घे घे इति ताडनमंत्रः ॥३०॥

अर्थ—" ॐ भल्व्यूं ज्वालामालिनि ह्रीं क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं भ्रां भ्रीं भ्रूं भ्रौं भ्रः हाः दुष्ट ग्रहान् ताडय२ हां, आं, क्रों, क्षीं, ज्वालामालिन्याज्ञापयति हुँ फट्२ घे घे।"

यह ताडन मंत्र है। इसमें गद मुद्रा होती है ॥३०॥

विनयादि मपिंडो म्रां म्रीं म्रूं म्रौं म्रस्तथैव सं निरोधः।
हुँ फट् घे घे सर्वग्रह नाम्ना वज्रमय शूच्या ॥ ३१ ॥

अक्षीणि विस्फोटय द्वि स्तथैव हुं फट् घे घे।
अक्षि स्फोटनमंत्रो मुद्राप्यस्याक्षि भंजिनी नाम ॥ ३२ ॥

अर्थ—ॐ मल्व्यूं ज्वालामालिनी ह्रीं क्रीं ब्लूं द्रां द्रीं

म्रां म्रीं म्रूं म्रौं म्रः दुष्टग्रहान् हुँ फट् सर्वेषां दुष्ट ग्रहाणां वज्रमय सूच्या अक्षीणि स्फोटय स्फोटय हां आं क्रों क्षीं ज्वालामालिन्याज्ञापयति हुं फट् घे घे।

यह ग्रहोंका अक्षिस्फोटन मंत्र है। इसकी सूची मुद्रा है ॥३२॥

भक्त्यादि वायुपिंडो य य य य याः याः ग्रहानथ समस्तान्
द्वि प्रेषय घे घे हुं जः जः जः प्रेषण सुमंत्रः ॥ ३३ ॥

अर्थ—ॐ यल्व्यूं ज्वालामालिनि ह्रीं क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं य य य य याः याः सर्व दुष्टग्रहान् प्रेषय२ घे घे हां आं क्रों क्षीं ज्वालामालिन्याज्ञापयति हुँ जः जः जः।

यह प्रेषण मंत्र है। इसकी छुरिका मुद्रा है ॥३३॥

वामादि रग्निपिंडः शिखि महेवी ज्वल द्वयं र र र र रां रां,
प्रज्वल हुं धगयुग धूं धूं धूमांधकारिणी ज्वलनशिखे ॥३४॥

देवान्नागान् यक्षान् गंधर्वान् ब्रह्मराक्षसान् भूतान्।
शतकोटि देवतास्ताः सहस्रकोटिं पिशाचराजानं ॥३५॥

दह दह पद प्रतिपदं घे स्फोटय मारयेति युगलं च।
दहनाक्षि प्रलय धगद्धगितमुखी ज्वालिनी हां ह्रीं ॥३६॥

हूं हौं हः सर्व्वग्रह हृदयं हुँ दह दहेति मंत्रपदं।
ह ह ह ह हाः हाः फट् घे घे होम मंत्रोऽयं ॥ ३७ ॥

अर्थ—"ॐ हल्व्र्यूं ज्वालामालिनि ह्रीं क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं ज्वल ज्वल र र र र र रां रां ज्वल प्रज्वल प्रज्वल हुं हुं धग धग धू धू धूमांधकारिणि ज्वलनशिखे देवान् दह दह नागान् दह दह यक्षान् दह दह गंधर्वान् दह२ ब्रह्मराक्षसान् दह२ भूत ग्रहान् दह२ व्यन्तर ग्रहान् दह२ सर्व दुष्टग्रहान् दह२ शतकोटि देवतान् दह दह सहस्र कोटिपिशाचराजानं दह२ लक्षकोटिअपस्मार ग्रहान् दह दह घे घे स्फोटय स्फोटय मारय मारय दहनाक्षि प्रलय धगद्धगित मुखि ज्वालामालिनि ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः सर्व दुष्ट ग्रह हृदयं हुं दह२ पच२ छिंद२ भिंद२ ह ह ह ह हाः हाः आं क्रों क्षीं ज्वालामालिन्याज्ञापयति हुं फट् घे घे।"

यह दहन मंत्र और होम मंत्र है ॥३४-३७॥

अग्नि त्रिकोण कुंडे मधुरत्रयसर्वधान्यसर्वपलवणैः ।
राज पलाश शमितरु काष्टैः कुर्य्याद् बुधो होमं ॥ ३८ ॥

भूतख्यागायत्रीमुच्चार्य त्रिः सकृद्ध मेदग्निं ।
त्रीन्वाराग्नित्यग्ने रादौ संधुक्षणं कुर्य्यात् ॥ ३९ ॥

अर्थ—त्रिकोण कुण्डमें, घृत, दुग्ध और मधु, सब धान्य, सफेदसरसों, और लवणको लेकर पलाश और शमीकी समिधासे होम करे ॥ ३८ ॥

फिर भूताख्य नामके गायत्री मंत्रका तीन नाम उच्चारण करके अग्नि जलावे, फिर संधुक्षण मंत्रसे तीनवार अग्निका संधुक्षण करे ॥ ३९ ॥

भूताख्य गायत्री मंत्र ।

"ॐ वज्र तुण्डाय धीमहि एक दंष्ट्राय धीमहि अमृतं वाक्यस्य संभवेत् तन्नोदहः प्रचोदयात् ।"

प्रणवनघपिण्ड पंचकलायुत तलरेफयुत घकार निरोधं ।
घं घं खं खं खड्गै रावण सद्विद्ययाथ घातय युगलं ॥ ४० ॥

सचंद्रहासेन द्विच्छेदय भेदय द्विः ॐ ॐ स्वं खं ।
हं सं फट्२ घे२ मंत्रोऽयं जठर२ भेदि स्यात् ॥ ४१ ॥

"घल्व्र्यूं ज्वालामालिनि, ह्रीं, क्लीं, ब्लूं, द्रां, द्रीं, घ्रां, घ्रीं, घ्रूं, घ्रौं, घ्रः, हाः, घं, घं, खं, खं, खड्गै रावण सद्विद्यया घातय२ सचंद्रहासड्गेन छेदय२ भेदय२, ॐ, ॐ, खं, खं, हं, सं, हां, आं, क्रों, क्षीं, ज्वालामालिन्याज्ञापयति हुं फट्२ घे घे।

यह उदर भेदी मन्त्र है। इसको खड्गै रावण विद्या कहते हैं ॥ ४०-४१ ॥

प्रणवन सहित ऊपिंडो गुप्तोचरितः स्ववायु निर्गमनः ।
हाः पूर्णेन्दु समेतः स्यात् मुष्टि ग्रहण मंत्रोऽयं ॥ ४२ ॥

अर्थ—"ॐ झल्व्यूँ ज्वालामालिनि ह्रीं क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं हाजः" यह मुष्टिग्रहण मंत्र है। इसकी मुष्टिमुद्रा है ॥४२॥

पिंडेन विना हा फट् घे घे मंत्रेण तत्र चान्यस्मिन् ।
कुर्याद्ग्रह संक्रामं मुष्टि विमोक्षेण सन्मंत्री ॥ ४३ ॥

अर्थ—"हाः फट् घे घे ।" यह मुष्टि विमोक्षण मंत्र है। इससे भी ग्रह दूर हो जाते हैं ॥ ४३ ॥

पिण्डः स एव विनयादिक स्वपंच तत्वान्वितः सन्निरोधः ।
सर्वेषां ग्रहनाम्नां कुरु सन्निग्रहां स्तथा हं फट् घे घे ॥४४॥

"ॐ झल्व्यूँ ज्वालामालिनि ह्रीं क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं झां झीं झूं झौं झः हाः सर्व दुष्ट ग्रहान् स्तंभय स्तंभय ताडय२ अक्षीणि स्फोटय२ प्रेषय२ भेदय२ हाः हाः हाः आं क्रों क्षीं ज्वालामालिन्याज्ञापयति हुँ फट् घे घे।"

यह दुष्ट निग्रह कर्म मंत्र होने पर दुष्ट मुद्रावाला तथा ईसित कर्ममंत्र होनेपर दुष्ट तर्जनी मुद्रावाला होता है ॥ ४४ ॥

ॐ कान्त पिण्ड पंच स्वर युत तल रेफ सहित कपरं च ।
हाः फट् घे सर्व्व ग्रह गल भंगं कुरु युगं घे घे ॥ ४५ ॥

अर्थ—ॐ खल्व्यूँ ज्वालामालिनि ह्रीं क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं खां खीं खूं खौं खः हाः फट् घे घे सर्वेषां ग्रहाणां गल मंगंकुरु२ हां आं क्रों क्षीं ज्वालामालिन्या ज्ञापयति हुं फट् घेघे।
यह गलभंग मंत्र है, इसकी खलिन मुद्रा है ॥ ४५ ॥

भक्त्यादि चान्त पिण्डः पंच कला रेफ युक्त चांत निरोधः ।
सर्वेषां ग्रह नाम्ना मंत्राणि छिंद फट् फट् घे घे ॥ ४६ ॥

अर्थ—ॐ छम्ल्व्यूँ ज्वालामालिनि ह्रीं क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं छ्रां छ्रीं छ्रूं छ्रौं छ्रः हाः सर्वेषां ग्रह नाम्ना मंत्राणि छिंद छिंद हां आं क्रों क्षीं ज्वालामालिन्या ज्ञापयति हुँ फट् घे घे ॥
यह अंत्र छेदन मंत्र है, इसकी अंत्र छेदन मुद्रा है ॥४६॥

भक्तिसहितेन्दुपिण्डः ब्लींहाः सर्व ग्रहांस्तु पाषाणैः ।
ताडय ताडय भूमौ द्विपातय हूं युगं च फट्२ घे घे ॥४७॥

अर्थ—ॐ ठल्व्यूँ ज्वालामालिनि ह्रीं क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं ब्लीं हाः सर्व दुष्ट ग्रहान् तडित्पाषाणैः ताडय२ भूमौ पातय२ हां आं क्रों क्षीं ज्वालामालिन्या ज्ञापयति हुँ फट् घे घे ॥
यह ग्रहोंका हनन मंत्र है, इसकी विद्युत् मुद्रा है ॥४७॥

विनयस्य एव पिंडस्तदीयमथतत्वपंचकं निरोधः ।
सर्वेषां ग्रहनाम्नां कुरु सर्व निग्रहां सु फट् घे घे ॥ ४८ ॥

अर्थ—ॐ क्ल्व्यूँ ज्वालामालिनि ह्रीं क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं

ग्रां ग्रीं ग्रूं ग्रौं ग्रः हाः सर्व दुष्ट ग्रहान् स्तंभय२ स्तोभय२ ताडय२ ऊक्षीणि स्फोटय२ प्रेषय२ दह२ भेदय२ बंधय२ ग्रीवा भंगय२ अंत्राणि छेदय छेदय हन२ हां आं क्रों क्षीं ज्वालामालिन्या ज्ञापयति हुँ फट् घे घे ।

यह सर्व कार्थक मंत्र है, इसकी तर्जनी मुद्रा है । ॥ ४८ ॥

विनयो निर्विष पिंड स्व पंचतत्वं निरोध सहितं च ।
सर्व ग्रहान् समुद्रे द्विर्मज्जय हूं तथैव फट् फट् घे घे ॥४९॥

अर्थ—ॐ क्म्ल्व्यूं ज्वालामालिल ह्रीं ज्ञीं ब्लूं द्रां द्रीं क्षां क्षीं क्षूं क्षों क्षः हाः दुष्ट ग्रहान् समुद्रे मज्जय२ हां आं क्रों क्षीं ज्वालामालिन्या ज्ञापयति हुँ फट्२ घे घे ॥

यह मज्जन मंत्र है, इसकी मज्जन मुद्रा है ॥४९॥

निर्विष पिंडः सं तं वं मं हं ऊं ग्रहानथ समस्तान् ॥
उत्थापय द्वयं नट नृत्य द्वितयं तथा स्वाहा ॥ ५० ॥

अर्थ—झम्ल्व्यूं ज्वालामालिनि ह्रीं झीं ब्लूं द्रां द्रीं सं तं वं मं हं ऊं सर्व दुष्ट ग्रहान उत्थापय२ नट२ नृत्य२ हां आं क्रों ह्रीं ज्वालामानिन्या ज्ञापयति स्वाहा ।

यह अप्यायन मंत्र है, इस ही आप्यायन मुद्रा है ॥५०॥

सर्व निरोधे वाप्यायन मंत्रेणानेन साक्षतं सलिलं ।
अभिमंत्र्य ताडयेत्क्षालयेच्च कृत निग्रहं स्यात् ॥ ५१ ॥

अर्थ—इस सर्व निरोध आप्यायन मन्त्रके द्वारा अक्षत और जलको अभिमन्त्रित करने, अक्षतको मारने और जलसे धोनेसे सब ग्रहोंका विनाश हो जाता है ॥५१॥

आत्मान्यस्मिन्वा प्रति बिम्बे वाद् निग्रहे विहिते ।
ग्रह निग्रहो भवेदिति शिखिमद्देवि मतं तथ्यं ॥५२॥

अर्थ—इस या अन्य किसी निग्रह मंत्रका प्रयोग करनेसे ग्रहोंका निग्रह हो जाता है। ऐसा ज्वालामालिनीदेवीका सिद्धांत है ॥ ५२ ॥

ईषनात्रां नालिका मेकै काक्षर सु विन्यययावेष्ट्य ।
जपेतैः सप्तोत्तर विंशति मणिभिः त्रिसंध्यमप्यष्टशतं ॥५३॥

अर्थ—एक२ अक्षरका अपने२ हृदयमें अच्छी तरहसे ध्यान करके प्रातः दोपहर तथा सायंकालमें सत्ताईस मणियों द्वारा एकसौ आठ बार जप करना चाहिये ॥ ५३ ॥

विषमफणिविषमशाकिनीविषमग्रह विषममानुषां सर्व्वे ।
निर्व्विषतां गत्वा ते वश्याः स्युः क्षोभमेति जगत् ॥ ५४ ॥

अर्थ—भयंकर सर्प, भयंकर शाकिनी, विषम ग्रह, और सब विषम मनुष्य निर्विष होकर वशमें हो जाते हैं, और सम्पूर्ण जगतको क्षोभ प्राप्त होता है ॥ ५४ ॥

शब्द कशांकुश चरणै र्हय नागाश्चोदिता यथा यांति बुधैः ।
दिव्यादिव्याः सर्वे नृत्यंति तथैव संबोधनतः ।। ५५ ।।

अर्थ—जिस प्रकार घोड़े और हाथी, शब्द, शकोड़े, अंकुश और एडसे आगे चलते हैं, उसी प्रकार पंडितोंके शब्द पर दिव्य और अदिव्य सभी ग्रह नाचते हैं ।। ५५ ।।

वाक् तीक्ष्णै र्व्वर मन्त्रै र्भित्वा दुष्टग्रहस्य हृदयं कर्णौ ।
यद्यच्चिन्तयति बुध स्तत चोद्यं करोतु भुवि ।। ५६ ।।

अर्थ—पंडित पुरुष तीक्ष्ण बाणोंवाले उत्तम मंत्रोंसे दुष्टग्रहके हृदय और कानोंको छेदकर जो जो सोचता है। संसारमें वही वही होता है ।। ५६ ।।

बीजाक्षर ज्ञानका महत्व

तत्कर्म नात्र कथितं कथित्र शास्त्रेषु गारुडे सकलं ।
तद्भेदमाप्य मंत्री यद्वक्ति पदं तदेव मन्त्रः स्यात् ।। ५७ ।।

अर्थ—जिस भेदको पाकर मन्त्री जो कुछ कहता है, वही मन्त्र बन जाता है। वह कर्म यहां नहीं बतलाया गया बल्कि उसका कथन पूर्णरूपसे गारुड शास्त्रमें किया गया है ।। ५७ ।।

यद्य चोद्यं कुर्यान्मंत्री कथयतु तदात्म पार्श्व जिनाय ।
पात्रं निश मघ्य वचो यद्वक्ति पदं तदेव मंत्रः स्यात् ।।५८।।

अर्थ—मंत्री उसको जानकर जो जो करना चाहिये वह सब कर करके श्री पार्श्वनाथ भगवानके अर्पण कर दे। ऐसे मंत्रीके वचनको जो सुनेगा उसके लिये वही मंत्र हो जावेगा।

छेदन दहन प्रेषण भेदन ताडन सुबंध मांद्य मन्यद्वा ।
पार्श्व जिनाय तदुक्त्वा यद्वक्ति पदं मंत्र स्यात् ।। ५९ ।।

अर्थ—वह पुरुष छेदना, जलाना, भेदना, काटना, मारना और बांधना आदि तथा अन्य भी श्री पार्श्वनाथ भगवान्के लिये कह कर जो पद कहता है, वही मंत्र हो जाता है।

दिव्य मदिव्यं साध्यमसाध्यं संबोध्य मप्य संबोध्यं ।
बीज मबीजम् ज्ञात्वा यद्वक्ति पदं तदेव मंत्रः स्यात् ।।६०।।

अर्थ—वह दिव्य और अदिव्य साध्य और असाध्य कहने योग्य और न कहने योग्य तथा बीज और अबीजको बिना जाने हुए भी जो पद कहता है, वही मंत्र होजाता है।

भृकुटि पुट रक्त लोचन भयं करादृ प्रहास हा हा शब्दैः ।
मंत्र पदं प्रपठन्नपि यद्वक्ति पदं तदेव मंत्रः स्यात् ।। ६१ ।।

अर्थ—वह भौं चढ़ाकर लाल नेत्र किये हुए भयंकर अट्टहास करता हुआ हा हा शब्द करता हुआ अथवा मन्त्र पदको पढ़ता हुआ भी जो कुछ कहता है, वह मन्त्र बन जाता है ।। ६१ ।।

पद्यचोद्यं वांछति तत्तत्कुरुते द्विष द्विषद्विदं बीजं।
तस्माद्बीजं ध्यात्वा यद्वक्ति पदं तदेव मन्त्रः स्यात् ॥६२॥

अर्थ—वह जिस जिस कार्यको करना चाहता है, शत्रुको जाननेवाला बीज वही २ कर देता है, इस वास्ते बीजका ध्यान करके जो पद कहा जाता है, वही मन्त्र हो जाता है ॥ ६२ ॥

अति बहला ज्ञान महांधकार मध्ये परिभ्रमन्मंत्री।
लब्धोपदेश दीपं यद्वक्ति पदं तदेव मन्त्रः स्यात् ॥ ६३ ॥

अर्थ—मंत्री पुरुष अत्यन्त गहन अज्ञानरूपी महा अन्धकारके बीचमें घूमता हुआ भी उपदेश रूपी दीपकको पाकर जो कहता है, वही मंत्र हो जाता है ॥ ६३ ॥

न पठतु माला मंत्रं देवी साधयतु नैव विधि नेह।
श्री ज्वालिनी मतज्ञो यद्वक्ति पदं तदेव मंत्रः स्यात् ॥६४॥

अर्थ—न तो मालाके ही मन्त्रका पाठ करे और न यहां देवीकी ही विधिपूर्वक साधना करे किंतु श्री ज्वालामालिनी देवीके मतको जाननेवाला पुरुष जो कहता है, वही मन्त्र हो जाता है ॥ ६४ ॥

देव्यर्चनजपनीयध्यानानुष्ठानहोम रहितोऽपि।
श्रीज्वालिनी मतज्ञो यद्वक्ति पदं तदेव मंत्रः स्यात् ॥ ६५ ॥

अर्थ—देवीकी पूजा, जाप, ध्यान, अनुष्ठान और होमसे रहित होने पर भी श्री ज्वालामालिनीदेवीके सिद्धांतको जाननेवाला जो पद कहता है। वही मंत्र हो जाता है ॥ ६५ ॥

त्रिनयं पिंडं देवी स्वपंच तत्वं निरोध सहितं च।
ज्ञात्वोपदेश गर्भं यद्वक्ति पदं तदेव मंत्रः स्यात् ॥ ६६ ॥

अर्थ—त्रिनय पिंड देवी स्वपंच तत्वको निरोध सहित जानकर जो पद कहता है, वही मंत्र हो जाता है। अर्थात् निम्नलिखित मंत्र सर्वत्र काम दे सकता है।

"ॐ क्ष्म्ल्व्र्यूं ज्वालामालिनी क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षं क्षः ह्राः दुष्टग्रहान् स्तंभय२ ठं ठं ह्रां आं क्रों क्षीं-ज्वालामालिन्या ज्ञापयति हुँ फट् घे घे।"

उपदेशान्मंत्रगति मंत्रै रुपदेशवर्जितैः किं क्रियते।
मंत्रो ज्वालामालिन्यदिकृतकल्पोदितः सत्यः ॥ ६७ ॥

अर्थ—मन्त्र बिना उपदेशके नहीं रह सकते और बिना उपदेश पाये कुछ क्रिया भी नहीं जा सकता किंतु ज्वालामालिनी कल्पके बतलाये हुए मन्त्र पूर्ण रूपमें सत्य हैं ॥६७॥

कर्णात्कर्णं प्राप्तं मंत्रं प्रकटं न पुस्तके विलिखेत्।
स च लभ्यते गुरु मुखाद्यतकः श्री ज्वालिनी कल्पे ॥ ६८ ॥

अर्थ—मन्त्र कर्णसे लेकर कर्णमें ही रक्खे, पुस्तकमें न

लिखे, जो कुछ भी ज्वालामालिनी कल्पमें है। वह केवल गुरु मुखसे ही सुना जा सकता है ॥ ६८ ॥

बीजोंका कुछ वर्णन

त्रिमूर्ति मूर्तिद्वय मैंद्रयुक्तं, पयोधि मैंद्रस्थित मां समेतं ।
स्त्री रेतसो द्रावक मुत मंद्रा, मुमा हृदुद विधुस्त द्रांद्रीं ॥६९॥

अर्थ—त्रिमूर्तिवाला क्लीं, द्विमूर्तिवाला (ल) ऐंद्रयुक्त समुद्ररूप (हं) ऐंद्र (लं) और लं सहित मंत्र स्त्रीके रजको द्रवित करता है। चंद्ररूप द्रां और द्रीं लक्ष्मींके हृदयको भेदन करनेवाले हैं ॥ ६९ ॥

शून्यं द्वितीय स्वर बिन्दुयुक्तं, स्वरो द्वितीयश्च सबिन्दु रन्यः ।
मृगेन्द्र विध्वि द्वश कृच कूटः, सविष्णु बिन्दुर्न्न भवेदि तत्वं ॥७०

अर्थ—दूसरा स्वर बिन्दुसे युक्त होनेपर शून्य कहलाता है। आं सहित उसीको दुबारा कूट विष्णु और बिन्दु सहित लैनेसे अर्थात् "आं आं क्षः इं अं" यह मंत्र सिंहके मार्गको भी वशमें करता है ॥ ७० ॥

कूटश्रू य भपिंडगर्भमपिंडनिर्मितकर्णिके
षोडश स्वरकेशरोज्वलशेषपिंडदलाष्टके ।
भासुरे नव तत्व वेष्टित पंकजेश निवासिनीं
ज्वालिनीं ज्वातिप्रभामनुचिन्त येत्फल दायिनीं ॥७१॥

अर्थ—एक अष्ट दल कमलकी कर्णिकाके बीचमें क्ष्म्ल्व्यूं बीज रखकर सोलह स्वरोंको परागके स्थानमें और अवशेष पिण्डोंको आठों दलों पर रक्खे। ऐसे तेजस्वी नव तत्वोंसे वेष्टित उत्तम कमलमें रहनेवालोंको ज्वालामालिनी देवी फलको देनेवाला उत्तम तेज देती है ॥ ७१ ॥

नाभौ क्लीं हृदये च ह्रीं शिरसि च द्रूं पादयोः क्षीं गुदेः
द्रां क्रों मूर्द्धन्यज रुद्धतमं कुश मधो म्ल्यूं चो परि ब्ल्यूं गलै ।
म्ल्यूं जान्यो रथतेन रुद्ध ममलं पाशं स्वनं कर्णयो
रूव्रों शब्द कशे तनौ चय परं भूता कृतौ विन्यसेत् ॥७२॥

अर्थ—संपूर्ण प्राणीकी आकृतिको कानों जंघाओं, शब्द समूह और शरीरमें निम्नलिखित क्रमसे बीजोंको रक्खे। नाभिमें क्लीं हृदयमें ह्रीं शिरमें द्रूं दोनों पैरोंमें क्षीं गुद स्थानमें द्रां शिरमें क्रों दोनों हाथोंमें कं तथा क्रों म्ल्यूं ऊपर ब्ल्यूं गलेमें म्ल्यूं घुटनोंमें अं और टं दोनों कानोंमें टं तथा अं दोनों जांघोंमें और भूतकी आकृतिमें सर्वत्र र लगावे ॥७३॥

ॐ ह्रीं रेफ चतु र्यं शिखि मति वाणान्त मः पिण्ड सं
भूतं तत्व सु पंच कं जल युगं तत्प्रज्वलं प्रज्वल ।

हं युग्मं दद युग्म माम युगलं धूमांध कारिणपतः
शीघ्र मेह्य मु वशं कुरु वशदेव्यास्तु मंत्रः स्फुटं ॥७४

अर्थ—ॐ ह्रीं ह्रां हं ह्रौं हः द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः जल

जल प्रज्वल२ हुं हुं दद माम् धूमांधकारिणि शीघ्रं एहि अमुकं वशं कुरु। यह वशमें करनेके लिये देवीका मंत्र है॥ ७४॥

अज पिण्ड देवता पंच बाण निज तत्व पंचक निरोधैः।
स्वेष्ट निरोध पदैः सह जयति समस्त ग्रहान्मंत्री॥ ७५॥

अर्थ—अजपिण्ड देवता पंचबाण स्वतत्व पंचक निरोध और इष्ट निरोध पदोंसे अर्थात् "क्ष्म्ल्व्यूं ज्वालामालिनि द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः हाः सर्व दुष्ट ग्रहान् स्तंभय२ ठः ठः हां आं क्रों क्षीं ज्वालामालिन्याज्ञापयतिहुँ फट् घे घे।" इस मंत्रसे मंत्री सर्व ग्रहोंको जीतता है॥७५॥

कुछ बीजोंका वर्णन

स्वाहा स्वधा च वषडपि संवौषट् हूं तथैव घे फट् क्रमशः।
शांतिक पौष्टिक वश्या कर्षण विद्वेष मारणोच्चाटन कृत्॥७६॥

अर्थ—स्वाहा–शांति करनेवाला, स्वधा–पुष्टि करनेवाला, वषट्–वशीकरण करनेवाला, संवौषट्–आकर्षण करनेवाला हूं–विद्वेषण करनेवाला, घे–मारनेवाला और फट् उच्चाटन करनेवाला है॥ ७६॥

विनयो ज्वालामालिन्युपेत नव तत्व युत नमस्कारः।
एषा प्रदान वद्य ज्ञानेऽगा ज्वालिनी कल्पे॥ ७७॥

अर्थ—ज्वालामालिनीकी विनय और नव तत्व सहित ही नमस्कार ही देनेकी विद्या है यह ज्वालामालिनी कल्पसे जानना चाहिये॥ ७७॥

विनयादि देवता पिंडतत्वनवकं निरोध शून्य युतं।
वश्या कृष्णायुच्चाटन मारण बीजानि मणिविद्या॥ ७८॥

अर्थ—विनयादि देवता पिण्ड नव तत्व निरोध और शून्य सहित वशीकरण आकर्षण, उच्चाटन मारण मा के बीजोंकी विद्या होती है। अर्थात्—"ज्वालामालिनि क्ष्म्ल्व्यूं हल्व्यूं भल्व्यूं मल्व्यूं यल्व्यूं सल्व्यूं घल्व्यूं झल्व्यूं खल्व्यूं रम्ल्व्यूं छम्ल्व्यूं कम्ल्व्यूं वल्व्यूं। ॐ ह्रीं क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं ह्रीं आं हां आं क्रों क्षीं हाः वषट् संवौषट घे घे" इस मन्त्रको वशीकरण उच्चाटन और मारण आदि बीजोंसे युक्त करके भोज पत्रपर लिखकर उक्त लिखित मंत्रकी सत्ताईसकी माला बनाकर उसे प्रातः दो प्रहर तथा सायंकालके समय जपनेसे इच्छित कार्य सिद्ध होते हैं॥ ७८॥

हृदयोपहृदय बीजं कनिष्ठिकाद्यंगुलिषु विन्यसेत।
तस्योपर्यो ज्वालिनि जनवश्यं कुरु युगं वषट् तत्वमिदं॥७९॥

अर्थ—हृदय और उपहृदयके बीजको कनिष्टिका आदि अंगुलियोंमें रखकर इस मन्त्रका ध्यान करे॥७९॥

"ॐ ज्वालामालिनि मम सर्वजन वश्यं कुरु२ वषट्।" यह मन्त्र है।

साधारण विधि

वामकर मंत्रमंत्रित निजवेदने नातनोतु जन वश्यं ।
भीमकरेण दश त्रासनानि होमं च विदधातुः ॥ ८० ॥

अर्थ—मंत्री पुरुष बाएं हाथसे मन्त्रको जाप कर अपने मुखसे उसको पढ़ता जावे और दाहिने हाथसे दश प्रकारके पूर्वोक्त त्रसन और होम करे ॥ ८० ॥

मंत्रजपहोमनियमध्यानविधिं मा करोतु मंत्रीति ।
यद्यप्यत्रसयुक्तं तथापि सन्मंत्र साधन जहातु ॥ ८१ ॥

अर्थ—मंत्रीको चाहिये कि वह मंत्र जप होम नियम और ध्यानकी विधिको पूर्ण रूपसे करे । यद्यपि उसका यहां विधान साधारण है । तथापि न करनेसे वही मंत्रके साधनको छोड़ देती है ॥ ८१ ॥

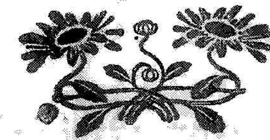
एक स्तावद्वन्हिः पुनरपिपवनाहतो न कुर्यात्किम् ।
एक स्तावन्मंत्रो जप होम युतास्य किमसाध्यं ॥ ८२ ॥

अर्थ—यद्यपि अग्नि एक होती है । तथापि उसको हवासे न ऊपका जाने पर वह क्या नहीं करती । उसी प्रकार मंत्र एक ही होता है । तब भी जप और हवनसे युक्त होने पर उसके लिये क्या असाध्य है ? ॥ ८२ ॥

तस्मान्मंत्राराधनविधि विधिमिहविधिपूर्व्वकं करोतु बुधः ।
नित्य मनालस्य मना यदीष्टसिद्धिं समीपोत ॥ ८३ ॥

अर्थ—इस लिये पंडित पुरुष यदि इष्ट सिद्धि करनी चाहता हो तौ मनसे आलस्यको दूर करके मंत्राराधनविधिपूर्वक इष्ट सिद्धि करे ॥ ८३ ॥

इतिश्री हेलाचार्य प्रणीत अर्थमें श्रीमद् इन्द्रनन्दि मुनि बिरचित
ग्रन्थमें ज्वालामालिनी कल्पकी काव्य साहित्य तीर्थाचार्य
प्राच्य विद्यावारिधि श्री चन्द्रशेखर शास्त्री कृत
भाषाटीकामें "द्वादशाबीजाक्षर बिधान" नामक
तृतीय परिच्छेद समाप्त हुआ ॥ ३ ॥



चतुर्थ परिच्छेदः

सामान्यमंडल

एकतरौ प्रेतगृहे चतुष्पदे ग्राम मध्ये देशे वा ।
नगर वहि र्भूभागे मंडल मावर्त ये प्राज्ञः ॥१॥

अर्थ—बुद्धिमान् एक वृक्षके नीचे प्रेतके घर (स्मशान)में चौराहे पर ग्रामके ठीक बीचमें या नगरके बाहर मंडल बनावे ॥ १ ॥

ईषानाभि मुखः प्रपतितजलशल्यरहित समभूमौ ।
हस्ताष्टक प्रमाणं नवखंडं मंडलं प्रवरं ॥ २ ॥

अर्थ—उसका मुख ईषान कोणकी ओर हो । वह मंडल गड्ढे जल तथा कंटकरहित समभूमिमें आठ हाथकी जगहमें बनाया जावे ॥ २ ॥

वर पंचवर्ण चूर्णैः द्वारचतुष्कान्वितं लिखेद्विपुलं ।
नाना केतु पताका दर्प्पण घंटान्वितं कुर्य्यात् ॥ ३ ॥

अर्थ—उसको पांचों रंगोंके चूर्णोंसे च्यार द्वारों वाला और उसको अनेक प्रकारकी ध्वजा पताका दर्पण और घंटोंसे सजा देवे ॥ ३ ॥

अश्वत्थपत्र विरचित तोरण तत्पुरुष मंडपोपेतं ।
सकल विदिक्षुनिवेषित मुषलाग्रन्यस्त पूर्णघटं ॥ ४ ॥

अर्थ—उसका द्वार पुरुषका प्रवेश करने योग्य बनाकर पीपलका तोरण लगावे और उसकी सब दिशा विदिशाओंमें मूशलके समीप जलसे भरे हुए घड़ोंको रख दे ॥ ४ ॥

तस्मिन्प्रच्याद्यष्ट सुकोष्ठेष्विन्द्राग्निमृत्यु नैऋत् वरुणान् ।
मारुत धन देशानान् लक्षण युक्तान् लिखेन्मतिमान् ॥ ५ ॥

अर्थ—बुद्धिमान् पुरुष उसके पूरब आदि आठ कोठोंमें इंद्र, अग्नि, यम, नैऋत, वरुण, वायु, कुबेर और ईशान देवोंको सब लक्षणों युक्त करके लिखे ॥ ५ ॥

शक्रं पीतं वन्हि वन्हि निभं मृत्युराज मति कृष्णं ।
हरितं नैऋत मपरं शशि प्रभं वायु मसितांगं ॥ ६ ॥

अर्थ—इंद्रको पीला, अग्निको अग्निके समान, यमको अत्यंत कृष्ण, नैऋतको हरा, वरुणको चंद्रमाके समान, वायुको मटियाला (असित–जो सफेद न हो) ॥ ६ ॥

धनदं समस्त वर्णं सित मीशानं क्रमेण सर्व्वान्विलिखेत् ।
गज मेष महिष शव मकरोद्यन्मृग तुरंग बृष बाहान् ॥ ७ ॥

अर्थ—कुबेरको सब रंगोंका और ईशानदेवको सफेद बनावे और इनके बाहन क्रमसे–हाथी, मैंढा, भैंसा, शव, मकर, दौडता हुआ मृग, घोड़ा और बैल बनावे ॥ ७ ॥

गजाग्नि दंड शक्त्यसिपाश महा तुरंग दात्र शूल करान् ।
परिलिख्य लोकपालान् मध्ये माता कृतिं विलिखेत् ॥८॥

अर्थ—इनके हाथमें क्रमसे बज्र अग्नि दंड शक्ति तलवार पाश, महातुरंग, दात्रि और शूल देकर इन लोक पालोंके बीचमें माताकी आकृति बनावे ॥ ८ ॥

गंधाक्षत कुसुमाद्यैः स्वकीय मन्त्रैः प्रपूजयेत्सर्वान् ।
सामान्यमंडलमिदं भूत समुच्चाटने प्रोक्तं ॥ ९ ॥

अर्थ—फिर सबको गंध, अक्षत, और पुष्प आदिसे अपने२ मंत्रोंसे पूजे । यह भूतोंका उच्चाटन करनेवाला सामान्य मन्डल कहा ॥ ९ ॥

द्व्यद्येक द्येक द्येक द्यैकान् पूर्वादिक्षु विनियुक्तान् ।
क्रमश स्तान् द्वादश विध मन्त्रान् हे लोकपालकात्मद्वारं ॥१०

अर्थ—दो एक, दो एक, दो एक, दो एक इन पूर्व आदि दिशाओंमें क्रमशः लगाये हुए बारह प्रकारके मंत्रोंको हे लोकपालो ! स्वीकार करो ॥ १० ॥

द्विर्बंध गंध पुष्पं धूपं दीपाक्षतं बलिं चरु कं ।
गृह्ण द्वय होमान्तान् स्वकीय मन्त्रान् बुधाः प्राहुः ॥ ११ ॥

अर्थ—दोनों प्रकारके बंध, गंध, पुष्प, दीप, धूप, अक्षत, बलि, और चरुको दोनों प्रकारके होम ज्वालामालिनीके अंतमें अपने मन्त्रोंसे ग्रहण करो ऐसा पंडित कहें ॥ ११ ॥

ॐ ह्रीं क्रौं हल्व्र्यूं क्ष्म्ल्व्र्यूं स्वर्ण वर्ण सर्व लक्षण संपूर्ण स्वायुध वाहन वधू चिह्न स परिवार हे इन्द्र ! एहि२ संवौषट् आह्वाननम् ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं क्रौं हल्व्र्यूं क्ष्म्ल्व्र्यूं स्वर्ण वर्ण सर्व लक्षण संपूर्ण स्वायुध वाहन वधू चिह्न स परिवार हे इन्द्र ! तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं क्रौं हल्व्र्यूं क्ष्म्ल्व्र्यूं स्वर्ण वर्ण सर्व लक्षण संपूर्ण स्वायुध वाहन वधू चिह्न स परिवार हे इन्द्र ! मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं क्रौं हल्व्र्यूं क्ष्म्ल्व्र्यूं स्वर्ण वर्ण सर्व लक्षण संपूर्ण स्वायुध वाहन वधू चिह्न स परिवार हे इन्द्र ! आत्म द्वारं रक्ष२ इदमर्घ्यं पाद्यं गन्धमक्षतं पुष्पं दीपं धूपं चरुं बलिं फलं गृह्ण२ स्वाहा । अर्चनम् ।

ॐ ह्रीं क्रौं हल्व्र्यूं क्ष्म्ल्व्र्यूं स्वर्ण वर्ण सर्व लक्षण संपूर्ण स्वायुध वाहन वधू चिह्न स परिवार हे इन्द्र ! स्वस्थानं गच्छ२ जयः ३ विसर्जनम् ।

ॐ ह्रीं क्रौं झ्ल्व्र्यूं रक्त वर्ण सर्व लक्षण संपूर्ण स्वायुध वाहन वधू चिह्न स परिवार हे अग्ने ! एहि एहि संवौषट् । आह्वाननम् ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं क्रौं झ्ल्व्र्यूं रक्त वर्ण सर्व लक्षण संपूर्ण स्वायुध वाहन वधू चिह्न स परिवार हे अग्ने ! तिष्ठ२ ठः ठः स्थापनम् ॥

ॐ ह्रीं क्रों झ्ल्व्यूं रक्तवर्ण सर्व लक्षण संपूर्ण स्वायुध वाहन बधू चिह्न सपरिवार हे अग्ने ! मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं क्रों झ्ल्व्यूं रक्तवर्ण सर्व लक्षण संपूर्ण स्वायुध वाहन बधू चिह्न सपरिवार हे अग्ने ! आत्म द्वारं रक्ष२ इद-मर्घ्यं पाद्यं गंधमक्षतं पुष्पं दीपं धूपं चरुं बलिं फलं गृह्ण२ स्वाहा ॥ अर्चनम् ॥

ॐ ह्रीं क्रों झ्ल्व्यूं रक्तवर्ण सर्व लक्षण संपूर्ण स्वायुध वाहन बधू चिह्न सपरिवार हे अग्ने ! स्वस्थानं गच्छ२ जः ३ ॥ विसर्जनम् ॥

ॐ ह्रीं क्रों झ्ल्व्यूं कृष्णवर्ण सर्व लक्षण संपूर्ण स्वायुध वाहन बधू चिह्न सपरिवार हे यम ! एहि२ संवौषट् । आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं क्रों झ्ल्व्यूं कृष्णवर्ण सर्व लक्षण संपूर्ण स्वायुध वाहन बधू चिह्न सपरिवार हे यम ! तिष्ठ२ ठः ठः स्थापनम् ॥

ॐ ह्रीं क्रों झ्ल्व्यूं कृष्णवर्ण सर्व लक्षण संपूर्ण स्वायुध वाहन बधू चिह्न सपरिवार हे यम मम ! सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् ॥

ॐ ह्रीं क्रों झ्ल्व्यूं कृष्णवर्ण सर्व लक्षण संपूर्ण स्वायुध वाहन बधू चिह्न सपरिवार हे यम ! आत्मद्वारं रक्ष२ इदमर्घ्यं

पाद्यं गंधमक्षतं पुष्पं दीपं धूपं चरुं बलिं फलं गृह्ण२ स्वाहा ॥ अर्चनम् ॥

ॐ ह्रीं क्रों झ्ल्व्यूं कृष्णवर्ण सर्व लक्षण संपूर्ण स्वायुध वाहन बधू चिह्न सपरिवार हे यम ! स्वस्थान गच्छ२ जः जः जः ॥ विसर्जनम् ॥

ॐ ह्रीं क्रों झ्ल्व्यूं हरिद्वर्ण सर्व लक्षण संपूर्ण स्वायुध वाहन बधू चिह्न सपरिवार हे नैऋते ! एहि२ संवौषट् आह्वाननम् ॥

ॐ ह्रीं क्रों झ्ल्व्यूं हरिद्वर्ण सर्व लक्षण संपूर्ण स्वायुध वाहन बधू चन्ह सपरिवार हे नैऋते ! तिष्ठ२ ठः ठः स्थापनम्

ॐ ह्रीं क्रों झ्ल्व्यूं हरिद्वर्ण सर्व लक्षण संपूर्ण स्वायुध वाहन बधू चिन्ह सपरिवार हे नैऋते ! मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् ॥

ॐ ह्रीं क्रों झ्ल्व्यूं हरिद्वर्ण सर्व लक्षण संपूर्ण स्वायुध वाहन बधू चिन्ह सपरिवार हे नैऋते ! आत्म द्वारं रक्ष२ इद-मर्घ्यं पाद्य गंधमक्षतं पुष्पं दीपं धूपं चरुं बलिं फलं गृह्ण२ स्वाहा "अर्चनम्" ॥

ॐ ह्रीं क्रों झ्ल्व्यूं हरिद्वर्ण सर्व लक्षण संपूर्ण स्वायुध वाहन बधू चिन्ह सपरिवार हे नैऋते ! स्वस्थानं गच्छ२ जः जः जः ॥ विसर्जनम् ॥

ॐ ह्रीं क्रों घल्व्यूँ झल्व्यूँ श्वेतवर्ण सर्व लक्षण संपूर्ण स्वायुध वाहन बधू चिन्ह सपरिवार हे वरुण ! एहि२ संवौषट् ॥ आह्वाननम् ॥

ॐ ह्रीं क्रों घल्व्यूँ झल्व्यूँ श्वेतवर्ण सर्व लक्षण संपूर्ण स्वायुध वाहन बधू चिन्ह सपरिवार हे वरुण ! तिष्ठ२ ठः ठः ॥ स्थापनम् ॥

ॐ ह्रीं क्रों घल्व्यूँ झल्व्यूँ श्वेत वर्ण सर्व लक्षण संपूर्ण स्वायुध वाहन् वधू चिह्न सपरिवार हे वरुण ! मम सन्निहितो भव भव वषट् । सन्निधिकरणम् ।

ॐ ह्रीं क्रों घल्व्यूँ झल्व्यूँ श्वेत वर्ण सर्व लक्षण संपूर्ण स्वायुध वाहन बधू चिह्न सपरिवार हे वरुण ! आत्मद्वारं रक्ष२ इदमर्घ्यं पाद्यं गंधमक्षतं पुष्पं दीपं धूपं चरुं बलिं फलं गृह्ण२ स्वाहा । अर्चनम् ।

ॐ ह्रीं क्रों घल्व्यूँ झल्व्यूँ श्वेत वर्ण सर्व लक्षण संपूर्ण स्वायुध वाहन बधू चिह्न सपरिवार हे वरुण ! स्वस्थानं गच्छ२ जः जः जः । विसर्जनम् ।

ॐ ह्रीं क्रों खल्व्यूँ झल्व्यूँ कृष्णवर्ण सर्व लक्षण संपूर्ण स्वायुध वाहन वधू चिह्न सपरिवार हे ! वायो एहि२ संवौषट् । आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं क्रों खल्व्यूँ झल्व्यूँ कृष्णवर्ण सर्व लक्षण संपूर्ण

स्वायुध वाहन बधू चिह्न सपरिवार हे वायो तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं क्रों खल्व्यूँ झल्व्यूँ कृष्णवर्ण सर्व लक्षण संपूर्ण स्वायुध वाहन बधू चिह्न सपरिवार हे वायो मम सन्निहितो भव२ वषट् । सन्निधिकरणम् ।

ॐ ह्रीं क्रों खल्व्यूँ झल्व्यूँ कृष्णवर्ण सर्व लक्षण संपूर्ण स्वायुध वाहन वधू चिह्न सपरिवार हे वायो ! आत्मद्वारं रक्ष२ इदमर्घ्यं पाद्यं गंध मक्षतं पुष्पं दीपं धूपं चरुं बलिं फलं गृह्ण२ स्वाहा । अर्चनम् ।

ॐ ह्रीं क्रों खल्व्यूँ झल्व्यूँ कृष्णवर्ण सर्वलक्षण संपूर्ण स्वायुध बधूचिह्न सपरिवार हे वायो स्वस्थानं गच्छ२ जः जः जः । विसर्जनम् ।

ॐ ह्रीं क्रों छम्ल्व्यूँ झल्व्यूँ समस्त वर्ण सर्व लक्षण संपूर्ण स्वायुध वाहन वधू चिन्ह सपरिवार हे धनद ! एहि२ संवौषट् । आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं क्रों छम्ल्व्यूँ झल्व्यूँ समस्त वर्ण सर्व लक्षण संपूर्ण स्वायुध वाहन वधू चिन्ह सपरिवार हे धनद ! तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं क्रों छम्ल्व्यूँ झम्ल्व्यूँ समस्त वर्ण सर्व लक्षण संपूर्ण स्वायुध वाहन बधू चिन्ह सपरिवार हे धनद ! मम सन्निहितो भव भव वषट् । सन्निधिकरणम् ।

ॐ ह्रीं क्रों छम्ल्व्यूं झम्ल्व्यूं समस्त वर्ण सर्व लक्षण संपूर्ण स्वायुध वाहन वधू चिन्ह सपरिवार हे धनद ! आत्मद्वारं रक्ष२ इदमर्घ्यं पाद्यं गंधमक्षतं पुष्पं दीपं धूपं चरुं बलिं फलं गृह्ण२ स्वाहा । अर्चनम् ।

ॐ ह्रीं क्रों छम्ल्व्यूं झम्ल्व्यूं समस्त वर्ण सर्व लक्षण संपूर्ण स्वायुध वाहन वधू चिन्ह सपरिवार हे धनद ! स्वस्थानं गच्छ२ जः जः जः । विसर्जनम् ।

ॐ ह्रीं क्रों झम्ल्व्यूं श्वेत वर्ण सर्व लक्षण संपूर्ण स्वायुध वाहन बधूचिन्ह सपरिवार हे ईशान ! एहि२ संवौषट् । आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं क्रों झम्ल्व्यूं श्वेत वर्ण सर्व लक्षण संपूर्ण स्वायुध वाहन बधू चिन्ह सपरिवार हे ईशान ! एहि२ तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं क्रों झम्ल्व्यूं श्वेत वर्ण सर्व लक्षण संपूर्ण स्वायुध वाहन वधू चिह्न सपरिवार हे ईशान ! मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् ॥

ॐ ह्रीं क्रों झम्ल्व्यूं श्वेत वर्ण सर्व लक्षण संपूर्ण स्वायुध बाहन बधू चिह्न सपरिवार हे ईशान ! आत्म द्वारं रक्ष२ इदमर्घ्यं पाद्यं गंधमक्षतं पुष्पं दीपं धूपं चरुं बलिं फलं गृह्ण गृह्ण स्वाहा । अर्चनम् ॥

ॐ ह्रीं क्रों झम्ल्व्यूं श्वेत वर्ण सर्व लक्षण संपूर्ण स्वायुध

वाहन बधू चिह्न सपरिवार हे ईशान ! स्व स्थानं गच्छ२ जः जः जः ॥ विसर्जनम् ॥

सर्वतो भद्र मण्डल

रेखात्रयेण परस्पराग्रविद्धेन पंचवर्णेन ।
चतुरस्रमष्टहस्तं सविस्तरं मंडलं विलिखेत् ॥ १२ ॥

अर्थ—फिर एक आठ हाथके चौकोर विस्तृत मंडलको पांच वर्णकी तीन रेखाओंसे जिनका अग्र भाग आपसमें बिंधा हुआ हो बनावे ॥ १२ ॥

चतुर्ष्वपि दिक्षु द्वे द्वे रेखे दद्यात्तथार्द्ध परिमाणे ।
एवं सति षट्कोण दिक्षु विदिक्ष्वपि च चत्वारः ॥ १३ ॥

अर्थ—चारों दिशाओंमें दो२ रेखा आधे परिमाणमें बनावे, इस प्रकार दिशाओंमें छह कोठे और विदिशाओंमें च्यार हो जावेंगे ॥ १३ ॥

अभ्यन्तराष्ट दिग्गत कोष्टेष्वथ मातृका गणं विलिखेत् ।
स सनयास्यायुध सहिता प्रतिर्य्यः शेष कोष्टेषु ॥ १४ ॥

अर्थ—विदिशाओंके अंदरके आठ कोठोंमें मातृका गण उनके आसन सहित लिखे और शेष कोठोंमें उनके प्रतिहारोंको लिखे ॥ १४ ॥

अष्ट मात्रका गणोंका वर्णन

ब्रह्माणी माहेश्वर्यथ कौमारि वैष्णवी च वाराही ।
ऐंद्री चामुंडा च महालक्ष्मी मातृका श्वेताः ॥ १५ ॥

अर्थ—ब्रह्माणी, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही, ऐंद्री, चामुंडी, और महालक्ष्मी, ये मात्रका गण हैं ।

वर पद्मराग शशिधर विद्रुम नीलोत्पलेन्द्र नील महा ।
कुलशैल राज बालार्क हंस वर्णः क्रमेणैताः ॥ १६ ॥

अर्थ—इनके रंग क्रमसे सुन्दर, पद्मराग (लाल), चंद्रमा, मूंगा, नीलकमल, इंद्र नीलमणि, सुमेरुपर्वत, बालसूर्य और हंस हैं । अर्थात् प्रत्येक देवको क्रमसे इनके समान रंगवाली बनावे ॥

नीरजवृषभमयूरा गरुडवराहगजस्तथा प्रेतः ।
मूषक इत्येतासां प्रोक्तानि सुवाहनानि बुधैः ॥ १७ ॥

अर्थ—पंडितोंने इनके बाहन क्रमसे कमल, बैल, मोर, गरुड, वराह, ऐरावत, प्रेत, और चूहा बतलाये हैं ॥ १७ ॥

कमलकलशौ त्रिशूलं फलवरदकशौच चक्रमथ शक्तिः ।
पाशौ वज्रं च कपालवर्तिके परशुरस्त्राणि ॥ १८ ॥

अर्थ—इनमेंसे ब्रह्माके कमल और कलश, माहेश्वरीका त्रिशूल, कौमारीके फल और वरको देनेवाला कोडा, वैष्णवीका चक्र, वाराहीके शक्ति, और पाश ऐंद्रीका वज्र, चामुण्डाके कपाल और बत्ती, और महालक्ष्मीका परशु अस्त्र है ॥ १८ ॥

आठ दंडकरी देवियां

तत्प्रतिहार्य्यौ विजया विजयाप्य जिता अपराजिता गौरी ।
गांधारी राक्षस्यथ मनोहरी चेती दंडकराः ॥ १९ ॥

अर्थ—उनके पीछे चलनेवाली क्रमसे जया, विजया, अजिता, अपराजिता, गौरी, गांधारी, राक्षसी और मनोहरी, दण्ड करनेवाली हैं ॥ १९ ॥

बाह्याष्ट दिशवथ कोष्टे विंद्रादि लोकपालांस्तान् ।
निजवाहनानिरूढान् स्वायुधवर्णानितान् विलिखेत् ॥ २० ॥

अर्थ—अब दिशाओंके बाहर आठ कोठोंमें उन इंद्रादि लोकपालोंके अपने२ बाहन पर चढे हुए शस्त्र और वर्ण सहित लिखे ॥ २० ॥

तदुभय पार्श्वाथ स्थित द्विष्टित कोष्टेष्विंद्रादि लोकपालानां ।
मेघ महामेघ ज्वाल लोल कालस्थितनीलः ॥ २१ ॥

अर्थ—उन इन्द्र आदि लोकपालोंके कोठेसे ही उनके दोनों तरफसे दो दो प्रतिहारोंको बनावे जो क्रमसे इस प्रकार हैं ॥ २१ ॥

सोलह प्रतिहार

मेघ १, महामेघ २, ज्वाल ३, लोल ४, काल ५, स्थित ६, अनील ७,

रौद्रातिरौद्र सजला जल हिमका हिमाचलस्तथा लुलितः ।
द्वौ द्वौ च महाकालौ नंदीति लिखेत् प्रतिहारौ ॥ २२ ॥

अर्थ—रौद्र ८, (महारौद्र) अतिरौद्र ९, सजल १०, अजल ११, हिमका १२, हिमाचल १३, लुलित १४, महाकाल १५, और नन्दी १६ ॥ इन प्रतिहारोंको लिखे ॥२२॥

बहिरप्यु दधि चतुष्कं पुनरुपरि सु पुष्पं मंडपं रचयेत् ।
तोरण माला दर्प्पण घंटा ध्वज विरचनं कुर्य्यात् ॥ २३ ॥

अर्थ—बाहिर चारों समुद्र फिर ऊपर फूलोंके मंडप बनावे, और उसको तोरण, माला, दर्पण, घंटा और ध्वजाओंसे सजावे ॥ २३ ॥

वरबीज पूर मलयजकुसुमाक्षतचर्च्चितान् धवल वर्णान् ।
कोणस्थ मूशल मूर्द्ध सुपूर्ण घटान् स्थापयेद्विधिना ॥२४॥

अर्थ—फिर सुन्दर बीज चंदन पुष्प और अक्षतसे पूजे हुए धवल वर्णके मुख तक भरे हुए घड़ोंको उनके ऊपर मुशल रखकर कोनोंमें रखकर उनकी विधि पूर्वक स्थापना करे ॥२४॥

मंडलमध्ये भूतं विलिख्य संस्थाप्य मृण्मयं चान्यत् ।
मंडलमध्येप्याग्नेया कोणेष्ठतु क्रमशः ॥ २५ ॥

अर्थ—मंडलके बीचमें दूसरे मिट्टीके जने हुए भूतको लिखकर मंडलके बीचमें आग्नेय आदि कोणोंमें क्रमशः ॥

कुर्य्यात्त्रिकोण कुंडं कमल्लिका कटहा वृत कुण्डानि ।
खदिरंगारक तैल सुपानीयांगार पूर्णानि ॥ २६ ॥

अर्थ—तीन कोणेवाले कुण्ड बनावे और कुण्डोंके चारों ओर कमल्लिका और कड़ाही रक्खी हों, और वह खैरके अंगारों, तेल जल और अंगारोंसे पूर्ण हो ॥ २६ ॥

इस यंत्रका उपयोग

ग्रह नाम रकार वृतं पत्रोपरिलिख्य निक्षिपे हृदये ।
पिष्ट घटितस्य सिक्थक मयस्य वा भूत रूपस्य ॥ २७ ॥

अर्थ—फिर पत्ते पर ग्रहका नाम अभूत रूपवाले पिसे हुए मोमसे लिखकर और उसके च्यारों ओर रकार लिखकर उसे बनाये हुए कुण्डके अपूर्व बीचमें रक्खे ॥ २७ ॥

अन्यच्च ग्रह रूपं पत्रे च पटे पृथक् समालिख्य ।
रूपस्य सत्य संधिषु रकार पिंडं लिखेन्मतिमान् ॥ २८ ॥

अर्थ—फिर ग्रहके दूसरे रूपको पत्ते और वस्त्र पर पृथक२ लिखकर बुद्धिमान् पुरुष उसकी संधियोंमें, रकार, बीज पिण्ड पुरुषको लिखे ॥ २८ ॥

कुण्डे प्रपूरयेतां कमल्लिकायां पचेच्च पुत्तलिकां ।
पत्रं कटि परिघटयेत्पटं तापयेत्कुण्डं ॥ २९ ॥

अर्थ—फिर कुण्डमें कमल्लिकाको डालकर उस पुतलीको पकावे और पत्तेको कढाहीमें घोटे तथा वस्त्रको कुण्डमें गरम करे ।

सवत मथ होम मंत्रं प्रपठन्निति निग्रहेषु विहतेषु ।
दाधोऽस्मि मारितोऽहं हतोऽहमिति रोदिति कठोरं ॥३०॥

अर्थ—इसके पश्चात् निरन्तर होमके मंत्र पढ़ता हुआ इस प्रकार निग्रह किये जानेपर ग्रह "मैं जला, खूब चोट लगती है, मैं मरा" कहकर खूब रोता है ।

प्रावेग सप्तदिवसान् त्रीन्वा लोके प्रसिद्ध लाभार्थं ।
प्रविनर्तयेद्ग्रहंडला द्विनास्वेच्छाया मंत्री ॥ ३१ ॥

अर्थ—पहिले सात दिन या ठीक तीन दिन लोकमें प्रसिद्ध और लाभ पानेके लिये मंत्री पुरुष ग्रहको खूब नचावे ॥ ३१ ॥

पश्चात्सप्तमदिवसे तृतीय दिवसे दिवा महत्यस्मिन् ।
विधि नैव सर्वतोभद्र मंडले नर्तयित्वा तं ॥ ३२ ॥

अर्थ—फिर सातवें दिन या तीसरे दिन उसको सर्वतो-भद्र मंडलमें विधिपूर्वक नचाकर ।

कृष्णाष्टम्या मथ तद्भूत तिथौ वा कुजांशाभ्युदये ।
दुष्ट ग्रहमशुभग्रह लग्ने प्रविसर्जयेत्तज्ज्ञः ॥ ३३ ॥

अर्थ—कृष्णपक्षकी अष्टमीको या उस भूतकी तिथिको अथवा मंगलके निकलने पर उस दुष्ट ग्रहको अशुभ ग्रह और अशुभ लग्नमें छोड़े ॥ ३३ ॥

समय मण्डल

विपुलाष्ट दलं पद्मं विलिख बाहेस्य पंच वर्णेन ।
चूर्णेन चतुः कोणं विस्तीर्ण मंडलं विलिखेत् ॥ ३४ ॥

अर्थ—फिर बडे आठ दलवाले कमलको लिख उस पंच वर्णके चूर्णसे चौकोर बडा मंडल बनावे ॥ ३४ ॥

हरिण वराह तुरंगमगजवृष महिष करममार्जार मुखं ।
फल वरद हंस युक्तं सालंकार सुलक्षण नारीणां ॥ ३५ ॥

अर्थ—फिर, हरिण, वराह, तुरंग, गज, वृष, महिष, करभ (ऊंट), और मार्जारके मुख, तथा फल, और वरको देनेवाले हंससे युक्त अलंकार सहित स्त्रियोंके सुलक्षण ॥॥३५॥

पूर्वाद्यष्ट सु पत्रेष्वनुक्रमात्सुन्दरं लिखेद्रूपं ।
तन्मध्ये षट्कोणं शिखि भवनं शिखिमालिख्य ॥ ३६ ॥

अर्थ—पूर्व आदि आठों दलोंपर सुन्दर रूपसे लिखे, उसके बीचमें छह कोनवाला मोरका भवन बनाकर उसमें मोर बनावे ॥ ३६ ॥

ऊर्ध्वोऽधोरेफयुक्तं यां यीं यूं यौं तथैव यं यः सहितं ।
पूर्वादि कोष्ठ मध्ये विलिख्य वामं तदग्रेषु ॥ ३७ ॥

अर्थ—ऊपर नीचे रेफयुक्त यां यीं यूं यौं यं यः बीजोंको उनके पूर्व दिशासे आरंभ करवाई ओरको लिखे ॥ ३७ ॥

षट्कोण भुवन मध्ये य्यूं तत्कोष्ठांतरेष्वपि लिखेच्च ।
समयं ग्रहितव्यो ग्रहः स्फुटं समयमंडलाऽख्येऽस्मिन् ॥३८॥

अर्थ—षट्कोण भुवनके भीतर और उस कोठेके भीतर भी य्यूं लिखे, यह ही समय ग्रहको पकड़नेका है। अतएव यह समय मंडल है ॥ ३८ ॥

रेखा त्रयेण सम्यक् चतुरस्रं पंच वर्ण चूर्णेन ।
प्राग्वद्विलिख्य मंडलमथ तन्मध्ये शिवं विलिखेत् ॥ ३९ ॥

सत्य मण्डल

अर्थ—तीन रेखाओंसे पहलेके समान पांच वर्णके चूर्णसे चौकोर मंडल बनाकर उसके बीचमें शिव लिखे ॥ ३९ ॥

तत्राभ्यन्तर दिग्गत कोष्ठेषु जयादि देवता विलिखेत् ।
गौर्यादि देवतास्ता श्चेशानाद्येषु कोष्ठेषु ॥ ४० ॥

अर्थ—उसके अंदरके कोठोंमें जयादि देवियोंको लिखे, और ईशान आदि कोठोंमें गौरी आदि देवियोंको लिखे ॥४०॥

आद्या जयाथ विजया तथाऽजितावाऽपराजिता गौरी ।
गांधारी राक्षस्यथ मनोहरी चेति देव्यस्ताः ॥४१॥

अर्थ—उनमें पहले जया, फिर विजया, फिर अजिता, फिर अपराजिता, फिर गौरी, फिर गांधारी, फिर राक्षसी, और अंतमें मनोहरी देवीको लिखे ॥ ४१ ॥

बाह्येशान दिशि स्थित कोष्ठादिषु कोष्ठकेषु कादीन् विलिखेत् ।
सत्याख्यमंडलेऽस्मिन् शापयितव्यो ग्रहः सत्यं ॥ ४२ ॥

अर्थ—बाहर ईशान आदि दिशाओंके कोठोंमें कोष्टकके अंदर क आदिको लिखे, इस सत्य नामवाले मंडलमें ग्रह अवश्य ही नष्ट हो जाते हैं ॥ ४२ ॥

इन्द्रादि लोकपालान् मंडल पूर्वादि दिक्षुसंविलिखेत् ।
मध्येचार्हत्प्रतिमा मन्योन्यारीन्मृगान् परितः ॥ ४३ ॥

अर्थ—इन्द्र आदि लोकपालोंको मण्डलकी पूर्व आदि दिशाओंमें लिखे। मध्यमें श्री भगवान अर्हंत देवकी प्रतिमा

लिखी हो, जिसके चारों ओर परस्पर विरोधी पशु हों ॥४३॥

एतत्क्रियावसाने प्रदर्शयेत्समवशरण मंडलमतुलं ।
नत्वा स्तुत्वा वैरं प्रविहाय सयाति दृष्टेदं ॥ ४४ ॥

अर्थ—इस क्रियाके पश्चात् अतुलनीय समवशरण मंडलको बनाकर दिखावे, वह ग्रह इसको देखकर नमस्कार तथा तथा स्तुति करके वैरको छोडकर चला जाता है ॥ ४४ ॥

इतिश्री हेलाचार्य प्रणीत अर्थमें श्रीमान् इन्द्रनन्दि मुनि विरचित ग्रन्थमें ज्वालामालिनी कल्पकी, काव्य साहित्य तीर्थाचार्य प्राच्य विद्यावारिधि श्री चन्द्रशेखर शास्त्री कृत भाषाटीकामें "मंडलाधिकार" नामक चतुर्थ परिच्छेद समाप्त हुआ ॥ ३ ॥



पंचम परिच्छेद

भूता कम्पन तैल

पूतिक शुक तुण्डिका खलु शुक
तुण्डिकाक तुण्डिका चैव ।
सितकिणि हिकाश्व गंधा
भू कूष्मांडिंद्र वारुणिका ॥ १ ॥

अर्थ—पूतिक शुक तुण्डिका काक तुण्डिका सफेद किणिहिका अश्वगंधा भू कूष्मांडि इंद्र वारुणी ।

पूति दमनोग्र गंधा श्रीपर्ण्यसकंध कुटज कुकरंजाः ।
गो शृङ्गि शृङ्गिनाग सर्प्प विषमुष्टिकां जीराः ॥ २ ॥

अर्थ—पूति दमन उग्रगंधा श्रीपर्णी असगंध कुटज कुकरंजा गोशृंगि शृंगिनाग सर्प्पविष मुष्टिक अंजीर ।

नाली रुचक्रांगी खरकर्णी गोक्षुरश्च विष नकुली ।
कनक वराह्यं कोल्ला अस्थि प्रमश्च लज्जरिका ॥ ३ ॥

अर्थ—नीलीरुत् चक्रांगी खरकर्णी गोखरू नवलेका विष कनक वराही अंकोल अस्थि प्रभ लज्जरिका ॥ ३ ॥

पाटल काम मदन तरूर्व्विभीत तरूरपि च काक जंघा च ।
बंध्या, च देव दारु च बृहती द्वि तयं च सहदेवी ॥ ४ ॥

अर्थ—पाटलिका, काम, मदनतरु, भिलावा, काकजंघा, बन्ध्या, देवदारु, बृहती, सहदेवी ।

गिरिकर्णिका च नदिमल्लिकार्क शैलार्के हस्तिकर्णाश्च ।
स्तुन्निम्ब महानिम्बौ शिरीष लोकेश्वरी दान्याः ॥५॥

अर्थ—गिरिकर्णिका, नदिमल्लिका, अर्कशैल, हस्तिकर्णी, नीम, महानीम, सिरस, लोकेश्वरी, दान्य ।

पारितरु महावृक्षो कटुक हारोपयोगिमूलानि ।
सितक रक्तजपादंदिब्राह्मे द्वय कोकि लाक्षश्च ॥ ६ ॥

अर्थ—परिवृक्ष, महावृक्ष, कटुक हार, उपयोगि मूल; सफेद और लाल, जपादंदि और ब्रह्मी, कोकिलाक्ष ॥७–६॥

भृंगश्च देवदालिकटुकम्बी सिंहकेशरं चैव ।
घोषालिका र्कभक्तौ यति मुन्यतिमुक्तक लताश्च ॥ ७ ॥

अर्थ—भृंग, देवदालि, कटुकंबी, सिंहकेशकर, घोषालिका, अर्कभक्ति, पतिलता, मुनिलता, अतिमुक्तकलता ।

भगपुष्पि नागकेशर शार्दूलनखी च पुत्रजीवी च ।
शीग्रु हु तथैरण्ड स्तुलसी सध्यापमार्ग्गा श्च ॥ ८ ॥

अर्थ—भगपुष्पि, नागकेशर, शार्दूलनखी, पुत्रजीवी, शीग्रुहु, एरण्ड, तुलसी, सध्या अपामार्ग ।

करि करम कर विचूर्णित वृषणाक्षच्छागमूत्रमिश्रेण ।
तच्चर्म्मकारुकुन्डांबुनौषधं पेषयेत्सर्व्वं ॥ ९ ॥

अर्थ—और गजमद, इन सबका चूर्ण करके बैल और बकरेके मूतमें मिलावे । तथा उन सब औषधियोंको चमारके कुन्डके पानीसे पीसे ॥ ९ ॥

कृत्वा द्विभाग मेकां न्यस्य क्काथं प्रगृह्यते मूत्रैः ।
अर्द्धावर्ते क्काथे द्वितीय मालोडयेद्भागं ॥ १० ॥

अर्थ—उसके दो भाग करके एक भागका क्काथ मूत्रके साथ तैयार करे, और आधे क्काथमें दूसरे भागको डबोवे ॥१०॥

कंगु करुंजै रंडा कोल्लविभीत द्विनिंब तिल तैलं ।
सम भागेन गृहीतं क्काथेनसह क्षिपेत्काथे ॥ ११ ॥

अर्थ—कंगु, करंज, एरंड, अंकोल मिलावे, निंब और तिलके तेलको बराबर लेकर क्काथके साथ क्काथमें ही डाल दे ॥ ११ ॥

भूत गृहे भूत दिने भूत महिजात मंडपस्पाधः ।
कुजमारे भौमांशाभ्युदये प्रारभ्यते पक्तुं ॥ १२ ॥

अर्थ—और भूतके घरमें भूतके दिन भूतकी पृथ्वी पर मंडपके नीचे मङ्गल और बुधके अंशके निकलने पर पकाना आरम्भ करे ॥ १२ ॥

कार्पासकांस गोमय रविकर वितिपतित वह्निना सम्यक् ।
खदिर करंजार्क शमी निंब समिद्भिः पचेवद्वहुद्भिः ॥ १३ ॥

अर्थ—उस क्वाथको सूर्यकी किरणोंसे दी हुई अग्निसे कपास, कांस, गोबर, खैर, करंज, आक, शमी और नीमकी लकड़ीसे अच्छी तरह पकावे ॥ १३ ॥

क्षिप ॐ स्वाहा बीजैः सकलीकरणं विधाय निजदेहे ।
तैरेव बीजमंत्रैः पक्तुः सकलीक्रियां कुर्यात् ॥ १४ ॥

अर्थ—'क्षिप ॐ स्वाहा' इन बीजोंसे अपने सकलीकरण करके उन्हीं बीज मंत्रोंसे पकानेकी सब क्रिया करे ॥ १४ ॥

तत्सर्वधान्यसर्षपलवण घृतैरिंधनान्वितै श्चुल्यां ।
आपाकांतं मंत्री होमं कुर्य्यात् स होममंत्रेण ॥ १५ ॥

अर्थ—मंत्री पुरुष उस तेलके पकने तक होमके मंत्रोंसे सब धान्य सरसों नमक और घीको कुण्डमें डाल२ कर होम करता रहे ॥ १५ ॥

नीरसभावं गत्वा क्वाथोद् स्थल गतो यथा भवति ।
भूताकंपनतैलं मृदुपाकगतं तथा सिद्धं ॥ १६ ॥

अर्थ—जब यह क्वाथ निरस होकर जमीन पर रखने जैसा हो जावे, तो वह मृदु पाकसे बनाया हुआ भूता कम्पन तैल सिद्ध हो जाता है ॥ १६ ॥

हिंगुर्म्मणिद्धिछल्लैला हरिताल पलत्रिकं कटु त्रितयं ।
रजनी द्वितीयं सर्षप लशुनं रुद्राक्ष दान्य वचाः ॥ १७ ॥

अर्थ—हींग, मनसील, इलायची, हरताल, तीन परिमाण पल और त्रिकुट (सोंठ पीपहलका मिर्च) दोनों रजनी (हल्दी) सरसों, लहसुन, रुद्राक्ष, दान्य और बच ॥ १७ ॥

अजमोद लवण पंचकमरिष्ट फलमुदधिफलमथ त्रिवृता ।
एतानि प्रतिपाकं संदद्यादुतारि तैलेन ॥ १८ ॥

अर्थ—अजमोद, पांचों नमक, अरिष्टफल, समुद्र फल तथा त्रिवृता इन वस्तुओंको प्रत्येक पाकके साथ तेलमें मिलावे ॥ १८ ॥

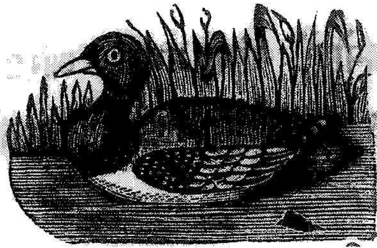
पश्चात् खड्गै रावण विद्या मंत्रेण मंत्रयेन्मंत्री ।
दश शत वारानेवं विधिनातैः सुसिद्धं स्यात् ॥ १९ ॥

अर्थ—फिर मंत्री पुरुष उस तेलको खड्गै रावण विद्या मंत्रसे एक सहस्रवार विधिपूर्वक अभिमंत्रित करै ॥ १९ ॥

शाकिन्योऽप स्मारा: पिशाचभूतग्रहाश्च नश्यन्ति ॥
निर्व्विषतां यातिविषं तैलस्याघ्राण्यनस्येन ॥ २० ॥

अर्थ—इस विष तैलकी सुगन्धीसे ही शाकिनी, अपस्मार, पिशाच, भूत और अन्य ग्रह निर्विष हो जाते हैं ॥२०॥

इतिश्री हेलाचार्य प्रणीत अर्थमें श्रीमान् इन्द्रनन्दि मुनि विरचित ग्रन्थमें ज्वालामालिनी कल्पकी, प्राच्य विद्यावारिधि काव्य साहित्य तीर्थाचार्य श्री चन्द्रशेखर शास्त्री कृत भाषाटीकामें "भूता कम्पन तैलविधि" नामक पंचम परिच्छेद समाप्त हुआ ॥ ५ ॥



अथ षष्टम परिच्छेद

सर्व रक्षा यन्त्र

नामावेष्ट्यसकार सान्तलपर ग्लौं युग्म पूर्णेंदुभिः
दिव्य क्ष्माक्षरमस्तकै परिवृतं कोणस्थरान्तै वृतं॥
बाह्ये षोडश पत्र पद्ममथ तत्पत्रेषु देया स्वराः।
कोणे क्ष्माक्षर दिग्गतेन्द्र सहितं बाह्ये च भूर्मंडलं॥

अर्थ—एक सोलह दलवाला कमल बनाया जावे, उसके प्रत्येक पत्रके ऊपर स्वरोंको लिखना चाहिये। उस कमलके बाहर पत्तोंके कोणोंमें क्रमसे निम्नलिखित बीज लगाने चाहिये।

अ, ए, क, च, त, प, य, श, ह्रीं, ग्लौं, ग्लौं, र, प, ल और स उसकी कर्णिकामें नामको स, ह, व, ग्लौं ग्लौं और पूर्ण-चन्द्रसे वेष्टित करे, और सबके बाहर पृथ्वी मंडल बनावे ॥१॥

एतत्तु सर्वरक्षा यंत्रं लिखितं सुगन्धिभिर्द्रव्यैः।
अपहरति रोगपीड़ामपमृत्यु ग्रह पिशाच भयं ॥ २ ॥

अर्थ—यह सर्व रक्षा यन्त्र है। सुगन्धित द्रव्योंसे लिखा जाने पर रोगकी पीड़ा, अप मृत्यु, भय ग्रह और पिशाचको दूर करता है ॥ २ ॥

ग्रह रक्षक पुत्रदायक यंत्र

अदठ हकार कूट सकल स्वर वेष्टितं सत्प्रणम भू।
भूमंडल वेष्टितं समभि लिख्य निवेष्सित नाम तद् वहिः ॥
षोडश सत्कलान्वित वकार वृतं शशि मंडला वृतं।
स्वरयुत यांत वेष्ट्य मिन बिम्बवृतं स्वरयुक्तयावृतं ॥ ३ ॥

अर्थ—अ द ठ ह क्ष सब स्वर और ओं को मंडलाकार लिख उसके अन्दर नाम लिखे—फिर एक भूमंडलमें सोलह स्वरोंको लिखकर उसके चारों ओर वं बीजका मंडल बनावे ॥ ३ ॥

अष्ट दलांबुजं प्रतिदलं द्विकलोद्य जमाशृका नमः।
पाश गजेंद्र वरा होम पदांत सुमंत्रमालिखेत् ॥
जल निधि सप्तकं बहिरपि स्वर युक्त।
यकार वेष्टितं पवन त्रितयेन वेष्टितं ॥ ४ ॥

अर्थ—उसके चारों ओर अष्ट दल कमलका बनाकर प्रत्येक दलमें। "ॐ आं शं ञ ठ द् द्वि कलाद्य ज माशृका नमः स्वाहा"।

मंत्र लिखकर उसको चारों ओर सात वं के मंडल उसके बाहर स्वर सहित य कार और उसके बाहर तीन यं के मंडल हों ॥ ४ ॥

मंत्र मृत्यु जिताह्वयं विलिखितं सत्कुंकुमाद्यैरिदं।
यो धत्ते निजकंठबाहुबसने तस्येह नस्याद् भयं ॥
कुठारी भमृत वारिधि नदी चोरापमृत्युद् भवं।
रक्षत्या युध शाकिनी ग्रह गणाद् वंध्यास्त्रयः पुत्रदं ॥ ५ ॥

अर्थ—जो व्यक्ति इस मृत्युके जीतनेवाले यन्त्रको कुंकुम आदिसे लिखकर कंठ या भुजामें धारण करता है, उसको कुठार, हस्ती, समुद्र, नदी, चोर और अप मृत्युसे होनेवाला भय कभी नहीं होता। यह यन्त्र बंध्या स्त्रीको पुत्र देनेवाला है। और शस्त्र शाकिनी तथा ग्रह समूहसे रक्षा करता है ॥ ५ ॥

वश्य यन्त्र

यांत हकार लांत परिवेष्टित नाम वृतं त्रिमूर्तिना।
प्रवरकिरातनाम वलयं द्विगुणाष्ट दलांबुजं वहिः ॥
षोडश सत्कला लिखित दलेषु शिरो रहिते स्वरावृतं।
वहिरपि च त्रिमूर्ति परिवेष्टितमजाधिक वर्ण वेष्टितं ॥ ६ ॥

अर्थ—एक सोलह दल कमलकी कर्णिकामें स, ह, व, क्लीं, इन चार बीजोंसे घिरा हुआ नाम लिखकर सोलह दलोंमें बिना शिरवाली सोला कलाएं लिखकर बाहर भी एक मंडलमें सोलहों स्वर और उसके बाहर ह्रीं, लिखकर क्लें, क्रों से वेष्टित करे ॥ ६ ॥

कुंकुम कर्पूरा गुरु मृग मद् रोचनादि मिर्घ्यमिदं ।
परिलिख्य भुर्ज्ज पत्रे समर्चयेत्सर्वं वश्यकरं ॥ ७ ॥

अर्थ—इस यंत्रको भोजपत्र पर कुंकुम, कपूर, अगर, कस्तूरी और गौरोचन आदिसे लिखकर पूजा करे तो सब वशमें हों ॥ ७ ॥

मोहन वश्य यंत्र

हरि गर्भ स्थित नाम तत्परि वृतं रुद्रत्रि मूर्त्या हतः ।
पुटितं से नवकार संपुट गतं वेष्टयन्तु टान्त स्वरैः ॥
बहिरष्टांबुज पत्र केष्व यजया जंभादि सम्बोधनं ।
बिलिखेन्मोहय मोहया मुकनरं वश्यं कुरुद्विर्व्वषट् ॥ ७ ॥

अर्थ—एक अष्टदल कमलकी कर्णिकामें नामको ई ई ई स स व व और ठ से घेर कर उसके चारों ओर गोलाकारमें सोलहों स्वर लिखे फिर बाहरके आठों पत्रोंमें पूर्वादिक्रमसे निम्नलिखित आठ मंत्र लिखे—

अये जये मोहय मोहय अमुकं नरं वश्यं कुरु कुरु वषट्
अये जंभे मोहय मोहय अमुकं नरं ,, ,, ,, ,,
अये विजये मोहय मोहय ,, ,, ,, ,, ,, ,,
अये मोहे मोहय मोहय ,, ,, ,, ,, ,, ,,
अये अजिते मोहय मोहय ,, ,, ,, ,, ,, ,,
अये स्तम्भे मोहय मोहय ,, ,, ,, ,, ,, ,,

अये अपराजिते मोहय मोहय अमुकं नरं वश्य कुरु कुरु वषट् ।
अये स्तंभिनि मोहय मोहय ,, ,, ,, ,, ,, ,,
क्रों पत्राग्र मतं तदन्तर गतं ह्रीं ह्रीं च बाह्ये लिखेत्
श्रां श्रीं श्रूं पुनरुक्त मंत्र बलयं श्रों श्रः पदं तद् वहिः ।
यंत्रं मोहन वश्य संज्ञकमिदं भूर्ज्जे विलिख्यार्च्चयेत्
धतूरस्य रसेन मिश्र सुरभि द्रव्यै र्भवेन्मोहनं ॥ ९ ॥

अर्थ—पत्रको कोनेमें अंदरकी ओर क्रों और बाहर दोनों ओर ह्रीं ह्रीं लिखकर गोल मण्डल बनाकर उसमें "श्रां श्रीं श्रूं श्रों श्रः" बीजोंको लिखे। इस मोहन वश्य नामके यंत्रको भोजपत्र पर धतूरके रस और सुगन्धित द्रव्योंसे लिखनेसे मोहन होता है ॥ ९ ॥

स्त्री आकर्षण यंत्र

ह्रीं मध्यस्थित नाम दिक्षु विलिखेत् क्रोंतद्वि दिक्षुप्यजं ।
बाह्ये स्वास्तिक लांछनं शिखि पुरं रेफै र्बहिः प्रावृतं ॥
तद् वाह्येग्निपुञ्ज त्रिमूर्तिबलयं वन्हेः पुरं पावकैः ।
पिंडै र्वेष्टितमग्नि मंडल मतस्त द्वेष्टितं चांकुशैः ॥ १० ॥

अर्थ—एक स्वस्तिकका चिह्न बनाकर उसकी दिशाओंमें ह्रीं के मध्य नाम और विदिशाओंमें क्रों लिखे, उसके चारों ओर तीन अग्नि मण्डल रं सहित बनावे। इसके पश्चात् तीन वायु मण्डल यं बीजसे बनाकर यंत्रका क्रों से निरोध कर दे ॥ १० ॥

बाह्ये पावका मण्डलं वर युतं मंत्रेण देव्यास्ततो।
वायूनांत्रितयेन वेष्टनमिदं यंत्रं जगत्युत्तमं ॥
श्री खंडा गुरु कूंकुमाद्रं महिषी कर्पूर गोरोचना।
कस्तूर्यादिभि रुद्धभूर्ज्जे लिखितं कुर्य्यात्सदा कर्षणं ॥११॥

अर्थ—इस यन्त्रको भोजपत्र पर श्री खण्ड अगर और कुंकुम आदि महिषी, कपूर, गौरोचन और कस्तूरी आदिसे लिखने पर सदा आकर्षण होता है ॥ ११ ॥

लाक्षा पांशु सुसिद्ध सत्प्रति कृती कृत्वा हृदीदं तपो-
र्य्यंत्रं स्थापय नाम पत्र सहितं लाक्षां प्रपूर्य्योदरे।
भीत्वा योनि ललाट हृत्सुपर पुष्ट क्षस्य सत्कंटकैः,
रेकां कुण्डतले निखन्य च परांबद्धाग्नि कुण्डोपरि ॥१२॥

अर्थ—इस यन्त्रको सिद्ध करनेके वास्ते अपनी इच्छित स्त्रीकी दो मूर्तियां लाखकी बनवावे। उस मूर्तिमें योनि, मस्तक, हृदय, ओष्ट आदि स्पष्ट रूपसे खुदे हुए हों, फिर उपरोक्त यन्त्रको उन मूर्तियोंके हृदयमें रखकर एक मूर्तिको कुण्डके नीचे गाडकर दूसरीको कुण्डके ऊपर बांधकर रक्खे ॥१२॥

लाक्षा गुग्गुल राजिका तिल घृतैः पात्रस्थ नामान्वितैः।
संयुक्तैर्लवणेन तत्सति युतः संध्या सु साष्टं शतं ॥
मंत्रेणानल दैवतस्य जुहु वादा सप्त रात्रा वधे।
रिन्द्राणी मपि चानयेत् क्षितिगत स्त्रयाकर्षणे का कथा ॥१३॥

अर्थ—और लाख, गुग्गुल, सफेद सरसों, तिल, घी, और नमकसे, संध्या समय पात्रके नामके पीछे स्वाहा लगा लगाकर सात रात्रि तक होम करे, ऐसा करनेसे इन्द्राणी तकका भी पृथ्वीपर आकर्षण होता है। स्त्रीके आकर्षणकी तो क्या बात है ॥ १३ ॥

दिव्य गति सेना जिह्वा और क्रोधस्तंभन यंत्र

नामा लिख्य प्रतीतं कपरपुट गतं टांतवेष्ट्यं चतुर्भिः
बज्रैर्विद्धं चरांतं कुलिशविवारगं वामबीजं तदग्रे ॥
बज्रं चान्योन्यविद्धं ह्युपरिलिखबहिर्विष्णुना त्रिः परीतं।
स ज्योतिश्चांद्रबिंदु हरिं कमल जयोः स्तम्भ बिंदुर्ल्लकारे ॥१४

अर्थ—नाम को, ख, की पुटमें लिखकर उसको वज्राकार रेखाओंसे बींधकर वज्रके छेदोंके सामने ॐ, बीज लिखे और मध्यमें लं, लिखे। परस्पर बिंधे हुये इस वज्रके मंडलके ऊपर ई के तीन मंडल बनावे। इस यंत्रमें, लं, के साथ ग्लां, ह्रूं, और ग्लैं, बीज भी लिख दे ॥ १४ ॥

तालेन शिला संपुट लिखितं परिवेष्टय पीत सूत्रेण।
दिव्य गति सैन्य जिह्वा क्रोधं स्तंभयति कृत पूजं ॥ १५ ॥

अर्थ—इस यंत्रको तालसे दो शिलाओं पर लिखकर दोनों यंत्रोंका मुख मिलाकर पीले धागेसे लपेटे और पूजा करनेसे दिव्य गति सेना जिह्वा और क्रोधका स्तंभन होता है ॥१५॥

स्तंभन यंत्र

वज्राकाराग्ररेखानवककृतचतुःषष्टिकोष्टान् लिखित्वा ।
बाह्ये बिंदु त्रिदेहं तदनुलिखितदंतश्च लीन्तस्य वान्तः ॥
ग्लौं दद्यान्नाम गर्भं कुलिशयुगलविद्धततस्त द्वि दिक्षु ।
रान्तं वज्रान्तराले वलयतिमथत त्स्वेन मंत्रेण बाह्ये ॥१६॥

अर्थ—वज्राकार रेखाओंके प्रत्येक ओर आठ२ कोठे बनाकर कुल चौंसठ कोठे बनावे। उनमेंसे प्रथम चारों ओर ॐ फिर ह्रीं फिर लीं और फिर भ लिखकर बीचके स्थानमें दो वज्रोंसे बिंधे हुए नामको ग्लौंके अंदर बनावे। और उसकी विदिशाओंमें ल लिख देवे। समस्त यंत्रके चारों ओर बाहर निम्न लिखित मंत्र लिख दे ॥ १६ ॥

आवेष्टन मंत्र

"ॐ वज्रक्रोधाय ज्वल२ ज्वालामालिनि ह्रीं क्ष्लीं ब्लूं द्रां द्रीं ह्रां ह्रीं हूं ह्रौं हः देवदत्तस्य क्रोधं गतिं मतिं जिह्वां च हन२ दह२ पच२ विध्वंसय२ उत्कृष्ट क्रोधाय स्वाहा।"

यंत्रमिदं भुवि फलके कुड्ये भूर्जे विलिख्य तालेन ।
मंत्रेण पूजितं सत्कुर्य्यादिहृदयेप्सितं स्तंभं ॥ १७ ॥

अर्थ—इस यन्त्रको पृथ्वीपर कुड्य पर अथवा भोज पत्र पर तालसे लिखे। और मँत्रसे पूजन करनेसे इच्छानुसार स्तंभन होता है ॥ १७ ॥

जिह्वा स्तम्भन यन्त्र

नाम्नः कोणेषु दत्वा ल मथ परि वृतं वाधिना बिंदु नाऽव ।
लं, बीजै र्व्वेष्टितं तत्कुलिश वलयितं वेष्टितं व त्रयेण ॥
भूर्ज्जे गौरोचना कुंकुम लिखितमतः कुम्भकाराग्रहस्तान् ।
मृत्स्नामादाय कृत्वा कृतिमथतद्यत्रमास्ये निधाय ॥१८॥

अर्थ—नामके कोनोंमें लं, लिखकर उसको बिंदु सहित व, से वेष्टित करे। फिर उसके चारों ओर दो मंडल बनाकर पहिलेको, लं, बीजोंसे और दूसरेको तीन ठ, से भरे इस यन्त्रको भोज पत्र पर गौरोचन और कुंकुमसे लिखे। फिर कुम्हारके हाथकी मिट्टी लाकर उसे अपने प्रत्यर्थिकी छोटीसी मूर्ति बनाकर उसके मुख यह यंत्र रख दे ॥ १८ ॥

तद्वक्रं परपुष्टकंकटचयैर्भीत्वा शरा वद्वय ॥
स्यांतस्तां प्रणिधाय सम्यगथ जंभे मोहिनी संयुजा ॥
स्वाहा मंत्र पदेन पीत कुसुमै रभ्यर्च्य यातः पुमान् ।
प्रत्यर्थि व्यवहारिणो विजयते तजिह्वकाः स्तम्भयेत् ॥१९॥

अर्थ—उस मूर्तिका मुख मजबूत कांटोंसे चीरकर उसको दो मिट्टीके शरावोंमें रखकर निम्नलिखित मंत्रसे उसकी पीले पुष्पसे पूजा करता है। उसके विरोधी व्यवहारीका जिह्वा स्तम्भन हो जाता है।

मंत्र—ॐ जंभे मोहे अमुकस्य जिह्वा स्तंभय२ ठः ठः ठः स्वाहा" ।

गति जिह्वा और क्रोध स्तम्भन यन्त्र

नामालिख्य मनुष्यवक्त्रविवरे तन्द्रांतसांता वृतं ।
लान्नग्लौंत्रिशरीरवेष्टितमतः कोणस्थलं बीजकं ॥
दिक्स्थं क्षीं धरणीतलं च विनथं जिह्वा स्तंभिनी मोहसत्—
मंत्रेणान्वितमातनोति गतिजिह्वा क्रोधसं स्तम्भनं ॥२०॥

अर्थ—मनुष्यके मुखमें नामको क्रमसे ल ह व ग्लौं और ह्रींके मध्यमें लिखकर उसको रेखासे वेष्टित करके कोनोंमें लं बीज और दिशाओंमें "ॐ क्षि क्षीं" लिखे। इस यंत्रको "ॐ जिह्वा स्तम्भिनी क्षि क्षीं स्वाहा" इस मंत्रसे पूजनेसे गति जिह्वा और क्रोध स्तंभन होता है ॥ २० ॥

ओदनरजनीखटिकास्संपेष्य तदीयवर्तिकालिखितं ।
यंत्रमिदंपाषाणे तत्पिहितं खेष्टसिद्धिकरं ॥ २१ ॥

अर्थ—चांवल हल्दी और खडियाको पीस कर उसकी बत्तीसे इस यंत्रको पाषाण पर लिखे पश्चात् सिद्ध होने पर मुखमें रखनेसे सिद्धि होती है ॥ २१ ॥

पुरुष वश्य यन्त्र

क्रूं मध्ये लिख नाम तत्कमलवैर्विद्धं क्षतैर्वेष्टितम् ।
बाह्येप्यष्टदलाम्बुजं प्रतिदलं स्वाहांतवामादिकां ॥

देवीं गौर्य्यं पराजिते च विजयां जंभां च मोहां जयां ।
वाराहीमजितां क्रमाल्लिख बहिर्व्वामादि ज्रूं सः पदाः ॥२२॥

अर्थ—एक अष्ट दल कमलकी कर्णिकामें क्रूं क वी क्ष और वैं बीचमें नामको लिखकर आंठों पत्रोंमें पूर्वादिक्रमसे "ॐ गौर्यै स्वाहा" "ॐ अपराजितायै स्वाहा" "ॐ विजयायै स्वाहा" "ॐ जृंभायै स्वाहा" "ॐ मोहायै स्वाहा" "ॐ जयायै स्वाहा" ॐ वाराह्यै स्वाहा" "ॐ अजितायै स्वाहा" मंत्र लिखे। और उसके बाहरके मंडलमें "ॐ ज्रूं सः" बीजोंको लिखे ॥ २२ ॥

स्त्रीपुरुषसुरतसमये योन्यां विनि पतितमिंद्रियं यत्नात् ।
कार्प्पासेन ग्रहीत्वा भूमिं परिहृत्य संस्थाप्य ॥ २३ ॥

अर्थ—स्त्री पुरुषकी सुरतके समय योनिमें गिरी हुई इन्द्रियको यत्न पूर्वक कपासकसे पकड़ कर पृथ्वीके अतिरिक्त स्थान पर स्थापित करके ॥ २३ ॥

काश्मीर रोचनादिभि रेतद्यंत्रं विलिख्य भूर्ज्जदले ।
पावक पिहितं तदुपरि विकीर्य्य सित कोकि लाक्ष बीजरजः ॥

अर्थ—इस यंत्रको भोजपत्र पर गौरोचन केशर आदिसे लिख कर अग्निसे ढक कर उसके ऊपर श्वेत कोकिलाक्षके बीजोंकी धूल डाले ॥ २४ ॥

जल मिश्र रेतसा तन्निसिंचय सूत्रावृतं कटौ विधृतम् ।
पुरुषं निजानुरक्तं करोति षंढं परस्त्रीषु ॥ २४ ॥ (क)

अर्थ—उस यंत्रको जलमें मिलाये हुए अपने वीर्यसे सींच कर तागेसे लपेट कर यदि स्त्री अपनी कमरमें बांधै तौ उस स्त्रीमें अनुरक्त पुरुष दूसरी स्त्रियोंके लिये नपुंसक हो जावे ॥ २४ ॥

कणयवश्य यंत्र

ह्रीं मध्ये नाम युग्मं शिखि पुर पुटितं तस्य कोष्ठेषु वामं ।
ह्रीं जंभे होममन्यत्पुनरपि विनयं ह्रीं च मोहे च होमं ॥२५॥
ह्रीं तत्कोष्टांतरालेष्ठथ गजवशकृद्बीजमन्यतदग्रे ।
बाह्ये ह्रीं स्वस्य नाम्नांतरित मथ वहिः श्रूं लिखेत्साध्य नाम्ना ॥२६

अर्थ—"र" बीजकी पुटके अंदर ह्रीं उसमें अपना और साध्य दोनोंका नाम लिखे, उसके बाहर छह कोण कोठे बनाकर एक२को छोड़२ कर "ॐ ह्रीं जंभे स्वाहा" और "ॐ ह्रीं मोहे स्वाहा"—मंत्र लिखे। कोठोंके अंतरालमें ह्रीं और कोनोंमें क्रों लिखे। उसके बाहर दूसरे मंडलमें अपने नाम सहित ह्रीं और उसके बाहर दूसरे मंडलमें साध्यके नाम सहित श्रूं लिखे ॥ २५—२६ ॥

कुंकुमहिममधुमलयजयावकगोक्षीररोचनागुरुभिः ।
मृगमदसहितैर्विलिखेत् कणयसुयंत्रं जगदाकृत् ॥ २७ ॥

अर्थ—इस जगत्के वशमें करनेवाले कणय नामके यंत्रको कुंकुम, हिम, मधु, मलयज, जौके दूध, गौरोचन, अगर और कस्तूरीसे लिखे ॥ २७ ॥

शाकिनी भय हरण यंत्र ॥ २ ॥

नाक ॐकारमध्ये पुनरपि वलयं षोडशस्वस्तिकाना-
माग्नेयं गेहमुद्यन्नवशिखमथ तद्वेष्टितं त्रिकलाभिः ।
दद्याद् बहेः स्य चत्वार्य्यमरपतिपुराण्यं तरालस्थ मंत्रा-
नेतद्यंत्रं सुतं त्रैर्लिखितमपहरेच्छाकिनीभयः प्रभीतिं ॥२८॥

अर्थ—क्रौं, के बीचमें पथने नामको लिखकर उसके चारों ओर सोलह स्वर लिखे। उसके चारों ओर मंडलाकार स्वस्तिक बीज, लृ, ऊ, और द, को लिखकर उसके चारों ओर अग्नि मण्डलमें रं, बीज लिखे। और इसके चारों ओर ह्रीं, का मण्डल बनाकर उसकी चारों दिशाओंमें चार नगर बनाकर उनमें निम्न लिखित मंत्र लिखे ॥

पूरब दिशामें—

"ॐ वज्र धरे बंध२ वज्र पाशेन सर्व मदुष्ट विनायकानां ॐ हूं क्षं फट् योगिने देवदत्तं रक्ष२ स्वाहा ॥

दक्षिणमें—

"ॐ अमृत धरे धर धर विशुद्ध ॐ हूं फट् योगिनि देवदत्तं रक्ष२ स्वाहा ॥"

पश्चिममें—

"ॐ अमृत धरे डाकिनि गर्भ सुरक्षिणी आत्मबीज हूँ फट् योगिनि देवदत्तं रक्ष२ स्वाहा ॥"

उत्तरमें—

"ॐ रु रु चले हां ह्रां हूँ ह्रौं हः क्ष्मां क्ष्मीं क्ष्मूं क्ष्मैं क्ष्मः सर्व योगिनि देवदत्तं रक्ष२ स्वाहा ॥"

अर्थ—यह यंत्र विधिपूर्वक२ लिखा जानेसे शाकिनियोंसे भय नहीं होने देता ॥ २८ ॥

घट यंत्र

नाम सकारान्तर्गतमंबुधिटान्तावृतं बहिश्च कला ।
वलयितमनिलाद्यष्टमावेष्ट्य हंसः पदं वलयं ॥ २९ ॥

अर्थ—नामको स, आ, थ, और ठ से क्रमशः वेष्टित करके उसके चारों ओर सोलहों स्वर लिखे। उसकी आठों दिशाओंके वायु मंडलमें 'यं' बीज और उसके चारों ओरके मंडलमें 'हंसः' लिखे ॥ २९ ॥

टांतेन बहिर्वेष्ट्य क्रों प्रों त्रीं ठस्सु बीज वलयं च ।
भान्तेन सु सम्पुटे तं तद्वलयितममृत मंत्रेण ॥ ३० ॥

अर्थ—उसके बाहरके वलयमें "ठ, क्रों, प्रों, त्रीं, ठः" बीजोंको लिखकर उसके दोनों ओर म, बीज लिखे और फिर उसके चारों ओर निम्न लिखित मंत्र लिखे ॥ ३० ॥

ॐ पक्षि स्वः झ्वीं झ्वं हूः वं क्षः हः हंसः जः जः जः पक्षि स्वाहा । क्षः सः सः हर हुं हः । इत्यमृतमंत्रोऽयं ॥३१॥

अमृत मन्त्र

"ॐ पक्षि स्वः झ्वीं झ्वं हूः वं हंसः जः जः जः पक्षि क्षः सं सं सः हर हुं हः"

कमलदलसहित मुख बुध्नामृतकलशेन वेष्टितं बाह्ये ।
वं वन्दनदलेषु लिखेत् बुध्नदलांतर्गतं लं च ॥ ३२ ॥

अर्थ—फिर यंत्रको कमल दल मुख पर रक्खे हुए अमृत कलशमें वेष्टित करे। उस कमलके पत्रोंके बाहर 'वं' और अन्दर 'लं' लिखे।

कूटस्थनालमूले घट यंत्रमिदं विलिख्य भूर्ज्जदले ।
काश्मीररोचनागुरुहिममलयजयावकक्षीरैः ॥ ३३ ॥

अर्थ—उस कमलकी नालकी मूलमें 'क्ष' बीज लिखे। इस यन्त्रको भोजपत्र पर केशर, गौरोचन, अगर, हिम, मलयज और जौ के दूधसे लिखे ॥ ३३ ॥

सूत्रेण वहिर्वेष्ट्य सिक्थकपरिवेष्टितं ततः कृत्वा ।
मलयज कुसुमाद्यर्चितनवपूर्ण घटे क्षिपेन्मतिमान् ॥ ३४ ॥

अर्थ—इस यन्त्रको सिक्थक (मोम) में लपेट कर बाहर

तागेसे बांधकर फिर इसको चन्दन पुष्प आदिसे पूजे हुए नवीन घड़ेमें रख दे।

सर्व विघ्नहरण यंत्र

स्वरगर्भटान्तवेष्टितसम्पुटमध्यगतं नामखण्डशशिवेष्ट्यं ।
टान्तेन च भान्तेन च वेष्ट्यं हंसः पदं वलयं ॥ ३५ ॥

अर्थ—नामको क्रमसे ठः के सम्पुट अर्धचन्द्र ठ, और 'म' से वेष्टित करके उसके चारों ओर "हंसः" पदका वलय बनावे ॥ ३५ ॥

बहिरमृतमंत्रवलयं दद्यात्स्वरयुक्तषोडशदलाब्जं ।
मंत्रमिदं घटबुध्ने खटिकाहिम मलयजैर्बिलिखेत् ॥ ३६ ॥

अर्थ—उसके बाहर निम्नलिखित अमृत मंत्र और उसके बाहर षोडश दल कमलमें सोलहों स्वर लिखे। इस यंत्रको घड़ेके अंदर खड़िया हिम और चंदनसे लिखे ॥ ३६ ॥

"ॐ अमृते अमृतोद्भवे अमृत वर्षिणि अमृतं स्रावय २ सं २ क्लीं २ ब्लूं २ द्रां २ द्रीं २ द्रावय द्रावय स्वाहा ॥"

अमृत मन्त्रोऽयं

समाञ्जित भूमितले लोहमयत्रिपादिका परिनिधाय ।
कलशं तं तस्य मुखं कांस्यसवृतेन पिहितव्यं ॥ ३७ ॥

अर्थ—एक शुद्ध स्थानमें लोहेकी तिपाई पर इस कलशको कांसोके गोल ढकनेसे ढके ॥ ३७ ॥

कांचीद्वय युत मुशलं, जल धौतं सरस मलय जालिमं ।
सुरभितरकुसुमवेष्टं, तदूत्तकमस्तके स्थाप्यं ॥ ३८ ॥

अर्थ—उस ढकनेके ऊपर जलसे धोये हुए चंदनसे पुते हुए सुगंधित पुष्पोंसे वेष्टित मूसलको दो कांची (करधनी) सहित रक्खे ॥ ३८ ॥

मूशलोपरि प्रदीपं निधाय कांस्यमयभाजनं कलशतले ।
बहिरर्चयेत्समंनाद्गंधाक्षतकुसुमचरुकाद्यैः ॥ ३९ ॥

अर्थ—फिर कलशके नीचे कांसोके पात्रको और मूसलके ऊपर दीपक रखकर उसकी चंदन, अक्षत, पुष्प और नैवेद्य आदिसे पूजा करे ॥ ३९ ॥

क्रूरारिमारशाकिन्युरगनवग्रहपिशाचचोरभयं ।
अपहरति तत्क्षणादिह तत्सलिलद्रव्यसमासेत्कः ॥ ४० ॥

अर्थ—इस घडेके जलको छिड़कनेसे क्रूर, शत्रु, बीमारी, शाकिनी सर्व नवग्रह, पिशाच और चोरका भय उसी क्षण दूर हो जाता है ॥ ४० ॥

आकर्षण यंत्र

कूटाकाशमपिण्डमध्यनिलये नाम स्वकीयं पृथक् ।
दत्वा तत्परिवेष्टितं मपरसपिंडेन गुह्येन च ॥

बाह्येदुव्यष्ट दलाब्ज मष्ट कमले ब्वन्यच पिंडाष्टकं ।
पत्रेणान्तरितं लिखेत्स्वरयुगं शेषे च पत्राष्टके ॥ ४१ ॥

अर्थ—एक ऐसा अष्ट दल कमल बनावे । जिसके आठों दलोंके बीचमें स्थान छूटा हुआ हो । उसकी कर्णिकामें क्ष्म्ल्व्र्यूं ह्म्ल्व्र्यूं और मल्व्र्यूं के बीचमें अपना नाम लिखकर बाहरके पत्रोंके अंतरालोंमें पूर्वादिक्रमसे झम्ल्व्र्यूं यल्व्र्यूं रम्ल्व्र्यूं घल्व्र्यूं ङम्ल्व्र्यूं खल्व्र्यूं कम्ल्व्र्यूं और कम्ल्व्र्यूं लिखकर आठों दलोंमें पूर्वादि क्रमसे अ आ आदि दो २ स्वर लिखे ॥ ४१ ॥

स्वर युगलस्याधस्ता च्छब्दं पाशं तथां कुशं क्षीं च ।
दत्वा तेषां चाधः ह्रीं क्लीं ब्लूं सः द्रां द्रीं क्रमाद्दूयात् ॥४२॥

अर्थ—और उन स्वरोंके पश्चात् "ह्रां आं क्रों क्षीं ह्रीं क्लीं ब्लूं सः द्रां और द्रीं" बीजोंको क्रमसे लिखे ॥ ४२ ॥

बाणान्पश्चदलान्तरेषु विलिखे च्छब्दं कशं चांकुशं ।
क्षीं पत्राग्र गतं लिखे दथ नमः पर्य्यंत वामादिना ॥
पत्राग्र स्थित बीज बाण शिखनि शीघ्रं तमाकर्षय ।
तिष्ट द्विर्म्मम सत्य वादि वरदे मंत्रेण वेष्ट्यं वहिः ॥४३॥

अर्थ—इसके पश्चात् इस यंत्रको बाहर निम्नलिखित मंत्रसे वेष्टित करे ।

"ॐ ह्रां आं क्रों क्षीं ह्रीं क्लीं ब्लूं सः द्रां द्रीं ज्वालामालिनी देवि शीघ्रं देवदत्तमाकर्षय२ तिष्ठ २ मम सत्य वादि वरदे नमः" ॥४३ ॥

परम देव ग्रह यन्त्र

बाह्ये ह्रीं शिरसावृतं त्रिरथ तद्रे खाग्रयोन्या कृते ।
मध्ये क्लीं उपरिस्थ कोण युगले द्रां द्रींमधो ब्लूं लिखेत् ॥
बाह्ये दिक्षु विदिक्षु रान्त धरणी बीजान्विते द्रं पुरं ।
तद्बाह्ये लिख दिग्वि दिगातल कारांरान्वितं वारिधिः ॥४४॥

अर्थ—बाहर ह्रीं की तीन रेखाओंसे घेरकर मध्यमें क्लीं को लिखे । क्लीं के ऊपर दो कोनोंमें द्रां द्रीं और नीचे ब्लूं बीजको लिखे । उसके बाहर अष्टदल कमलका इंद्रपुर बनाकर उसमें ह्रीक्लीं बीजको लिखे । उसके आठों दिशाओंमें ब्लूं लिखे ॥ ४५ ॥

देव्या ज्वालामालिन्योक्तमिदं परम देव ग्रह यंत्रं ।
पुष्यार्के शुभतंत्रैर्व्बिलिख्य भूर्ज्जे पदे चापि ॥४६॥

अर्थ—देवी ज्वालामालिनीके कहे हुए इस परमदेव ग्रह यंत्रको पुष्य नक्षत्रमें भोजपत्र पर सुगन्धित और पवित्र वस्तुओंसे लिखे ॥ ४६ ॥

वश्य हवन ।

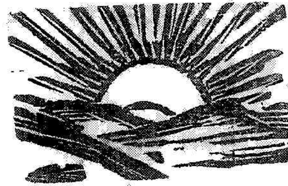
शिखि महेवी हृदयोऽपहृद्य मंत्रेण पूजितं सततं ।
जपितं हुतं च सकलं स्त्रीनृपरिपुभूतवश्यकरं ॥ ४६ ॥

अर्थ—ज्वालामालिनी देवीके हृदय और अपहृदय मंत्रोंके द्वारा पूजन जाप और हवन करनेसे स्त्री, राजा, शत्रु, और भूत वशमें हो जाते है ॥ ४६ ॥

मधुरत्रयेण गुग्गुलदशांगपंचांगधूपमिश्रेण ।
जुहुयात्सहस्रदशकं वशंकरोतीन्द्रमपि कथान्येषु ॥ ४७ ॥

अर्थ—घृत, दुग्ध, शर्करा, गूगल, दशांग और पंचांग धूपको मिलाकर उससे दश सहस्र हवन करनेसे इन्द्र भी वशमें हो जाता है । औरोंकी तो क्या कथा है ॥ ४७ ॥

इतिश्री हेलाचार्य प्रणीत अर्थमें श्रीमान् इन्द्रनन्दि मुनि विरचित ग्रन्थमें ज्वालामालिनी कल्पकी, प्राच्य विद्यावारिधि काव्य साहित्य तीर्थाचार्य श्री चन्द्रशेखर शास्त्री कृत भाषाटीकामें "वश्य यंत्र अधिकार" नामक षष्ठ परिच्छेद समाप्त हुआ ॥ ६ ॥



अथ सप्तम परिच्छेद

सर्व वशीकरण तिलक

शरपुँखी सहदेवी तुलसी कस्तूरिका च कर्पूरं ।
गौरोचना गजमदो मनः शिला दमन कश्चैव ॥१॥

अर्थ—शरपुंखी, सहदेवी, तुलसी, कस्तूरी, कपूर, गौरोचन, गजमद, मनःशिला, दमनक ॥ १ ॥

जातिशमीपुष्पयुगं हरिकान्ता चेति दिव्यतंत्रमिदं ।
समभागेन ग्रहीतं तिलकं कुरु भुवनवश्य करं ॥ २ ॥

अर्थ—जातिपुष्प, शमीपुष्प और हरिकांताको समभाग लेकर तिलक करनेसे सब लोक वशमें हो जाते हैं, यह दिव्य तंत्र है ॥ २ ॥

लोक वशीकरण तिलक और अंजन

एलालवंगमलयजतगरोत्पलकुष्ठकुंकुमोशीरः ।
गौरोचनादिकेशरमनशिला राजिकाकुटजं ॥ ३ ॥

अर्थ—इलायची, लौंग, चन्दन, तगर, कमल, कूट, कुंकुम, उशीर, गौरोचन नागकेशर, मनशिल, राजिका (लखों) कुटज ॥ ३ ॥

हिक्का तुलसी पद्मकमिति समभागं सुषारसलिलेन ।
पुष्ये चन्द्राभ्युदये सुकन्यकापेषयेत्सर्व्वं ॥ ४ ॥

अर्थ—हिक्का, तुलसी और पद्मकको समभाग लेकर पुष्य नक्षत्रमें चंद्रोदय होनेपर शीतल जलसे कन्यासे पिसवावे ॥४॥

तिलकं कुर्य्यादमुना विदधात्वथवांजनंतथान्योन्वं ।
तिलकस्त्रिभुवनतिलको गजमदकुनटिशमीपुष्पैः ॥ ५ ॥

अर्थ—गजमद, कुनटि, शमीपुष्प इसका तिलक तथा अंजन दोनों ही तीन लोकको जीतते हैं ॥ ५ ॥

सर्व वशीकरण तिलक

नरकन्दपत्रकन्याहिमपद्मोत्पलसुकेशरं कुष्टं ।
हरिकान्तामलयरुहं विकृतिस्तिलको जगद्वशकृत् ॥ ६ ॥

अर्थ—नरकन्द, पत्रकन्या, हिम, पद्म उत्पल, केशर, कुष्ट, हरिकान्ता, मलयरुह और विकृतिका तिलक सम्पूर्ण जगतको वशमें कर देता है ॥ ६ ॥

सर्व वशीकरण तिलक

कनकसहजातपुष्पैर्मलनजनृपलोचनामृगमदैश्च ।
सममागेन ग्रहीतैस्तिलकं त्रैलोक्यजनवशकृत् ॥ ७ ॥

अर्थ—कनक पुष्प, सहजात पुष्प, मलयज, नृपलोचन, और कस्तूरीको समान भाग लेकर तिलक करनेसे तीन लोक वशमें हो जाते हैं ॥ ७ ॥

मुख सुगंधि कर तिलक

पावकवर्ज्जितलक्ष्मी सहदेवी कृष्ण मल्लिका तुलसी ।
हरिकांता नरकंदेश्वरि शीतोशिरपिकाश्च ॥ ८ ॥

अर्थ—बिना अग्निकी लक्ष्मी सहदेवी कृष्णमल्लिका तुलसी हरि कांता नरकंद ईश्वरि शीत शिर पक्क ॥ ८ ॥

जातिशमीकुसुमयुगं दमनक गौरोचनापमार्गश्च ।
काश्मीरकार्य्यकमृगमद धतूरकमरुगपत्राणि ॥ ९ ॥

अर्थ—जाति पुष्प शमी पुष्प दमनक गौरोचन अपामार्ग काश्मीरक कार्यक मृगमद धतूरा अरुग पत्र ॥ ९ ॥

शर पुङ्ख कनैति च समभागग्रहीतदिव्य शुभ तंत्रैः ।
पुष्पार्के संयुक्तै मुख वासो भवे तिलकः ॥ १० ॥

अर्थ—शरपुङ्ख और कनैतिको समान भाग लेकर पुष्य नक्षत्रमें तिलक करनेसे मुखमें सुगंधि होती है ॥ १० ॥

सर्व वशीकरण अंजन

लोहरजः शरपुङ्खी सहदेवी मोहिनी मयूरशिखा ।
काश्मीरकुष्टमलयजकर्प्पूरशमीप्रसूनं च ॥ ११ ॥

अर्थ—बोहरज शरपुङ्खी सहदेवी मोहिनी मयूरशिखा काश्मीर कुष्ट मलयज कपूर शमी पुष्प ॥ ११ ॥

राजावर्तश्रामकदिवसकरावर्तमदजटामांसि ।
नृपपूलिकेशचंदन बालागिरिकर्णिका श्वेता ॥ १२ ॥

अर्थ—राजावर्त श्रामक दिवस कर आवर्तमद जटामांसी नृपपूलि केशर चंदन बालागिरि श्वेत कर्णिका ॥ १२ ॥

श्रोतोंजन नीलांजन सौवीराजंन रसांजनान्यपि च ।
पद्माहि सिंह केशर शार्दूल नखं च विकृतश्च ॥ १३ ॥

अर्थ—श्रोतांजन नीलांजन सौवीरांजन रसांजन पद्म अहिसिंह केशर शार्दूल नख विकृत ॥ १३ ॥

गौरोचनाऽश्व वंदन हरिकान्ता भृङ्ग तुल्य मित्येषां ।
चूर्ण मलक्तक पटले विकीर्य्य परिवेष्ट्य कुरुवर्ति ॥ १४ ॥

अर्थ—गौरोचन अश्व वंदन हरिकांता भृंग और तुल्यके चूर्णको अलक्तक पटल पर बखेर कर लपेट कर बत्ती बनावे ॥ १४ ॥

सूत्रेण पंचवर्णेन परिवृतां भावयेत् तरुक्षीरै ।
कारुक कुच भव पयसा पुनरपितां भावयेत्सम्यक् ॥ १५ ॥

अर्थ—फिर उस बत्तीको पांच रंगके तागोंसे लपेटकर वृक्षोंके दूधमें भावित करे और उस बत्तीको कारुकीके दूधमें भावित करे ॥ १५ ॥

वर्त्यातया प्रदीपं विबोध्य कपिलाघृतेन सिद्धस्थाने ।
धतूरभंग मर्दित नवखर्प्पकेंजनं द्रियते ॥ १६ ॥

अर्थ—उस बत्तीको सिद्धस्थानमें कपिला गऊके घीमें डालकर दीपक जलावे और फिर धतूरा और भांग मले हुए नए खर्पटक पर अंजन बनावे ॥ १६ ॥

ॐ हरिणी हरिणी स्वाहा मंत्रं पठतांजनं दार्य्यं ।
प्रपठं स्तमेव मंत्र करोतु नयनांजनं चापि ॥ १७ ॥

अर्थ—"ॐ हरिणी हरिणी स्वाहा ।"

यह मन्त्र पढता हुआ अंजन बनावे । और इसी मंत्रसे अंजनको आंखोंमें भी लगावे ॥ १७ ॥

सकल जगदेकरंजनमंजनमिदमातनोति सुभगस्त्वं ।
स्त्रीपुरुषराजवश्यं करोति नयने द्वयं भक्तं ॥ १८ ॥

अर्थ—इस संपूर्ण जगतके एक ही अंजनको आंखोंमें लगानेसे सुन्दरता बढती है । और स्त्री-पुरुष, तथा राजा तक वशमें हो जाता है ॥ १८ ॥

सुखदायक अंजन

श्रामकहिमनीलांजनबालालक्ष्मीसुमोहिनीभक्ताः ।
व्याघ्रनखी हरिकांतावरकंदे रोचनायुक्तं ॥ १९ ॥

अर्थ—श्रामक, हिम, नीलांजन, बाला लक्ष्मी, सुमोहिनी, भक्ताव्याघ्रनखी, हरिकांता, वर कन्दगौरोचन, और ॥ १९ ॥

केकिखेत्येतेषामलक्तपटले विलिख्य संचूर्णं ।
प्रागुक्त विधिसमेतं जनरंजनमनरंजनं तदिदं ॥ २० ॥

अर्थ—मयूरशिखाका चूर्ण, अलक्तक पटलपर बखेरकर पूर्वोक्त विधिसे अंजन बनावे। यह अंजन पुरुषोंको प्रसन्न करनेवाला है ॥ २० ॥

सर्व सुखदायक अंजन

हरिकान्ता केकिशिखा शरपुंखी पूतिकेशसहदेव्यः ।
हिममदराजावर्तं विकृतिः कन्यापुरुषकंदः ॥ २१ ॥

अर्थ—हरिकांता, मयूरशिखा, शरपुंखी, पूतिकेश, सहदेवी, हिम, मद, राजा, वर्त, विकृति, कन्या, पुरुष, कंद ॥ २१ ॥

पुरुषपद्मकेशरं पामोहिनीतिसमभागतः कृतं ।
चूर्णं प्राग्विधियुतमंजलमिदमखिलजगदूरंजनं तत्थं ॥ २२ ॥

अर्थ—पुरु पद्मकेशर और पामोहिनीको समभाग लेकर पूर्वोक्त क्रमसे अंजन बना कर सेवन करे तो समस्त जगतको आनंद हो ॥ २२ ॥

सुखदायक अंजन

शार्दूलनखिभ्रामकनीलांजनमोहिनसुकर्प्पूरं ।
गौरोचनायुतं विधिवदंजनं लोकरंजनकृत् ॥ २३ ॥

अर्थ—शार्दूल, नखि, भ्रामक, नीलांजन, मोहिनी, कपूर और गौरोचनका पूर्वोक्त विधिसे बनाया हुआ अंजन लोकोंको प्रसन्न करता है ॥ २३ ॥

सर्व वशीकरण अञ्जन

काश्मीरकुष्टमलयजकमलोत्पलकेशरं च सहदेवी ।
भ्रामकन्यानृपहरिकांताविकृतिर्म्मयूरशिखा ॥ २४ ॥

अर्थ—काश्मीर, कुष्ट, मलयज, कमल, उत्पल, केशर, सहदेवी, भ्राम, कन्या, नृप, हरिकांता, विकृति, मयूर-शिखा ॥ २४ ॥

कर्प्पूररोचनमोहिनीनीलांजनकुंकुमं च समभागं ।
पूर्वविधियुक्तमंजनमिदमखिलजगद्वशीकरणं ॥ २५ ॥

अर्थ—कपूर, गौरोचन, मोहिनी, नीलांजन और कुंकुमको समान भाग लेकर पूर्वोक्त विधिसे अंजन सेवन करनेसे सब जगत वशमें हो जाता है ॥ २५ ॥

वश्य प्रयोग (१)

एरंडकभक्तकरसेन दिवसत्रयेण पृथक्कृष्णतिलाः ।
भाव्याः शुनीपयोनिजमूत्रेणानंगजयबाणाः ॥ २६ ॥

अर्थ—काले तिलोंको, एरण्डक रस, भक्तक रस, कुत्तीका दूध, और अपने मूत्रमें तीन दिन तक भावित करें तो यह कामदेवकी विजयके बाण बन जावेंगे ॥ २६ ॥

वश्य नमक

रक्तकणवीरविकृतिद्विजदंडी वारुणी भुजंगाक्षी ।
लज्जरिकागोवंदिन्ये तद्वटिकाः प्रकृत्य बहुः ॥ २७ ॥

अर्थ—रक्त, कणबीर, विकृति, द्विजदंडो, वारुणी, भुजंगाक्षी, लज्जरिका, और गोवंदिनी, इनकी बहुत सी गोलियां बना कर ॥ २७ ॥

वटिकाभिः सह लवणं प्रक्षिप्य सुभाजने स्वमूत्रेण ।
परिभाव्य पचेत्पश्चाल्लवणमिदं भुवन वशकारी ॥ २८ ॥

अर्थ—इन गोलियोंके साथ एक बरतनमें नमक और अपना मूत्र डाल कर भावित करे तो यह नमक लोकको वशमें करनेवाला होता है ॥ २८ ॥

वश्य तेल (१)

पंचदश नव चतुः षड् भागात् विकृतिभक्त मोहनिका ।
लज्जरिकाणां ज्ञात्वाभावस्यायां शनैर्व्वारे ॥२९ ॥

अर्थ—शनिवारी अमावस्याके दिन, विकृति पांच भाग, नमक नव भाग, मोहनिका च्यार भाग और लज्जरिका छह भाग लेकर ॥ २९ ॥

संपिष्याजापयसा कल्काद्धमजापयोयुतं क्वथयेत् ।
अर्द्धावर्ते क्वाथे द्वितीयभागं क्षिपेतत्र ॥ ३० ॥

अर्थ—सबको बकरीके दूधमें पीसकर आधेका बकरीके दूधमें क्वाथ बनावे । क्वाथके आधा उठ आने पर दूसरा भाग भी उसीमें डाल दे ॥ ३० ॥

मधुनो द्विगुणं तैलं क्वाथसमं मिश्रितं पचेद्विधिना ।
वनितामदनाभ्यंगनतैलमिदं त्रिजगतीवश कृत् ॥ ३१ ॥

अर्थ—फिर उसमें बराबर मधु और दुगुना तेल डालकर सबको विधिपूर्वक पकाकर तेल बनावे । यह तेल स्त्रियोंके लगानेसे तीन लोकको वशमें कर लेता है ॥ ३२ ॥

वश्य तेल (२)

स्वँमेव मृताहि मुखे क्रमुक फलानां दलानि निक्षिप्य ।
तन्म्द्गोमयलिप्तं संस्थाप्यैकांतशुभदेशे ॥ ३२ ॥

अर्थ—स्वयं मरे हुए सर्पके मुखमें क्रमुक फलके टुकडे डाल कर उसको गोबरसे लिपे हुए एकांत उत्तम स्थानमें रखकर

तान्यादाय दिनै स्त्रिभिरथकनक सुफलघटे समास्थाप्य ।
गिरिकर्णिकेंद्रवारुण्यनलहलिन्यांगनाचूर्णैः ॥ ३३ ॥

अर्थ—उसको तीन दिनमें और फिर उसको गिरि, कर्णिका, इन्द्रवारुणी, और अनल हल्यंगनाके चूर्ण ॥३३॥

मंदारशुनिक्षीरैः स्वमूत्रसहितैर्विभावयेद्बहुशः
कुलिकोदये शनैश्चवारेकनकेंध्रनो स्यान्नौ ॥ ३४ ॥

अर्थ—मंदारके दूध, कुत्तीके दूध और अपने मूत्रमें, बहुत प्रकारसे भावना दे। फिर शनिश्चर वारको कुलिकाका उदय होनेपर धतूरेके ईंधनकी आगमें ॥ ३४ ॥

गुञ्जा सुगन्धिका कनकबीजचूर्णाहिकृतितिलतैलैः ।
रुद्ध पितानि भाजनविवरेणानंगशस्त्राणि ॥ ३५ ॥

अर्थ—गुञ्जा, सुगन्धिका और कनकबीज सर्प कृति तथा काले तिलोंके तेलके साथ पकाकर सेवन करे। यह तेल कामदेवका शस्त्र है ॥ ३५ ॥

वश्य तेल (३)

गोबंधिनींद्रवारुण्यवनीदरकर्णिका सुगंधिनिका ।
खरकर्णीत्येतेषां चूर्णैः सहपूगशकलानि ॥ ३६ ॥

अर्थ—गोबन्धिनी, इंद्रवारुणी, अवनी, दरकर्णिका, सुगंधिनिका और खरकर्णीके चूर्णके साथ पूग फलके टुकडोंको ॥ ३६ ॥

उन्मतकभांडगता न्यात्मसुमूत्रेण रक्त करवीर—
द्रवरासभीशुनीकुचपयसा भाव्यानि तानि पृथक् ॥ ३७ ॥

अर्थ—उन्मतकके बरतनमें रखकर अपने मूत्र, रक्त-करवीरका रस, गधी और कुत्तीके दूधसे पृथक् पृथक् भावित करे ॥ ३७ ॥

उन्मतबीजगुञ्जासुगन्धिकासर्पकृतितिलतैलैः ।
कनकेन्धनाग्नि सद्ध पितानि कुसुमास्त्र शस्त्राणि ॥ ३८ ॥

अर्थ—फिर उसको उन्मतकके बीज, गुंजा, सुगन्धिका सर्प्प, कृति और तिलके तेलोंके साथ कनकके ईंधनकी अग्निपर पकाकर तेल बनावे। यह तेल कामदेवका शस्त्र होता है ॥३८॥

वश्य प्रयोग (२)

कन्येद्रवारुणिनागसर्प्पपातालगरुडरुद्रजटा—
चूर्णयुतैः क्रमुकफलान्यात्ममलैर्विपुलकनकफले ॥ ३९ ॥

अर्थ—कन्या, इंद्रवारुणि, नागसर्प, पाताल, गरुड़ और रुद्रजटाके चूर्णके साथ क्रमुकफल अपने पांचों मल और बडे धतूरेके फलको ॥ ३९ ॥

संभाव्य शुनिदुग्धप्लुतानि सद्ध पितानि पुनः ।
जैत्रास्त्राणि मनोजस्येत्युक्तं गांगपति गुरुणा ॥ ४० ॥

अर्थ—कुत्तीके दुग्धमें भावित करके धूपमें सुखानेसे यह कामदेवके विजयी शस्त्र बन जाते हैं। ऐसा गांग पति गुरुने कहा है ॥ ४० ॥

कामबाण चूर्ण

रुद्रजटा सितगुञ्जा लज्जरिकाः संनिधाय सर्प्पास्ये ।
दिवसैस्त्रिभिरादाय प्रचूर्णक्षिपयेत्स्वमलैः ॥ ४१ ॥

अर्थ—रुद्रजटा, श्वेत गुञ्जा और लज्जरिकाको सर्पके मुखमें रखकर तीन दिनके पश्चात् निकालकर सबका चूर्ण करे। और अपने पांचों मलोंमें डाल दे ॥ ४१ ॥

गोमय लिप्ते हरि निकंदे परिभाव्य पाचयेद्विधिना।
चूर्णमिदं सकलजगद्वश्यकरं कामबाणाख्यं ॥ ४२ ॥

अर्थ—फिर इसके गोबरसे लिपे हुए हरिनिकंदमें भावित करके विधिपूर्वक पकावे। यह समस्त जगतको वशमें करनेवाला कामबाण नामका चूर्ण है ॥ ४२ ॥

दशरारिक चूर्ण

कनकेन्द्रवारुणीखर कर्णिकात्रिसंध्यानां।
विस्फोटनलज्जरिकाद्विजदंडीनां वहिर्व्वटिका ॥ ४३ ॥

अर्थ—कनक, इंद्रवारुणी, खर कर्णिका और त्रिसंध्या, बिस्फोटन, लज्जरिका और द्विजदंडीके साथ सबकी गोली बनाकर ॥ ४३ ॥

भांडे निधाय तस्मिन् पृथक्२ मरीचलवणसर्षप शुंठी।
धान्याजमोदचूर्णकहरितकक्रमुकपिप्पल्यः ॥ ४४ ॥

अर्थ—बरतनमें रक्खे और उसीमें पृथक्२ मिरच, नमक, सरसों, सोंठ, धान्य, अजमोदका चूर्ण हरीतक, क्रमुक और पीपलको ॥ ४४ ॥

भाव्याः स्वमलैः सम्यक् तद्धूपै र्द्धूपिताः पृथक् पृथगिति च।
दशरारि कामि धानाः सकलजगद्वश्यकारिण्यः ॥ ४५ ॥

अर्थ—अपने मलोंमें भावित कर२ के सुखावे। यह सब जगतको वशमें करनेवाले दशरारिक नामवाले चूर्ण हैं ॥४५॥

योनिशोधक लेप

द्विरदमदकुष्टमृगमदकर्पूरोन्मतपिप्पली कामं।
रुद्रजटामधुसैंधवनागरमुस्तासुयष्टीकं ॥ ४६ ॥

अर्थ—गजमद, कूठ, मृगजद, कपूर, उन्मत्त, पिप्पलि, काम, रुद्र, जटा, मधु, सैंधव, नागरमोथायष्टीक ॥४६॥

सूरणटंकणपिप्पलिशरपुंखीमातुलिंगचणकोव।
महकाम्लसमेतं भगनिर्ज्जरकारणं लिप्तं ॥ ४७ ॥

अर्थ—सूरण, टंकण, पिप्पलि, शरपुंखी, मातुलिंगी, चने, सहकार और आंवला लेपे जानेसे योनिका संशोधन करते हैं ॥ ४७ ॥

कर्पूरैलामाक्षिकलज्जरिकायुक्तपिप्पलीकामं।
भगनिर्ज्जरं प्रकुर्य्यात् कुरुंटिकाक्षीरसंयुक्तं ॥ ४८ ॥

अर्थ—कपूर, इलायची, माक्षिक, लज्जरिका, पिप्पलि और कामको कुत्तीके दूधमें पीसकर लेप करनेसे योनि संशोधन होता है ॥ ४८ ॥

सन्तानदायक औषधि

शिपफणीफलचव्यचित्रकमहीकूश्मांडिनिःपर्णिकाः।

ब्राह्मीदर्दुरपूर्विका मितवराहाकाखल्यन्विता ॥
पाठा लक्ष्मणिकेत्यमून्यसितगोदुग्धेन पिष्टापिबेत् ।
वंध्या पुष्पवती स्वभर्तृ सहिता पुत्रं लभेत ध्रुवं ॥ ४९ ॥

अर्थ—शिप, फणी, फल, चव्य, चित्रक, मही, कूष्मांडी, निःपर्णी, ब्राह्मी, दर्दुर, श्वेतवराही, खली, पाठा और लक्ष्मणिकाको गऊके दूधमें पीसकर सेवन करनेसे वंध्या स्त्री भी ऋतुकालमें पति संगम करनेसे निश्चयपूर्वक पुत्रको पाती है ॥४९॥

पीत्वामृतौषधमिदं दिवसचतुष्टयमुभावपि स्थित्वा ।
निर्व्वात्यैकोदेशे भुंजेयातां मधुरमन्नं ॥ ५० ॥

अर्थ—इस अमृत औषधिका पान करके दम्पति चारदिन तक ठहरकर उत्तम स्थानमें भोग करे मधुर अन्नको खावे ॥५०

स्नात्वा चतुर्थदिवसे स्वभर्तृ संकल्पमाप्यनिशिवनतानि ।
पुत्री पुत्रं लभते वामेतरपार्श्व संसुप्ता ॥ ५१ ॥

अर्थ—चौथे दिन स्नान करके स्त्रियां अपने पतिके संकल्पसे उसकी दाहिनी ओर सोकर पुत्र और बाई ओर सोकर पुत्रियोंको पाती है ॥ ५१ ॥

इतिश्री हेलाचार्य प्रणीत अर्थमें श्रीमत् इन्द्रनन्दि मुनि विरचित ग्रन्थमें ज्वालामालिनी कल्पकी, प्राच्य विद्यावारिधि काव्य साहित्य तीर्थाचार्य श्री चन्द्रशेखर शास्त्री कृत भाषाटीकामें "वश्य अधिकार" नामक सप्तम परिच्छेद समाप्त हुआ ॥ ७ ॥

अथ अष्टम परिच्छेदः

वसुधारा स्नानके स्थानकी विधि

ईशानाशाभिमुखाबुपातसंयुक्तरम्यशुचिदेशो
सम्माज्जिते कपिलागोमयदधिदुग्धघृतमूत्रैः॥ १ ॥

अर्थ—एक पवित्र स्थानमें ईशान कोणकी ओर मुख करके पहले जल डाल कर फिर उस स्थानको कपिला गौके गोबर, दही, दूध, घी, और मूत्रसे, साफ करे ॥ १ ॥

नामकला पुर्णेन्दुसमेतं मध्ये विलिख्य तस्य वहिः ।
कोकनद कुमुद कुवलयरक्तोत्पलजलजकुसुम युतं ॥ २ ॥

अर्थ—इसके पश्चात् उस स्थानके मध्यमें नामको "आं ई ऊं एं" बीजोंके बीचमें लिखे। और उसके चारों ओर कुमुद, लाल कमल, नील कमल, और श्वेत कमल, अपने पुष्पों सहित ॥ २ ॥

चक्राहुबलबलाकासारसकल हंस मिथुनसंयुक्तं ।
कर्कटककूर्म्म दर्दुर ऊषमकरतरतरंगयुतं ॥ ३ ॥

अर्थ—चकवा, बगुला, बलाका, सारस, सुन्दर हंसोंके

युगल, केकडा, कछवा, मैंडक, मछली, और नाकेको चंचल जलकी तरंगोंसे युक्त ॥ ३ ॥

चूर्णेन पंच वर्णेन परिविलिखेद्विपुलपद्मिनिखंडं ।
तद्बहिरपि चतुरस्रमंडलमालिख्य विधिनैव ॥ ४ ॥

अर्थ—और बडे२ कमल समूहोंसे युक्त पंचवर्ण चूर्णसे बनावे । और उसके चारो ओर विधिपूर्वक एक चौकोर मंडल बना देवे ॥ ४ ॥

कोणेषु सत्यमलयजकुंकुमकुसुमार्चितान् धवल वर्णान् ।
सहिरण्यान् पूर्ण घटान् विधाय वरबीजपूरमुखान् ॥ ५॥

अर्थ—उस मंडलके कोनोंमें चंदन कुंकुम और पुष्पोंसे पूजा किये हुए श्वेतवर्णवाले, स्वर्णयुक्त और सुंदर बीजोंसे मुख तक भरे हुए घडोंको रक्खे ॥ ५ ॥

तदुपरि विधाय सत्पुरुषमंडपं तस्य मध्य देशेतु ।
चक्री कृत रंध्रनवकं बिलंबमानं घटं बद्धा ॥ ६ ॥

अर्थ—इतना कार्य करनेके पश्चात्, उस मंडलके ऊपर सुंदर मडप तान देवे । और उसके बीचमें एक ऐसा घडा लटका दे । जिसमें गोलाकार बराबर२ नौ छिद्र हों ॥ ६ ॥

मृत्युञ्जयाख्ययंत्रं नामसमेतं विलिख्यं भूर्ज्जदले ।
सिक्थकवेष्टितमेतत् सहिरण्यं निक्षिपेत्कुम्भे ॥ ७ ॥

अर्थ—फिर भोजपत्रपर मृत्युंजय नामके यंत्रको नाम सहित लिखकर और मोमसे लपेटकर सुवर्ण सहित उस घडेमें डाल दे ॥ ७ ॥

मृत्सदेवीसौम्याक्षीरतरुत्वक्सुवर्णहरिकान्ता—
पक्कोशीरहरिद्रादूर्वाकाश्मीरकुसुमानि ॥ ८ ॥

अर्थ—फिर मिट्टी, सहदेवी, दूधवाले वृक्षोंकी छाल, सुवर्णलता, हरिकांता, पका हुआ उशीर, हलदी, दूब और केशरके फूल ॥ ८ ॥

मलयरुहागुरुचंदनमित्येतान्यंबुना समापिष्य ।
पंच दशभिश्च मंत्रैः प्रत्येकं मंत्रयेत्क्रमशः ॥ ९ ॥

अर्थ—लाल चंदन और सफेदचंदनको जलसे पीसकर पन्द्रह मंत्रोंमेंसे प्रत्येकसे पृथक् पृथक् अभिमंत्रित करे ॥ ९ ॥

एकैकोनोद्वर्तनकेन समुद्वर्त्यो देवदत्तं तं ।
मृन्यपतितैर्म्मलैस्तैः पुतलिकां कारयेदेकां ॥ १० ॥

अर्थ—और एक एक करके प्रत्येकसे उस साधक देवदत्तका उबटन करके उबटन करनेमें जो मल नीचे गिरे उसे पृथ्वीपर न गिरने देकर उससे एक मूर्ति बनावे ॥ १० ॥

प्रवराष्टदिशापालकपुतलिकाः स्वस्वर्णसंयुक्ताः ।
लक्षण युक्त दिव्या श्चकारयेत्सिद्ध मृतिकया ॥ ११ ॥

अर्थ—फिर सिद्ध मिट्टीसे अपने अपने वर्ण और सब लक्षणोंसे युक्त आगे लोकपालोंकी दिव्य मूर्तियां बनवावे ॥११॥

सिद्ध मिट्टीकी परिभाषा

राजद्वारचतुःपथकुलालकरुत्तमकूलसरिदुभय तटः
द्विरदरदवृषभशृङ्गक्षेत्रगता मृत्तिका सिद्धा ॥ १२ ॥

अर्थ—राजद्वार, चौराहे, कुम्हारके हाथ, उत्तम नदीके दोनों किनारे, हाथी दांत, और बैलके सींगके ऊपरकी मिट्टी सिद्ध मिट्टी कहलाती हैं ॥ १२ ॥

असितं पीतं लोहितमसितं हरितं शशिप्रभं कृष्णं ।
बहुवर्णं सितवर्णं चरुकं गंधादिभियुक्तं ॥ १३ ॥

अर्थ—फिर काली, पीली, लाल, काली, हरी, स्वेत काली, बहुत रंगवाली और सफेद चंदन, गंध आदिसे युक्त ॥ १३ ॥

नव पटलिका सुदत्वा प्रथमायां स्थापयेन्मलप्रतिमां ।
शेषास्विन्द्रादीनां प्रतिमान् संस्थापयेत्क्रमशः ॥ १४ ॥

अर्थ—नव पटडियोंको लेकर पहिली पर उस मलवाली प्रतिमाको और शेष आठों पर क्रमशः इन्द्र आदि आठों लोकपालोंकी प्रतिमाओंको स्थापित करे ॥ १४ ॥

वहिरप्येके देशे मंडलमन्यद्विलिख्य च प्राग्वत् ।
तत्रोष्णवारिणा स्नापयेत्पुरा देवदत्तं तं ॥ १५ ॥

अर्थ—बाहर भी पूर्वके समान एक और मंडल बनाकर वहां पहले उस साधक देवदत्तको उष्ण जलसे स्नान करावे ॥ १५ ॥

साधारण पूजन

विनयं ज्वालामालिन्युपेतमथ हूं युगं ततः सर्व्वान् ।
अपमृत्यून् द्विघातं सं वं मं देवदत्त मथ रक्ष युगं ॥ १६ ॥
शांतिं कुरु कुरु सद्गुरूणां देवते निज बलिं च गृह्ण युगं ।
स्वाहा मंत्रं प्रपठन् निवर्द्धयेत् समल चरुकेण ॥ १६ ॥

अर्थ—निम्नलिखित मंत्रको पढ़ता हुआ मलवाली मूर्तिको चरु देवे ॥ १७ ॥

मंत्र—ॐ ज्वालामालिनि हुं२ सर्वाय मृत्यून् घातय२ सं वं मं देवदत्तं रक्ष२ शांतिं कुरु कुरु सद्गुरुण देवते निज बलिं गृह्ण२ स्वाहा ॥ १७ ॥

एवं निवर्धयित्वा चरुकं मंत्रेण निक्षिपेन्नद्यां ।
दिग्पालक चरु कैरपि निवर्द्ध येत्स्वेन मंत्रेण ॥ १८ ॥

अर्थ—इस प्रकार उस चरुको देकर नदीमें विसर्जित

कर दे और आगे दिक्पालोंके चरुको भी इस मंत्रसे देकर ॥ १८ ॥

ॐ कूट पिण्ड शिखिनी सं वं मं हं च देवदत्तस्य ।
शांतिं तुष्टिं पुष्टिं कुरु युगं रक्ष युगलं च ॥ १९ ॥
दिग्देवते बलिं गृहण मंत्र सराव होमान्तं ।
एवं निवर्ष्य विधिना बलिं क्षिपेत्स्वदिति जल मध्ये ॥२०॥

ॐ क्ष्म्ल्व्यूं ज्वालामालिनि सं वं मं हं देवदत्तस्य शांतिं तुष्टिं पुष्टिं कुरु२ रक्ष२ दिग्देवते बलिं गृह्ण२ स्वाहा ।

इत्यष्ट दिग्पालक विवर्धन

अर्थ—विधिपूर्वक सुन्दर जलमें विसर्जित कर दे ।

मंत्र—ॐ क्ष्म्ल्व्यूं ज्वालामालिनि सं वं मं हं देवदत्तस्य शांतिं तुष्टिं पुष्टिं कुरु कुरु रक्ष२ दिग्देवते बलिं गृह्ण२ स्वाहा ।"

दिव्याम्बरभूषाकुसुममलजालं कृतोतमशरीरः ।
उत्थाप्य तत्प्रदेशाद्व्रजतु ग्रहपादुकोरूढः ॥ २१ ॥

अर्थ—फिर दिव्य वस्त्र आभूषण पुष्प और सुगन्धि आदिसे अपने शरीर पर शोभित करके वहांसे उठकर खडाऊं पर चढ कर चले ॥ २१ ॥

कुसुमाक्षतांजलिपुटोललाटहस्तः प्रदक्षिणीकृत्यः ।
तन्मंडलं ततोसावभिमुखमुपविश्य तन्मध्ये ॥ २२ ॥

अर्थ—पुष्प और अक्षत दोनों हाथोंमें लेकर मस्तक पर हाथ रक्खे हुए उस मंडलकी प्रदक्षिणा देकर सामने मुख करके उसके मध्यमें बैठ जावे ॥ २२ ॥

वसुधारा मन्त्र

"ॐ वसुधारदेवते ज्वालामालिनि जल२ विजल विजल सुजल२ हेम२ शीतल२ देवि कोटिभानु चन्द्रांशु कुरु२ हूँ त्रिभुवनसंक्षोभिणि क्षा क्षीं क्षूं क्षौं क्षः देवि त्वं आत्मपरिवार देवता सहिते देवदत्तस्य तुष्टिं पुष्टिं शीघ्र वर देहि२ सद्धर्मश्री बलायुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्धि कुरु२ सर्वोपद्रवमहाभयं नाशय२ सर्वापमृत्यून् घातय२ शीघ्रं रक्ष२ नव ग्रहा एकादशस्था सर्वे फलदा भवन्तु हां ह्रीं हूं ह्रौं ह्रः स्वाहा सर्व वश्यं कुरु२ क्रौं क्रौं वं मं हं सं तं स्वाहा ।"

वसुधार मंत्रमिदं प्रपठंस्तीर्थोदकं च गोमूत्रं ।
गव्यानि पंचतक्रं दधि त्रिमधुरं तथा क्षीरं ॥ २३ ॥

अर्थ—इस वसुधारा मंत्रको पढता हुआ तीर्थोंके जल, गोमूत्र, और गऊके पांचों गव्य तक्र, दही, त्रिमधुर, दूध ॥ २३॥

वर पंच पल्लवोदकमपि च प्रक्षिप्य लंबमान घटे ।
संस्थाप्याधस्थं तं पश्चाद्गंधोदकं दद्यात् ॥ २४ ॥

अर्थ—पांचों उत्तम पत्ते और जलको उस लटकते हुए घडेमें डालकर फिर उसको नीचे रखकर गंधोदक देवे ॥ २४ ॥

पिष्टममयानि नवग्रहरूपाणि स्वर्णवर्णयुक्तानि ।
तान्यात्मवचनचरुकस्योपरिसंस्थापयेत् प्राग्वत् ॥ २५ ॥

अर्थ—फिर पिसे हुए द्रव्यके स्वर्ण वर्णवाले, नवग्रहोंके रूप बनवा कर उनको पूर्ववत् अपने चरुके साथ स्थापित करे ॥२५॥

रक्तौ भास्करभौमौपीतौ बुधसुरगुरू शशांक शुक्रौ ।
श्वेतौ च शनिश्चरराहुकेतवः कृष्णवर्णाः स्युः ॥ २६ ॥

अर्थ—सूर्य और मंगलको रक्त वर्ण, बुध और गुरुको पीत वर्ण, शुक्र और चंद्रमाको श्वेत वर्ण तथा शनैश्चर राहु और केतुको कृष्ण वर्णका बनावे ॥ २६ ॥

सुरभितरमलयजाक्षतकुसुमोज्वलदीपधूपसंयुक्तैः ।
चरुकैर्निवेदयेतैः क्रमेण तं त्वेतमंत्रेण ॥ २७ ॥

अर्थ—फिर अत्यन्त सुगन्धित, चंदन, अक्षत, पुष्प, उज्वल दीपक, धूप और चरुको, लेकर उनको निम्न लिखित मंत्रसे दे ॥ २७ ॥

नवग्रह मन्त्र

ॐ ज्वालामालिनि सर्वाभरणभूषिते ग्लौं२ हक्लौं२ क्लीं२ ल२ ल२ सर्वमृत्यून् हन२ त्रासय त्रासय हूं हूं क्षूं२ हंसः फट् घे२ सर्व रोगान् दह२ हन२ शीघ्रं देवदत्तं रक्ष२ नवग्रह देवते बलिं गृह्ण२ घे२ स्वाहा ।

एवं निवर्धयित्वा तं चरुकं निक्षिपेन्नदी मध्ये ।
स्नानोद्भवमंडल कं वरेणसहितेन मंत्रेण ॥ २८ ॥

अर्थ—इस प्रकार स्नानके पश्चात् उस मंडलमें इस मंत्रसे चरु, देकर नदीमें विसर्जित करदे ॥ २८ ॥

स्नानान्तरमथ वस्त्रालंकाररत्नकलशाद्यं ।
नान्यस्य तत्प्रदेयं स्वयं ग्रहीतव्यमात्मयोग्यमिति ॥ २९ ॥

अर्थ—स्नानके पश्चात् वस्त्र अलंकार और रत्न कलश आदिको दूसरेके लिये न देवे क्योंकि वह अपने योग्य होते हैं ॥

परिदातुमलंकर्तुं दत्वांबर भूषिताम्बरभूषणादि तस्यान्यत् ।
पश्चादन्यत्र शुचौ देशे संमार्जिते चतुष्कयुते ॥ ३० ॥

अर्थ—किन्तु अपने दूसरे वस्त्र आभूषण आदि दे सकता है। इसके पश्चात् चौक पूरे हुए अन्य पवित्र स्थानमें ॥ ३० ॥

बध्नातु ततः पश्चात् ग्रीवायामस्य देवदत्तस्य ।
रोगाय मृत्युहर्तिं विद्यां मृत्युञ्जयां सद्यः ॥ ३१ ॥

अर्थ—इस देवदत्तकी गर्दनमें रोग अपमृत्युको नष्ट करनेवाले मृत्युञ्जय नामके यंत्रको बांधे ॥ ३१ ॥

धौतसितवस्त्रपिहिते पट्टकपीते निवेश्य विधिनैव ।
अतिसुरभिपुष्पवृष्टि स्नानेन स्नापयेन्मंत्री ॥ ३२ ॥

मुख्य स्नान

अर्थ—मंत्री इस प्रकार उसको श्वेत वस्त्र ढके हुए पीले पटडे पर विधिपूर्वक बैठाकर अत्यंत सुगंधित जलसे निम्नलिखित मंत्रसे स्नान करावे ॥ ३२ ॥

"ॐ क्रों ज्वालामालिनि ह्रीं क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं ह्रां आं क्रों क्षीं देवदत्तं सुगंध पुष्पस्नानेन सर्वशांतिं कुरु२ वषट् पुष्पवृष्टि स्नानं मंत्रः"

एवं विधिना स्नातस्य देवदत्तस्य शिखिमती देवी ।
श्री सौरभ्यारोग्यं तुष्टिं पुष्टिं ददाति सदा ॥ ३३ ॥

अर्थ—ज्वालामालिनि देवि इस प्रकार स्नान किये हुये देवदत्तको सौभाग्य आरोग्य तुष्टि और पुष्टि निरंतर देती है ॥ ३३ ॥

आयुर्व्वर्द्धयति ग्रहपीडामपहरति हंति शत्रुभय ।
नाशयति विघ्नकोटिं प्रशमयति च बहुविधान् रोगान् ॥३४॥

अर्थ—आयुको बढाती है । ग्रह पीडाको दूर करती है । शत्रु भयको नाश करती है । और बहुत प्रकारके रोगोंको शांत करती है ॥ ३४ ॥

एत ज्वालामालिनोक्तं सर्व्वापमृत्युनाशकं ।
वसुधाराख्यं स्नानं करोतु शांतिविधिनियुक्तं ॥ ३५ ॥

अर्थ—ज्वालामालिनीके द्वारा कहे हुये सब आप मृत्युके नाश करनेवाले इस वसुधारा नामके स्नानको शांति विधि पूर्वक करना चाहिये ॥ ३५ ॥

इतिश्री हेलाचार्य प्रणीत अर्थमें श्रीमद् इन्द्रनन्दि योगींद्र विरचित ग्रन्थमें ज्वालामालिनी कल्पकी, प्राच्य विद्यावारिधि काव्य साहित्य तीर्थाचार्य श्री चन्द्रशेखर शास्त्री कृत भाषाटीकामें "वसुधारा स्नानविधि" नामक अष्टम परिच्छेद समाप्त हुआ ॥ ८ ॥

अथ नवम परिच्छेदः

नीराजन विधि

परिमर्दितेन पिष्टेन कारयेत्सर्व्ववर्णयुक्तानि ।
प्रवराष्टमातृकानां मुखान्यलंकारसहितानि ॥१॥

अर्थ—मलकर पिसी हुई सिद्ध मिट्टीसे सर्व वर्ण युक्त पूर्वोक्त मुख्य अष्ट मात्रका देवियोंके मुख अलंकार सहित बनावे ॥ १ ॥

बहुभक्ष्यचरुकमलयजकुसुमाक्षतदीपधूपसहितेन ।
एकैकेन मुखेन तु निवर्तयेत्प्रतिदिनं विधिना ॥ २ ॥

अर्थ—और बहुत प्रकारके भक्ष्य, चरु, चंदन, पुष्प, अक्षत, दीप, और धूपसे प्रतिदिन एक एकके मुखका भोग लगावे ॥ २ ॥

कूट ऊकांत भांत ठकारांबुधि सांत पिंड संभूतैः ।
मंत्रै निंवधयेन्मातृके बलं गृहण गृहण हो मांते ॥ ३ ॥

अर्थ—ॐ, क्ष्म्ल्व्यूं, झ्म्ल्व्यूं, स्म्ल्व्यूं, मल्व्यूं, ठम्ल्व्यूं, क्म्ल्व्यूं, और ह्म्ल्व्यूं, बीजोंमें उस उस मातृकाका पूर्वोक्त क्रमसे नाम लगाकर ॥

"मातृके बलिं गृह्ण२ स्वाहा" मंत्रसे बलि देवे ।

एकैकमपि निवर्धनमनेकदोषापहारि भवति नृणां ।
एवं निवर्धयित्वा जलमध्ये तं बलिं दद्यात् ॥ ४ ॥

अर्थ—एक२ को ही बलि देनेसे पुरुषोंके अनेक दोष नष्ट हो जाते हैं । इस प्रकार करके उस बलिको जलमें विसर्जित करदे ॥ ४ ॥

काली च महाकाली मालिनी लान्या तथैव कंकाली ।
सत्कालराक्षसीवरजंघे श्री ज्वालिनी तैब ॥ ५ ॥

अर्थ—काली, महाकाली, मालिनी, कंकाली, कालराक्षसी, अग्निरूप वरजंघा ॥ ५ ॥

विकरालीवैतालीत्येतासां दिव्यदेवतानां तु ।
कृत्वा मुखानि लक्षणयुतानि सत्सिद्धमृत्तिकया ॥ ६ ॥

अर्थ—विकराली और बैताली, इन दिव्य देवियोंके लक्षण सहित मुख सिद्ध मिट्टीसे बनावे ॥ ६ ॥

तीक्ष्णनखदंष्ट्राग्राणि वृतनयनानि लुलितानि जिह्वानि ।
कुसुमाक्षतमलयजदीपधूपबहुभक्ष्ययुक्तानि ॥ ७ ॥

अर्थ—इसके तीक्ष्ण नख, और डाट, गोलनेत्र, और जीभ निकली हुई हो । इनका भक्ष पुष्प, अक्षत, चंदन, दीप और धूप होता है ॥ ७ ॥

एकैकेनमुखेनप्रतिदिवसं कारयेन्निवर्धनकं ।
प्रारभ्य चतुर्दश्यां नवदिवसं सप्तमी यावत् ॥ ८ ॥

अर्थ—इनमेंसे प्रत्येकके मुखमें प्रतिदिन बलि दे । यह प्रयोग चतुर्दशीसे प्रारम्भ करके नव दिन अर्थात् सप्तमी तक किया जाता है ॥ ८ ॥

वृद्धिकरमशुभनाशं कृत्वा नीराजनं शुचिमंत्री ।
शत२ मुखरिपु मंत्रेण तु जलमध्ये तं बलिं दद्यात् ॥९॥

अर्थ—पवित्र मंत्री वृद्धिके करनेवाले, अशुभका नाश करनेवाले, नीराजनको करके शत रिपुमंत्रसे जलमें बलि देवे ।

वीरेश्वराश वटुकः पंचशिराविघ्ननयकश्च महा ।
कालश्चेत्येषां मुखानि पिष्टेन कार्य्याणि ॥ १० ॥

अर्थ—विरेश्वराश, वटुक, पंचशिरा, विघ्न नायक और महा कालके मुखोंको भी पिसी हुई सिद्ध मिट्टीसे बनावे ।

उग्राणि लोचन त्रय युतानि मूर्द्धस्थ दीप्तदीपानि ।
बहुभक्षकुसुममलयजसुगन्धधूपश्चसहितानि ॥ ११ ॥

अर्थ—इनके उग्र तीन नेत्र, शिरपर चमकते हुए दीपक और बहुत प्रकारका भक्ष, पुष्प, चन्दन और सुगन्धित धूप हो ॥ ११ ॥

तेनैकेन निवर्द्धयेन्मुखेन्द्रवैरिमंत्रेण ।
ग्रहरोगमारिपीडामपहरति बलिर्ज्जलेक्षिप्तः ॥ १२ ॥

अर्थ—इन्द्र वैरि मंत्रसे इनको बलि देकर जलमें फेंकनेसे ग्रह रोग और मारि पीडा दूर होती है ॥ १२ ॥

दधिघृतमिश्रेण सुमर्दितेन शाल्योदनेन तत्कृत्वा ।
दुर्द्दनरदनदंष्ट्रं सुसिद्ध वागीश्वरी रूपं ॥ १३ ॥

अर्थ—फिर पिसी हुई सिद्ध मिट्टीमें दही, घी और चांवलोंके जलको मिलाकर उससे तीक्ष्ण नख, दन्त और डाढ- वाले सिद्ध वागेश्वरीका रूप बनावे ॥ १३ ॥

प्रज्वलितसिद्धवर्तिमूर्द्धनि दीपं समुजल्वं दद्यात् ।
जिह्वाष्टकमक्षणामप्यष्टशतं कारयेच्चान्यत् ॥ १४ ॥

अर्थ—इनके सन्मुख सिद्धबत्ती जली हुई हो, मस्तक पर उज्वल दीपक रक्खा हुआ हो । आठ जीभ और एकसौ आठ आंखें हों ॥ १४ ॥

कुश रोश द्योतनगन्धकुसुमबलिभक्षधूपसहितेन ।
रूपेण तेन कुर्यान्निवधनं निशि समस्तदोषहरं ॥ १५ ॥

अर्थ—इनको सुगंधित चंदन धूप और पुष्पोंकी बलि देने से रात्रिमें समस्त दोष दूर हो जाते हैं ॥ १५ ॥

तीक्ष्णोन्नतसितदंष्ट्रं विलुलितजिव्हं त्रिनेत्रभयनाशं ।
पिष्टेन कारयेद्विकरालं वागीश्वरी रूपं ॥ १६ ॥

अर्थ—फिर तीक्ष्ण उन्नत और श्वेत दाढोंवाली, निकली हुई, जिह्वावाली, तीन नेत्रवाली, वागेश्वरी देवीके विकराल रूपको पिसी हुई सिद्ध मिट्टीसे बनावे ॥ १६ ॥

रूपेण तेन बहुभक्षचरुवरदीपधूपसहितेन ।
कुर्यान्निवधनं सकलदोष हृतं खडगमंत्रेण ॥ १७ ॥

अर्थ—इनको, चरु, दीप, और धूपकी बलि खड्ग मंत्र देनेसे संपूर्ण दोष नष्ट हो जाते हैं ॥ १७ ॥

योगनिका दिव्यमहायोगिनिका सिद्धमंत्रेण योगिनी चैव ।
अन्युजनेश्वरीप्रेतावासिन्यथ शाकिनी देवी ॥ १८ ॥

अर्थ—दिव्य योगिनी, महायोगिनी, योगिनी । अन्यु- जनेश्वरी । प्रेतावासिनी, और शाकिनी देवी ॥ १८ ॥

रूपाण्यासां पिष्टेन कारयेद्भक्षसहितबलिचरुकाणि ।
जिह्वाष्टकमष्टशतं नेत्राणां कारयेत्प्रागवत् ॥ १९ ॥

अर्थ—के रूपोंको पिसी हुई सिद्ध मिट्टीसे आठ जिह्वा और एकसौ आठ नेत्रवाला बनावे ॥ १९ ॥

घंटा पतिकिका माल्यदीप युक्त मंत्रेण ।
रूपेणै कैकेन प्रतिदिवसं कुरु निवधकं ॥ २० ॥

अर्थ—इनके सन्मुख घंटा पताका और माला आदि रखकर सिद्ध मंत्रसे चरुकी बलि प्रतिदिन पृथक्२ देनी चाहिये ॥२०॥

पुरुषातीतायुर्व्वर्ष संख्यया तंदुलांजलिनादाय ।
तत्पिष्टेन कुर्य्याद्ग्रहरूपं लक्षणसमेतं ॥ २१ ॥

अर्थ—पुरुषकी बीती हुई आयुके वर्षोंकी संख्या प्रमाण चांवलोंकी अंजुलिको लेकर उसको पीस कर लक्षण सहित ग्रहोंका रूप बनावे ॥ २१ ॥

तद्रूपं बहुबलिभक्षगंध सन्माल्यदीपधूपयुतं ।
अग्ने निधाय तस्या तुरस्य नव पटलिका तस्थं ॥ २२ ॥

अर्थ—उनको अपने सन्मुख पटड़ों पर स्थापित करके गंध उत्तम माला दीप और धूपकी बहुत प्रकारकी बलि देवे ॥ २२ ॥

खड्गै रावण विद्या मुच्चैरुचारयन्मंत्री ।
पुष्पैर्निवर्घ्य पूर्वं स तंदुलै गृहमुखं हन्यात् ॥ २३ ॥

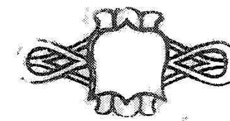
अर्थ—फिर मंत्री खड्गै रावण विद्याका जोरसे उच्चारण करता हुआ पहले पुष्पोंकी बलि देकर फिर उनके मुख पर चांवल मारे ॥ २३ ॥

रूपेण तेन पश्चान्निवर्घ्य बिधिना जलस्यमध्ये तु ।
दद्याद्बलि निशायां समस्त दोषान् हरत्याशु ॥ २४ ॥

अर्थ—फिर उस रूपको रात्रिमें विधिपूर्वक बलि देकर जलमें स्थापित कर दे तो समस्त दोष शीघ्र ही नष्ट हो जाते हैं ॥ २४ ॥

यह ज्वालामालिनीदेवीकी कही हुई इस प्रकारकी "नीराजनविधि" ग्रह, भूत, शाकिनी और अपमृत्युके भयको शीघ्र ही दूर करती है ॥ २५ ॥

इतिश्री हेलाचार्य प्रणीत अर्थमें श्रीमद् इन्द्रनन्दि योगींद्र विरचित
ग्रन्थमें ज्वालामालिनी कल्पकी, प्राच्य विद्यावारिधि काव्य
साहित्य तीर्थाचार्य श्री चन्द्रशेखर शास्त्री कृत
भाषाटीकामें "नीराजन विधि" नामक
नवम परिच्छेद समाप्त हुआ ॥ ९ ॥



अथ दशम परिच्छेदः

शिष्यको विद्या देनेकी विधि

ईशानदिगभिमुखजलनिपातयुतशून्यजिनगृहो देशे
अपतित गोमय गोमूत्र विहित सम्मार्जिते रम्ये ॥ १

अर्थ—जिन मंदिरके एक स्थानमें ईशान कोणकी ओर द्वार बनाकर पहिले जल छिड़ककर फिर उसे पृथ्वी पर न गिरे हुए गोबर और गोमूत्रसे लीप पोतकर शुद्ध करे ॥ १ ॥

चूर्णेन पंचवर्णेन समानहस्तायतं चतुष्कोणं ।
रेखा त्रयेण विधिना सत्याख्यं मंडलं विलिखेत् ॥ २ ॥

अर्थ—फिर वहां पर पंच वर्ण चूर्णसे समान हाथ लंबे चौड़े चौकोर निम्नलिखित सत्य नामवाले मंडलको तीन रेखाओंसे विधिपूर्वक बनावे ॥ २ ॥

तस्यवहिर्वारिनदीभ्रांतावर्तोर्मिजलचराकीर्णं ।
पश्चिमदिशिजल मध्ये रूपं वर्णस्यलिखितव्यं ॥ ३ ॥

अर्थ—उसके बाहर पश्चिम दिशामें समुद्र बनावे, जिसमें नदियोंका जल आ रहा हो लहरें उठ रही हों और जलचर भरे हुए हों फिर उस समुद्रमें वरुणका रूप बनावे ॥ ३ ॥

मलयजकुसुमाक्षतचर्च्चितान् सितान् बीजपूरपिहित मुखान् ।
पूर्णघटान् सहिरण्यान् तत्कोणचतुष्टये दद्यात् ॥ ४ ॥

अर्थ—उस मण्डलके चारों कोनोंमें चंदन, पुष्प और अक्षतसे पूजे हुए बीजोंसे मुखतक भरे हुए हिरण्य सहित चार श्वेत घडोंको रखे ॥ ४ ॥

सौवर्णं रौप्यं वा पदयुगलं कारयेन्नुतेर्हेव्याः
अभिषिच्य पंचगव्यैः दधिघृतसत्क्षीरगंधजलैः ॥ ५ ॥

अर्थ—फिर वहांपर देवीके चरण सुनहरे या रौप्य वर्णके बनाकर उनका पंच गव्य दही घी दूध गंध और जलसे अभिषेक करे ॥ ५ ॥

मंडल दक्षिणदेशे पदयुगलं पूजितं निवाय तयो ।
नैऋत्यादिषु दिक्षत्रस्यान्वय चरणद्वयानि लिखेत् ॥ ६ ॥

अर्थ—इन चरणोंको मंडलकी दक्षिण दिशामें बनाकर पूजा करे और दूसरे चरण नैऋत्य आदि दिशाओंमें बनावे ॥ ६ ॥

अर्हत्पदकमल युगं मंडलमध्ये विलिख्य चूर्णेन ।
कोणेषु सिद्धसूर्य्यपदेशकमुनिपदयुगानि लिखेत् ॥ ७ ॥

अर्थ—मंडलके मध्यमें चूर्णसे भगवान अर्हन देवके चरण बनावे। और कोनोंमें सिद्ध सूरि उपदेशक और मुनियोंके चरण बनावे ॥ ७ ॥

गंधाक्षतकुसुमसुदीपधूपचरुकैः समर्चयेत्सर्व्वं ।
तदुपरिविचित्रपुष्पैर्मनोहरं मंडपं रचयेत् ॥ ८ ॥

अर्थ—इन सबकी गंध, अक्षत, पुष्प, दीप, धूप, और चरुसे पूजा करके इनके ऊपर अनेक प्रकारके पुष्पोंसे शोभित मंडप बनावे ॥ ८ ॥

सत्यं मंडलमेवं विलिख्य पश्चात्सगंध कुसुमाद्यैः ।
कंकणकर्णाभरणांबरादिकरर्चयेगुरोश्चरणौ ॥ ९ ॥

अर्थ—इस प्रकार इस सत्य मंडलको बनाकर पीछे सुगन्धित पुष्प आदि कर्णभूषण और वस्त्र आदि देकर गुरुके चरण बनावे ॥ ९ ॥

मणिकनक रजत सूत्रैः पुस्तकमावेष्ट्य दिव्यवस्त्रैश्च ।
शिखिदेवी पदयुगले निधाय गंधादिभिश्च जयेत् ॥ १० ॥

अर्थ—सोने और चांदीके तारोंमें परोई हुई मणियोंकी माला और दिव्य वस्त्रसे पुस्तकको लपेटकर उसे ज्वालामालिनी देवीके चरणोंमें रखकर उसका गंध आदिसे पूजन करे ॥१०॥

कुसुमाक्षतांजलि पुटं ललाटहस्तं कृतप्रदक्षिणकं ।
मंडलमध्यनिवेष्टं घटोदकैः स्नापयेच्छिष्यं ॥ ११ ॥

अर्थ—फिर पुष्प और अक्षतोंको हाथोंमें लेकर हाथ

जोड़े हुए प्रदक्षिणा करनेवाले मंडलके बीचमें बैठे हुए शिष्यको घडोंके जलसे स्नान करावे ॥ ११ ॥

स्नानाम्बरभूषादिकमुचितं नान्यस्य तद्गुरो रुचितं ।
परिधातुमस्य पश्चादन्यद्वस्त्रादिकं देयं ॥ १२ ॥

अर्थ—उस समयके वस्त्र आभूषण आदि गुरुको ही देने उचित हैं । शिष्यको दूसरे वस्त्र आदि देवे ॥ १२ ॥

देवीमुनिगुरुचरणप्रणतायसुधर्मभक्तियुक्ताय ।
धृतपुस्तकाय तस्मै विद्यादिना देया ॥ १३ ॥

अर्थ—फिर देवी और मुनिके चरणोंमें झुके हुए धर्म तथा भक्ति युक्त धारण किये हुए उस शिष्यको साध्य आदि युक्त विद्या दी जावे ॥ १३ ॥

पर समयाय न देया त्वया प्रदेया स्वसमय भक्ताय ।
गुरुविनययुताय सदार्द्र चेतसे धार्मिकनराय ॥ १४ ॥

अर्थ—तुम यह विद्या अन्य मतावलम्बीको न देना । किंतु अपने शास्त्रके भक्त, गुरुकी विनय करने वाले, दयालु, और धार्मिक पुरुषको ही देना ॥ १४ ॥

ऋषिगोस्त्रीहत्यादिषु यत्तत्पापं भविष्यति तवापि ।
यदि दास्यसि परसमयायेत्युक्तवातः प्रदातव्या ॥ १५ ॥

अर्थ—यदि तुम यह विद्या अन्यमतावलम्बीको दोगे तो, तुमको, ऋषि, गऊ, और स्त्रीकी हत्याका पाप लगेगा यह कह कर उसको विद्या दे देवे ॥ १५ ॥

क्षितिजलपवनहुताशनयजमानाकाश सोम सूर्यादीन् ।
ग्रहतारागण सहितान् साक्षीकृत्वा स्फुटं दद्यात् ॥ १६ ॥

अर्थ—उस समय पृथ्वी, जल, पवन, अग्नि, यजमान, आकाश, चन्द्र, सूर्य, ग्रह, और तारागण आदिकी साक्षीसे उसको विद्या दे देवे ॥ १६ ॥

त्वां मां शिखनदेवीं, हेलाचार्य्यं च लोकपालांश्च ।
साक्षीकृत्य मयेयं, तुभ्यं दत्तेति खलु वाच्यं ॥ १७ ॥

अर्थ—तुमको मैंने ज्वालामालिनीदेवी, हेलाचार्य और लोकपालोंकी साक्षीसे यह विद्या दी उस समय यह कहे ॥ १७ ॥

साधनविधिना देया विधिना शिष्येण साधनाधिना देया ।
विधिनाग्रहीतविद्या शिष्योऽसौ सिद्ध विद्यः स्यात् ॥ १८ ॥

अर्थ—यह विद्या शिष्यको साधन और उसकी विधि सहित देनी चाहिये। यह शिष्य विधिपूर्वक विद्या पाकर तुरंत ही विद्याको सिद्ध कर लेगा ॥ १८ ॥

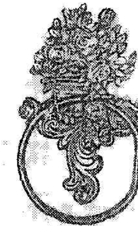
कविकरणसमयमुख्ये जिनपति मार्गोचितक्रियापूर्णः ।
व्रतसमितिगुप्तिगुप्तो हेलाचार्योमुनिर्जयति ॥ १९ ॥

अर्थ—कवियोंको बनानेके शास्त्रमें चतुर, जिनेंद्र भगवान्के मार्गके योग्य क्रियाओंसे पूर्ण व्रत, समिति, और गुप्तियोंसे रक्षित, श्री हेलाचार्य मुनि जयवंत हों ॥ १९ ॥

एवं क्षितिजलधिशशांकांबरताराकुलाचलास्तावत् ।
हेलाचार्योक्तार्थे स्थेयाच्छ्रीज्वालिनीकल्पे ॥ २० ॥

अर्थ—इस प्रकार श्री ज्वालामालिनी कल्पमें श्री हेलाचार्यके कहे हुए अर्थको, पृथ्वी, जल, चंद्रमा, आकाश, तारे और कुलाचल, पर्वत स्थिर रक्खें ॥ २० ॥

इतिश्री हेलाचार्य प्रणीत अर्थमें श्रीमद् इन्द्रनन्दि मुनि विरचित
ग्रन्थमें ज्वालामालिनी कल्पकी, प्राच्य विद्या वारिधि काव्य
साहित्य तीर्थाचार्य श्री चन्द्रशेखर शास्त्री कृत
भाषाटीकामें "साधन विधि" नामक
दशम परिच्छेद समाप्त हुआ ॥१०॥



श्री चंद्रनाथाय नमः । श्री अनंतनाथाय नमः ।

" मंत्रि लक्षण " प्रथम परिच्छेदे पद ग्रंथाः पंच त्रिंशत् (३५)

ग्रहाधिकार द्वितीय परिच्छेदे पद ग्रंथाः द्वा विंशति (२२)

द्वादश बीजाक्षर विधान तृतीय परिच्छेदे पदग्रंथाःत्रयशीति (८३)

मंडलाधिकार चतुर्थ परिच्छेदे पद ग्रंथाश्चतुश्चत्वारिंशत् (४४)

भूताकंपन तैल विधि पंचम परिच्छेदे पद ग्रंथाः विंशति (२०)

वश्य यंत्राधिकार षष्ट परिच्छेदे पद ग्रंथाः सप्त चत्वारिंशत् (४७)

वश्य तंत्राधिकार सप्तम परिच्छेदे पद ग्रंथाः एक पंचाशत् (५१)

बसुधारा स्नान विधि अष्टम परिच्छेदे पद ग्रंथाः पंच त्रिंशत् (३५)

नीराजन विधि नवम परिच्छेदे पद ग्रंथाः पंच विंशति (२५)

साधन विधि दशम परिच्छेदे पद ग्रंथाः विंशति (२०)

उभेय ग्रंथ ४५१ मंत्र गदवरददावे श्रीः श्रीः

अर्थः—"मन्त्रिलक्षण"वाले प्रथम परिच्छेदमें श्लोकसंख्या (३५)

"ग्रहाधिकार" नामवाले द्वितीय परिच्छेदमें श्लोक संख्या (२२)

"द्वादश बीजाक्षर विधान" नामवाले तृतीय परिच्छेदमें श्लोक संख्या (६९)

'मंडलाधिकार" नामवाले चतुर्थ परिच्छेदमें श्लोक संख्या (४४)

'भूताकंपन तैल विधि' नाम पंचम परिच्छेदमें श्लोकसंख्या (२०)

'वश्य तन्त्राधिकार' नाम षष्टम परिच्छेदमें श्लोक संख्या (४७)

"वश्य तंत्राधिकार" नाम सप्तम परिच्छेदमें श्लोक संख्या (५१)

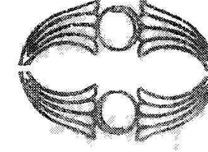
"वसुधारा स्नान विधि" नाम अष्टम परिच्छेदमें श्लोकसंख्या (३५)

"नीराजनविधि" नाम नवम परिच्छेदमें श्लोकसंख्या (२५)

"साधन विधि" नाम दशम परिच्छेदमें श्लोकसंख्या (२०)

सम्पूर्ण ग्रंथकी श्लोक संख्या तीनसौ अडसठ (३६८)

इतिश्री ज्वालामालिनी कल्पकी काव्य साहित्य तीर्थाचार्य प्राच्य विद्यावारिधि श्री चंद्रशेखर शास्त्री कृत भाषाटीका समाप्त हुई ।



अथ ज्वालामालिनी विधि

चतुर्दशी पुष्पार्के उपवासं कृत्वा जाप १२००० त्रिसंध्यं अर्ध रात्रौ एवं ४८००० एकासनेनेदं मंत्राक्षरेण "क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः क्ष्म्ल्व्यूं र र र र र र र शत्रून्मर्दय२ नाशं कुरु२ स्वाहा" ॥

अनेन होमं कुर्यात्

ह्रीं क्लीं ब्लूं छ्रां छ्रीं छ्रूं छ्रौं छ्रः छ्म्ल्व्यूं ख ख ख खादय२ शत्रून् भस्मं कुरु२ स्वाहा" ।

जाप्य होम विधि

चतुर्भुज मूर्ति महिषवाहन पीतवर्णं अंशुक रक्तवर्णं उज्वल भूषणं महिष श्यामवर्णं तस्याभरण पीतवर्णं खड्ग त्रिशूल पाश शरासना युधं उत्तमासनेन स्थापितं तस्याग्रे जाप्यं रक्त पीत्त उज्वल फलानि मध्य रात्रे लवंग जाप्यं ॥

होम विधि

षोडशांगुल कुंडं चतुरस्रं अवगाहित मध्ये होमं पंचामृत दशांगधूपैः खीर खांड नालिकेरैः शरीर संस्कार विस्नान पीत जलेन ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः हल्व्यूं अनेन सप्त वाराभि मंत्र शिखा बंधनं रक्षां वरं धायंते पीतासने पद्मासनेन उपविशेत् "प्रां प्रीं प्रूं

प्रौं प्रः पल्व्यूं आत्मरक्षां कुरु२ ह्रौं फट्स्वाहा:" इदं मंत्र २१ वार पढे, वपु रक्षाकारयेत् जाप्य होमा कर्षणं कृत्वा स्तोत्रं पठनीयं वस्त्राभरणे नाह्वाननं दत्वा एक पूर्वा १४ द्विपूर्वा १४–१५ त्रिपर्वा त्रयोदशी चतुर्दशी अमावस्या इति ज्ञात्वा स्थापनीयं कृष्ण पक्षे झ्रां झ्रीं झ्रूं झ्रौं झ्रः झ्रल्व्यूं अंजसंचकार अमुक भूषणानि संग्रह्यतां संग्रह्यतां२ सन्निधिकरणं प्रातरुत्थाय करणीयं आं क्रों ह्रीं इदं मंत्रेण विसर्जनं कुर्यात् कुमारी भोजन दानं पश्चात् भोजनं क्रियते सर्वकार्य सिद्धिः ॥

॥ इति संधि सूत्रं प्रथम संधि समाप्तम् ॥

अर्थ—चतुर्दशी पुष्य नक्षत्रके सूर्यमें उपवास करके निम्न लिखित मंत्रका एक आसनसे प्रातःकाल मध्याह्न काल सायंकाल और अर्द्धरात्रि बारह२ हजार जप करे । अर्थात् च्यारों समयमें ४८०००पूर्ण करे ॥ मंत्र यह है—

"ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः क्ष्म्ल्व्यूं र र र र र र र शत्रून्मर्दय२ मर्दय नाशं कुरु२ स्वाहा ।"

जाप और होम की विधि

पहिले देवीकी एक मूर्ति बनावे, मूर्तिमें निम्न लिखित विशेषताएं रक्खे—च्यार भुजाएं, महिषकी सवारी, शरीरका रंग पीला, देवीके वस्त्रोंका रंग लाल, उज्वल आभूषण, महिषका रंग श्याम, उसके आभूषणोंका रंग पीला, देवीके चारों हाथोंमें क्रमसे

खड्ग, त्रिशूल, पाश और धनुषबाण हो ॥ ऐसी देवीकी मूर्तिको उत्तम आसनसे स्थापित करके उसके आगे जप करे। जपके समय लाल, पीले और उज्वल पुष्प तथा अक्षत और काले, नीले, पीले तथा उज्जल फल और लौंग रक्खे ॥

होम विधि

सोलह अंगुल लम्बे चौडे तथा गहरे हवनकुण्डमें पंचामृत दशांग धूप, खीर, खांड और नारियलसे हवन करे।

पहिले पीले जलसे स्नान कर ले। फिरः—

"ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः हल्व्यूं"

इस मंत्रसे सात वार अभिमंत्रित करके शिखा बंधन करे, लाल कपड़े पहिने, पीले आसन पर पद्मासनसे बैठे। फिरः—

'प्रां प्रीं प्रूं प्रौं प्रः फ्ल्व्यूं आत्मरक्षां कुरु२ ह्रौं फट् स्वाहाः।'

इस मंत्रको इकीस वार पढकर शरीर रक्षा करे और इसके पश्चात् जाप होम आकर्षण करके स्तोत्र पढे।

वस्त्र और आभरणसे आह्वानन करके पहिले तेरह फिर चार और फिर पन्द्रह वार करके त्रयोदशी चतुर्दशी और अमावस्या जानकर कृष्णपक्षमें स्थापना करे। मंत्र यह हैः—

झां झीं झूं झौं झः झ्ल्व्यूं अंज संचकार अंचुक भूषणानि संगृह्यतां२ सन्निधिकरणं।"

यह प्रातःकाल उठकर करे। और— 'आं क्रों ह्रीं'

इस मंत्रसे विसर्जन करे। फिर कुमारिको जिमाकर स्वयं भोजन करे।

(इति संधिसूत्र प्रथम संधि समाप्ता)

अथ मन्त्राकर्षण द्वितीय विधि

म्ल्व्यूं ह्रिं ह्रीं ह्रीं क्लीं ब्लूं देवान् नागान् यक्षान् गंधर्वान् ब्रह्मान् भूतान् व्यंतरान् सर्व दुष्टग्रहान् आकर्षय२ ॥

अनेन मंत्रेण आवेशनं स्थापनं।

"ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः ज्वल२ र र र र र र र र"
अनेन मंत्रेण होम कुण्डमध्ये मरिचाणि निक्षिपेत्।

"देवग्रहान् नागग्रहान् यक्षग्रहान् गन्धर्वग्रहान् ब्रह्मग्रहान् राक्षसग्रहान् भूतग्रहान् व्यंतरग्रहान् सर्वदुष्टग्रहान् शतकोटिदेवतान् सहस्रकोटि पिशाचान् दह२ पच२ छिन्द२ भिन्द२ ह्रां हुं हुं फट् स्वाहा"

अनेन मंत्रेण देवीशक्त्या देववशीकरणं शाकिनी डाकिनी शत्रुग्रहान् अनेन मंत्रेण होमं कुर्यात् सहस्र १२००० शत्रुनाशं। अनेन मंत्रेण गजेन्द्रनरेन्द्रसर्वशत्रुवशीकरणं पूर्वमंत्र स्मरणीयम्।

इति ज्वालामालिनी स्तोत्र साधनं मंत्रविधि सम्पूर्णम्।

अथ भाषा अर्थ

"ॐम्ल्व्यूं ह्रिं ह्रीं ह्रीं क्लीं ब्लूं देवान् नागान् गन्धर्वान् ब्रह्मान् भूतान् व्यन्तरान् सर्वदुष्टग्रहान् आकर्षय२ ॥"

इस मंत्रके द्वारा बुलावे और स्थापना करे । फिरः—

"ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः ज्वल ज्वल र र र र र र र र र"

इस मंत्रके द्वारा होमकुण्डमें मिरचोंको डाले । फिर—

"देवग्रहान् नागग्रहान् यक्षग्रहान् गन्धर्वग्रहान् ब्रह्मग्रहान् राक्षसग्रहान् सर्वदुष्टग्रहान् शतकोटिदेवतान् सहस्रकोटिपिशाचान् दह२ पच२ छिन्द२ भिन्द२ ह्रां हुँ हुँ फट् स्वाहा ।"

इस मन्त्रके द्वारा देव शक्तिसे देवताओं, शाकिनी, डाकिनी, और शत्रुग्रहोंको वशमें करो इस मंत्रसे १२००० होम करे तो शत्रु नाश हो, इस मंत्रसे गजेन्द्र, नरेन्द्र और सब शत्रुओंको वशमें करे । और पूर्व मंत्रको स्मरण रक्खे ।

इति ज्वालामालिनी स्तोत्र साधन मंत्र विधि सम्पूर्णम् ।

अथ ज्वालामालिनी* स्तोत्र प्रारंभ

श्रीमद्दैत्योरुगेंद्रामर मुकुटतटालीटपादार विन्दे ।
माद्यन्मातंगकुम्भस्थलदलनपटश्रीमृगेंद्राधि रूढे ॥

*यहांसे तमाम पाठ विद्यानुवाद अध्याय ४ श्लोक १६४ से आगेसे लिखा गया है ।

ज्वालामाला कराले शशिकरधवले पद्म पत्रायताक्षी ।
ज्वालामालिन्य भीष्टे प्रहसितवदने रक्षमां देवि नित्यम् ॥१॥

ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं महेचेक्षण रुचिररुचिरां गांग दै देव मं हं ।
वं सं तं बीज मंत्रैकृ त सकल जगतक्षेम रक्षाभि धाने ॥

क्षां क्षीं क्षूं क्षें समस्त क्षितितहमहिते ज्वालिनी रौद्र मूर्ते ।
क्षैं क्षों क्षौं क्ष क्षः बीजै रहितदशदिशाबंधने रक्ष देवि ॥२॥

हूंकारारावघोरभ्रकुटिपुटहटद्रक्तलोलेक्षणाग्नि ।
ज्वाला विक्षेपलक्षक्षपित निजविपक्षोद्याक्षूण रक्षे ॥

भास्वत्कांचीकलापे मणिमुकुटहटज्ज्योतिषां चक्रवालै—
श्चंचंडाशु मन्मंडल सगर जया पादिके रक्ष देवि ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं कारोपयुक्त र र र र र र रां ज्वालिनी संप्रयुक्तम् ।
ह्रीं क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं सरेफं विपद मल कला पंच कोन्द्भालि हूं हूं
धूं धूं धूमांधकारिण्यखिलमिहजगद्देवि देह्याशु वश्यम् ।
यो मे मन्त्रं स्मरंतं प्रतिभयमथने ज्वालिनी मम वत्वम् ॥४॥

ॐ ह्रीं क्रों सर्व वश्यं कुरु२ सर संक्रामणो तिष्ठ ।
हूं हूं हूं रक्ष रक्ष प्रबल बल महा भैरवा राति भीते ॥

द्रां द्रीं द्रूं द्रावय२ हन फट् फट् वषट् बंध बंध ।
स्वाहा मंत्र पठंतं त्रिजग दभिनुते देवि मां रक्ष रक्ष ॥५॥

हं झं ह्म्व्रीं क्ष्व्रीं स हंसः कुवलयवकुले भूरसंभूत धात्र ।
ह्म्व्रीं झूं ह्रूं पक्षि हं हं हर हर हर हुँ पक्षिपः पक्षि कोपः ॥

वं झं हंसः परं क्षं सर सर सर स्तूं सत्सुधा वीज मंत्रै—
ज्वालामालिनि स्थावर विष संहारिणि रक्ष रक्ष ॥ ६ ॥
एह्येहि हौंकारनादै र्ज्वल दनल शिखा कल्प दीर्घोर्ध्व केशैं-
र्झामास्यैती व्रलैत्रै विषम विष धरालं कृतैस्तीक्ष्ण दंष्ट्रैः ।
भूतैः प्रेतैः पिशाचैः स्फुट घटित रुषा बाधितो ग्रोप सर्ग्गम् ।
धूलीकृत्य स्वधाम्ना घन कुच युगले देवि मां रक्ष रक्ष ॥७॥

क्रौं क्रैं क्रौं शाकिनीनां समुपगत मत ध्वंसिनी नीर जास्ये ।
ग्लौं क्ष्मं वं दिव्य जिह्वा गति मति कुपित स्तंभिनी दिव्य देहे
फट् फट् सर्व रोग ग्रह मरण भयोच्चाटिनी घोर रूपे ।
आं क्रां क्षीं मंत्र रूपे मद गज गमने देवि मां पालयत्वं ॥८॥

इत्थं मंत्राक्षरोत्थं स्तवन मनुपमवह्नि देव्याः प्रतीतम् ।
विद्वेषोच्चाटन स्तंभन जन वशकृत् पाप रोगापनोदि ॥
प्रोत्सर्प्य ज्जंगम स्थावर विषम विष ध्वंसनं स्वायुवा रोग्यै ।
श्वैर्यादीनि नित्यं स्मरति पठति यः सोऽश्नुतेऽभीष्टसिद्धिम् ॥९

अर्थ—इस प्रकार यह मंत्राक्षरोंसे निकाला हुआ ज्वालामालिनीदेवीका अनुपम स्तोत्र है। जो इसको नित्य स्मरण करता है और पढ़ता है वह अपनी इच्छित सिद्धिको पाता है। और इसी स्तोत्रसे विद्वेषण उच्चाटन स्तंभन और वशीकरण होते हैं। यह पाप तथा स्थावर और जंगम विषको नष्ट करता है। तथा आयु आरोग्य और ऐश्वर्य आदिको देता है ॥९॥

इतिश्री ज्वालामालिनी स्तोत्र समाप्तम् ।

अथ ज्वालामालिनीकी अन्य साधन विधि

पाश त्रिशूल ऊष चक्र धनुः शरा च,
सन्मातुलिंग फल दान कराष्ट हस्ता ।
मातङ्ग तुङ्ग महिषाधिप वाहयाना,
सा पातु मां शिवमति शरदिंदु वर्णा ॥ १ ॥

अर्थ—पाश, त्रिशूल, मछली, चक्र, धनुष, बाण, मातुलिंग (बिजौरा फल) और वरदान सहित आठ हाथोंवाली हाथीके समान ऊंचे भैंसे पर चढ़कर चलनेवाली। और शरत् कालके चंद्रमाके समान वर्णवाली ज्वालामालिनी मेरी रक्षा करे ॥ १ ॥

द्रां द्रीं सुबीज सुख होम पदांत मंत्रै,
राज्वालिनी प्रमुख गै मम पाद नाभि ।
वक्षस्थलाननशिरांसि च रक्ष रक्ष,
त्वं देव्यमीभि रति पंच विधैः सु मंत्रैः ॥२॥

अर्थ—उत्तम बीज द्रां द्रीं की आदिमें सुख (ॐ) लगाकर ज्वालामालिनी मम पादौ नाभि वक्षः स्थलं आननं शीर्षं रक्ष२ पदोंके पश्चात् अंतमें होम (स्वाहा) पद सहित पांच सुन्दर मंत्रोंसे शरीरकी रक्षा करे ॥ २ ॥

मंत्रोद्धार

ॐ द्रां द्रीं ज्वालामालिनि मम पादौ रक्ष२ स्वाहा ।

ॐ द्रां द्रीं ज्वालामालिनि मम नाभिं रक्ष२ स्वाहा।
ॐ द्रां द्रीं ज्वालामालिनि मम वक्षः स्थलं रक्ष२ स्वाहा।
ॐ द्रां द्रीं ज्वालामालिनि मम आननं रक्ष२ स्वाहा।
ॐ द्रां द्रीं ज्वालामालिनि मम शीर्षं रक्ष२ स्वाहा।

कूटाक्ष पिंड प्रथ शून्य भपिंड युग्मं,
तद्वेष्टितं भपर पिंड कलत्रि देहैः।
बाह्येष्ट पत्र कमलं परघादि पिंडान्।
विन्यस्य तेषु परतो नव तत्व वेष्ट्यं ॥ ३ ॥

अर्थ—कूटाक्षर पिंड शून्य पिंड दो। भ, य, र, पिंडसे वेष्टित करके त्रिकल त्रिदेह (स्वरों)से वेष्टित करे। उसके पश्चात् आठ पत्रोंमें य र घ आदिके पिंडोंको लिखकर बाहर नव तत्वोंसे वेष्टित करे ॥ ३ ॥

हा मां पुरोद्विप वशीकरणं तदग्रे,
क्ष्मीं बीजकं शिखि मती वरपंच बाणैः।
मंत्रा नमोन्त विनयादिक लक्ष जाप्यं,
होमेन देवि वरदा जपतां नराणां ॥ ४ ॥

मूल मंत्र—

अर्थ—हां आं द्विप वशीकरणं (क्रों) क्ष्मीं के पश्चात् देवीका नाम और पांच बाण सहित मन्त्रके आदिके विनय (ॐ) और अंतमें नमः लगाकर एक लक्ष जप करके होम करनेसे देवी जप करनेवाले पुरुषोंको वर देती है ॥ ४ ॥

मन्त्रोद्धार

'ॐ ज्वालामालिनी द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं ह्रीं आं हां क्रों क्ष्मीं नमः'

ताम्बूल कुंकुम सुगन्धि विलेपनादीन्।
यः सप्तवार मभि मंत्र्य ददाति यस्यै ॥
सातस्य वश्य मुपयाति निजानुलेपात्।
स्त्रीणां भवे दभिनवः स च कामदेवः ॥५॥

अर्थ—इस मंत्रको सिद्ध करनेवाला पुरुष तांबूल कुंकुम और सुगन्धित लेप आदिको इस मन्त्रसे सातवार मन्त्रित करके जिसको देता है। वह स्त्री या पुरुष सेवन करते ही साधकके वशमें हो जाते हैं। यह साधक स्त्रियोंके लिए नया कामदेव बन जाता है ॥ ५ ॥

मायाक्षरं प्रणव सम्पुट मा विलिख्य,
बाह्येग्नि सम्पुट पुरं र र कोण देशे।
तद्वेष्टितं शिखि मतीवर मूल मन्त्रा,
दायाति देव वनितापि खराग्नि तापात् ॥६॥

अर्थ—माया अक्षर (ह्रीं) को प्रणव (ॐ) के संपुटमें लिखकर बाहर अग्नि मण्डलोंका संपुट बनाकर उनके कोनोंमें "रं" बीज लिखे। सबसे बाहर ज्वालामालिनी देवीके मूल मन्त्रसे वेष्टित करके तेज अग्निकी आंच देनेसे देवताओंकी भी स्त्री आ जाती है ॥ ६ ॥

आकर्षण यन्त्र

वशीकरण यंत्र विधान

पत्राष्ट काम्बु रुह मध्य गत त्रिमूर्ति,
शेषाक्षराणि च विलिख्य दलेषु देव्याः ।
माया वृतं मधु समन्वित भांड मध्ये,
निक्षिप्य पूजयति द्वादशमेति साध्याः ॥ ७ ॥

अर्थ—अष्ट दल कमलकी कर्णिकामें त्रि मूर्ति (ह्रीं) लिख कर देवीके शेष अक्षरोंको आठ दलोंमें लिखे। और ह्रींसे वेष्ठित कर दे। इस मंत्रको मधुरक्त बरतनमें रखकर जो इसका पूजन करता है, उसके वशमें इच्छित स्त्री पुरुष हो जाते हैं ॥७॥

स्त्री द्रावण ध्यान

रामा वरांग वदने स्मर बीज कंत्त,
तस्योर्द्ध भाग तल भाग गतं त्रिमूर्ति ।
पार्श्वद्वये च पुन रेवल पिंडमेकं,
ध्यायेद्भुतं द्रव मुपैति नदीव नारी ॥ ८ ॥

अर्थ—स्त्रीके योनि प्रदेशमें स्मर बीज (क्लीं) शिर और पैरमें, ह्रीं, और दोनों करवटोंमें एवल पिंड (ब्लें) का ध्यान करनेसे स्त्री तुरंतही द्रवित हो जाती है ॥ ८ ॥

इत्यं पंडित मल्लिषेण रचितं श्री ज्वालिनी देविका
स्तोत्रं शांतिकरं भयाप हरणं सौभाग्य संपत्करं

प्रातर्मस्तक सन्निवेशित करो नित्यं पठेद्यः पुमान्
श्रीसौभाग्य मनोभि वांच्छित फलं प्राप्नोत्य सौ लीलया ॥९॥

॥ इति श्री ज्वालामालिनी देवी स्तोत्र विधान ॥

अर्थ—यह पंडित मल्लिषेणका बनाया हुआ ज्वालामालिनीदेवीका स्तोत्र शांति करता है। भयको दूर करता है। सौभाग्य और संपत्तिको उस पुरुषके लिये करता हैं जो इसका प्रातःकालके समय, प्रतिदिन सिर पर हाथ जोडकर पाठ करते हैं ॥ ९ ॥

॥ इति ॥

अथ ज्वालामालिनीकी तीसरी साधन विधि

पाश त्रिशूल कार्मुक रोपण ऊष चक्र फल वर प्रदानकरा ॥
महिषारूढाष्ट भुजा शिखि देवी पातु मां साच ॥१॥

अर्थ—पाश, त्रिशूल, धनुष, बाण, मछली, चक्र, फल और वर प्रदान युक्त आठ हाथोंवाली, भैंसे पर चढी हुई वह देवी ज्वालामालिनी मेरी रक्षा करें ॥ १ ॥

पत्रेत्थमुक्तरूपां तां मुखांतां ज्वालिनी तथा ।
आचरं नूप चाराणां पंचकं साध कोर्चयेत् ॥ २ ॥

अर्थ—साधक पुरुष उस देवी ज्वालामालिनीको एक पत्रके ऊपर२ कहे हुए रूपवाली लिखकर उसका पांचों उपचारोंसे पूजन करे ॥ २ ॥

ब्रह्मावशिष्ट पिण्ड ज्वालिनी नव तत्व पूर्व मेहि युगं।
स्वाहा संवौषडिति ज्वालिन्या ध्यान मंत्रोऽयं ॥ ३ ॥

अर्थ—ब्रह्म (ॐ) शेष पिंड ज्वालामालिनी नवतत्व तथा दो वार 'एहि२' के पश्चात् स्वाहा और संवौषट्युक्त मंत्र ज्वालिनीदेवीका ध्यान मंत्र है ॥ ३ ॥

ध्यानमन्त्र या आह्वानन मन्त्रका उद्धार

"ॐ यल्व्यूं, मल्व्यूं, घल्व्यूं, भल्व्यूं, खल्व्यूं, बल्व्यूं, वल्व्यूं, कल्व्यूं, सम्पूर्णेन्दु स्वायुध वाहन समेते स परिवारे हे ज्वालामालिनि ह्रीं क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं हां आं क्रों क्षीं एहि२ स्वाहा। संवौषट्।

क्ष ह भ म पिंड ज्वालिनि नव तत्वेन्वेष मन्त्रमुच्चार्य।
स्वनिधन पद समुपेत स्त्रितये संस्थापना दीनां ॥ ४ ॥

अर्थ—क्ष, ह, भ और म, अक्षरोंके पिंड ज्वालामालिनी देवी और नव तत्वोंका उच्चारण करके अपने अन्तके पदों सहित स्थापना आदिके मंत्र बनते हैं ॥ ४ ॥

उक्त्वा मुमेत्र मंत्रं नरपत् संदर्श्यत् संदर्श्य योनि मुद्रां च।
ब्रूया द्वि सृष्टि समये महा महिष वाहने ह्यंतं ॥ ५ ॥

अर्थ—इन उपरोक्त मंत्रोंको बोलता हुआ विघ्नोंको नाश करता हुआ योनि मुद्राको बार बार दिखलाकर अन्तमें "महामहिषवाहने" यह पद भी कहे ॥ ५ ॥

स्थापना मन्त्रका उद्धार

ॐ क्ष्म्ल्व्यूं हल्व्यूं भल्व्यूं मल्व्यूं धवल वर्ण सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध, वाहन, समेते, सपरिवारे ज्वालामालिनि ह्रीं क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं हां आं क्रों क्षीं तिष्ठ२ ठः ठः। स्थापनम्।

सन्निधिकरण मन्त्रका उद्धार

ॐ क्ष्म्ल्व्यूं हल्व्यूं भल्व्यूं मल्व्यूं धवल वर्ण सर्व लक्षण संपूर्ण स्वायुध महा महिष वाहन समेते सपरिवारे ज्वालामालिनि, द्रां, द्रीं, क्लीं, ब्लूं, ह्रीं, हां, आं क्रों, क्षीं, मम सन्निहितो भव भव वषट्। सन्निधिकरणं।

पूजन मन्त्रका उद्धार

ॐ क्ष्ल्व्यूं हल्व्यूं भल्व्यूं मल्व्यूं धवल वर्ण सर्व लक्षण संपूर्ण स्वायुध महा महिष वाहन समेते सपरिवारे ज्वालामालिनि द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं ह्रीं हां आं क्षीं इद मर्घ्यं पाद्यं गंधमक्षतं पुष्पं दीपं धूपं चरुं कलं बलिं गृह्ण२ नमः।

अर्चना मंत्र।

विसर्जन मंत्रका उद्धार

ॐ क्ष्म्ल्व्यूं हल्व्यूं म्म्ल्व्यूं म्म्ल्व्यूं धवल वर्ण सर्व-लक्षण संपूर्ण स्वायुध महामहिष वाहन समेत स परिवारे ज्वाला-मालिनि, द्रां, द्रीं, क्लीं, ब्लूं, ह्रीं, हां, आं, क्रों, क्षीं, स्वस्थानं

गच्छ गच्छ पुनरागमनाय जः जः जः ।। विसर्जनम् ।।

अथ ब्राह्माद्यष्ट देवतानां पूजा

ब्राह्मी आदि आठों देवियोंका पंचोपचार क्रम।

ब्राह्मयादि देवता नांतु पूजा पिंडैः सम ध्रुवं ।
ब्राह्मयादि यादिभिः सम्यक् कुर्यातन्नामतः सुधीः ॥ १ ॥

ब्राह्मी आदि देवियोंका पूजन भी उन२ के नामसे पिण्ड लगाकर पंडित पुरुष करे ॥

ब्राह्मी देवीका पूजन

आह्वानन मंत्र।

ॐ ह्रीं क्रों यल्व्यूं पद्मराग वर्णे सर्व लक्षण सम्पूर्णे स्वायुध वाहन समेते स परिवारे हे ब्रह्माणि एहि२ संवौषट आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं क्रों यल्व्यूं पद्मराग वर्णे सर्व लक्षण संपूर्णे स्वायुध वाहन समेते स परिवारे हे ब्रह्माणि तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं क्रों टम्ल्व्यूं पद्मराग वर्णे सर्व लक्षण संपूर्णे स्वायुध वाहन समेत स परिवारे हे ब्रह्माणि मम सन्निहितो भव भव सन्निधिकरणम् ।

ॐ ह्रीं क्रों यल्व्यूं पद्मराग वर्णे सर्वलक्षण संपूर्णे स्वायुध वाहन समेते सपरिवारे हे ब्रह्माणि इदमर्घ्यं गंधमक्षतं पुष्पं दीपं धूपं चरुं फलं बलिं गृह्ण२ स्वाहा । अर्चनम् ।

ॐ ह्रीं क्रों यल्व्यूं पद्मराग वर्णे सर्व लक्षण संपूर्णे स्वायुध वाहन समेत सपरिवारे हे ब्रह्माणि स्वस्थानं गच्छ २ जः जः जः (विसर्जनम्) ।

॥ इति ब्राह्मीदेवी पूजन ॥

निज पिंड देह वर्णाख्या योगादष्ट भावमापन्ना ।
पंचोपचार मंत्रै मातृः सं प्राच्र्यये देभिः ॥ २ ॥

अर्थ—अपने देह पिंडके वर्ण नामयोग और आठों भावों सहित पंचोपचार मंत्रोंसे उन माता ॐ का पूजन करे ॥ २ ॥

माहेश्वरीदेवीका पूजन

ॐ ह्रीं क्रों मल्व्यूं शशधरवर्णे सर्वलक्षण संपूर्णे स्वायुध वाहन समेते सपरिबारे माहेश्वरि एहि एहि संवौषट् । आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं क्रों मल्व्यूं शशधरवर्णे सर्वलक्षण संपूर्णे स्वायुध वाहन समेते स परिवारे माहेश्वरि तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं क्रों मल्व्यूं शशधरवर्णे सर्व लक्षण संपूर्णे स्वायुध वाहन समेते सपरिवारे माहेश्वरी मम सन्निहिता भव भव वषट । सन्निधिकरणम् ।

ॐ ह्रीं क्रों मल्व्यूं शशधर वर्णे सर्व लक्षण संपूर्णे स्वायुध वाहन समेते सपरिवारे माहेश्वरि इदमर्घ्यं गंधमक्षतं पुष्पं दीपं धूपं चरूं फलं बलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा । अर्चनम् ।

ॐ ह्रीं क्रों मल्व्यूं शशधरवर्णे सर्व लक्षण संपूर्णे स्वायुध वाहन समेते सपरिवारे माहेश्वरि स्वस्थानं गच्छ२ जः जः जः । (विसर्जनम्) ।

कौमारीदेवीका पूजन

ॐ ह्रीं क्रों यल्व्यूं प्रवाल वर्णे सर्व लक्षण संपूर्णे स्वायुध वाहन समेते सपरिवारे हे कौमारि एहि२ संवौषट् (इत्याह्वाननम्)

ॐ ह्रीं क्रों यल्व्यूं प्रवाल वर्णे सर्वलक्षण संपूर्णे स्वायुध वाहन समेते सपरिवारे हे कौमारि तिष्ठ२ ठः ठः । स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं क्रों यम्ल्व्यूं प्रवाल वर्णे सर्व लक्षण संपूर्णे स्वायुध वाहन समेते सपरिवारे हे कौमारि मम सन्निहिता भव भव वषट् । सन्निधिकरणम् ।

ॐ ह्रीं क्रों यल्व्यूं प्रवाल वर्णे सर्व लक्षण संपूर्णे स्वायुध वाहन समेते सपरिवारे हे कौमारि इदमर्घ्यं गंधमक्षतं पुष्पं धूपं दीपं चरुं फलं बलिं गृह्ण२ स्वाहा । अर्चनम् ।

ॐ ह्रीं क्रों यल्व्यूं प्रवाल वर्णे सर्व लक्षण संपूर्णे स्वायुध वाहन समेते सपरिवारे हे कौमारि स्वस्थानं गच्छ२ जः जः जः । विसर्जनम् ।

वैष्णवीदेवीका पूजन

ॐ ह्रीं क्रों झल्व्यूं नीलोत्पल वर्णे सर्व लक्षण संपूर्णे स्वायुध वाहन समेते स परिवारे हे वैष्णवि एहि२ संवौषट् । इत्याह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं क्रों झल्व्यूं नीलोत्पल वर्णे सर्व लक्षण संपूर्णे स्वायुध वाहन समेते सपरिवारे हे वैष्णवि तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं क्रों झल्व्यूं नीलोत्पल वर्णे सर्व लक्षण संपूर्णे स्वायुध वाहन समेते सपरिवारे हे वैष्णवि मम सन्निहिता भव२ वषट् । सन्निधिकरणम् ।

ॐ ह्रीं क्रों झल्व्यूं नीलोत्पल वर्णे सर्व लक्षण संपूर्णे स्वायुध वाहन समेते सपरिवारे हे वैष्णवि इदमर्घ्यं गंधमक्षतं पुष्पं धूपं चरुं फलं बलिं गृह्ण२ स्वाहा । अर्चनम् ।

ॐ ह्रीं क्रों झल्व्यूं नीलोत्पल वर्णे सर्व लक्षण संपूर्णे स्वायुध वाहन समेते सपरिवारे हे वैष्णवि स्वस्थानं गच्छ जः जः जः । विसर्जनम् ।

वाराहीदेवीका पूजन

ॐ ह्रीं क्रों खल्व्यूं इंद्र नील वर्णे सर्व लक्षण संपूर्णे स्वायुध वाहन समेते सपरिवारे हे वाराहि एहि२ संवौषट् । इत्याह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं क्रों खल्व्यूं इंद्रनील वर्णे सर्व लक्षण संपूर्णे स्वायुध

वाहन समेते सपरिवारे हे वाराहि मम सन्निहिता भव२ वषट् । सन्निधिकरणम् ।

ॐ ह्रीं क्रों खल्व्यूं इंद्र नीलवर्णे सर्व लक्षण संपूर्णे स्वायुध वाहन समेते सपरिवारे हे वाराहि इदमर्घ्यं गंधमक्षतं दीपं धूपं चरूं फलं बलिं गृह्ण२ स्वाहा । अर्चनम् ।

ॐ ह्रीं क्रों खल्व्यूं इंद्र नीलवर्णे सर्व लक्षण संपूर्णे स्वायुध वाहन समेते सपरिवारे हे वाराहि स्वस्थानं गच्छ२ जः जः जः । विसर्जनम् ।

ऐंद्रीदेवीका पूजन

ॐ ह्रीं क्रों भल्व्यूं हंस वर्णे सर्व लक्षण संपूर्णे स्वायुध वाहन समेते सपरिवारे हे ऐंद्री ऐहि२ संवौषट् । आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं क्रों भल्व्यूं हंस वर्णे सर्व लक्षण संपूर्णे स्वायुध वाहन समेते सपरिवारे हे ऐंद्री तिष्ठ२ ठः ठः । स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं क्रों भल्व्यूं हंस वर्णे सर्व लक्षण संपूर्णे स्वायुध वाहन समेते सपरिबारे हे ऐंद्री मम सन्निहिता भव२ वषट् । सन्निधिकरणम् ।

ॐ ह्रीं क्रों भल्व्यूं हंस वर्णे लक्षण संपूर्णे स्वायुध वाहन समेते सपरिवारे हे ऐंद्री मम सन्निहिता इदमर्घ्यं गंधमक्षतं पुष्पं दीपं धूपं चरूं फलं बलिं गृह्ण२ स्वाहा । अर्चनम् ।

ॐ ह्रीं क्रों भल्व्यूं हंस वर्णे सर्व लक्षण संपूर्णे स्वायुध

वाहन समेते सपरिवारे हे ऐंद्री स्वस्थानं गच्छ२ जः जः जः । विसर्सजनम् ।

चामुण्डा देवीका पूजन

ॐ ह्रीं क्रों कल्व्यूं हंस वर्णे सर्व लक्षण संपूर्णे स्वायुध वाहन समेते सपरिवारे हे चामुण्डे एहि२ संवौषट् । आह्वाननं ।

ॐ ह्रीं क्रों कल्व्यूं हंस वर्णे सर्व लक्षण संपूर्णे स्वायुध वाहन समेते सपरिवारे हे चामुण्डे तिष्ठ२ ठः ठः । स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं क्रों कल्व्यूं हंस वर्णे सर्व लक्षण संपूर्णे स्वायुध वाहन समेते हे चामुण्डे अत्र मम सन्निहितो भव२ वषट् ।

ॐ ह्रीं क्रों कल्व्यूं हंस वर्णे सर्व लक्षण संपूर्णे स्वायुध वाहन समेते सपरिवारे हे चामुण्डे इदमर्घ्यं गंधमक्षतं पुष्पं दीपं धूपं चरूं फलं बलिं गृह्ण२ स्वाहा । अर्चनम् ।

ॐ ह्रीं क्रों कल्व्यूं हंस वर्णे सर्व लक्षण संपूर्णे स्वायुध वाहन समेते सपरिवारे हे चामुण्डे स्वस्थानं गच्छ२ जः जः जः । विसर्जनम् ।

महालक्ष्मीदेवीका पूजन

महालक्ष्मी एहि२ संवौषट् । आह्वाननं ।

ॐ ह्रीं क्रों कल्व्यूं हंस वर्णे सर्व लक्षण संपूर्णे स्वायुध वाहन समेते सपरिवारे हे महालक्ष्मि तिष्ठ२ ठः ठः । स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं क्रों कल्व्यूं हंस वर्णे सर्व लक्षण संपूर्णे स्वायुध वाहन समेते सपरिवारे महालक्ष्मि मम संहिता भव२ वषट् । सन्निधिकरणम् ।

ॐ ह्रीं क्रों कल्व्यूं हंस वर्णे सर्व लक्षण संपूर्णे स्वायुध वाहन समेते सपरिवारे हे महालक्ष्मि इदमर्घ्यं गंधमक्षतं पुष्पं दीपं चरुं फलं बलि गृह्ण२ स्वाहाविसर्जनम् ।

। इति ब्राह्म्यादि अष्ट देवतानां पंचोपचार क्रमः ।

ज्वालिन्या सन्निधौ देव्या । मूल विद्यामिमां सुधीः
लक्षमेकं जपेत्पुष्पै । संधूतैररुण प्रभैः ॥ १ ॥

अर्थ—बुद्धिमान् पुरुष ज्वालामालिनिदेवीके सन्मुख मूल मंत्रका लाल पुष्पोंसे एक लाख जप करे ॥ १ ॥

तन्निष्ठान निशायां हिम कुंकुम लघु पुरादिभि द्रंव्यैः ।
रचिताभि र्गुलिकाभिः जुहुयाद युतं यथा विहितं ॥ २ ॥

अर्थ—फिर रात्रिके समय हिम (चंदन), कुंकुम (केशर) लघुपुरा (शुद्ध गूगल) आदि द्रव्योंकी गोली बनाकर उनसे दश सहस्र हवन करे ॥ २ ॥

अम्बादेवी सन्निहिता शुभमशुभं यथा फलं निखिलं ।
संवादये दभिमतं साधन विधि संग्रहीत विद्यस्य ॥ ३ ॥

अर्थ—इस प्रकार इस साधन विधिसे विद्या सिद्ध करने-

वालेको वह माता ज्वालामालिनीदेवी पास आकर संपूर्ण शुभ और अशुभ फलको कहती है ॥ ३ ॥

मंत्र जप होम नियम ध्यान त्रिर्भि मा करोतु सन्मंत्री ।
यद्यप्यत्र समुक्तं तथापि सन्मंत्र साधनं त जहातु ॥ ४ ॥

अर्थ—यद्यपि अग्नि एक होती है। तथापि उसको हवासे क्यों न उबका जावे। उसी प्रकार यद्यपि मंत्र एक ही होता है। तब भी जप और हवनसे युक्त होने पर उसके लिये क्या असाध्य है।

शिष्यको विद्या देनेकी विधि

शाल्यक्षतैर्मन्डलमाविलिख्य, विहस्तमानं चतु रस्र कं तत् ।
जिनेन्द्रबिंब शिखिदेवतायाः, सुवर्णपादौ च निवेश्य तत्र ॥५॥

अर्थ—सांठीके चांवलोंसे दो हाथ लंबा चौडा चौकार मंडल बनाकर उसमें जिनेन्द्र भगवानकी प्रतिमा और ज्वालामालिनी देवीके चरणोंकी स्थापना करे ॥ ५ ॥

अष्टोत्तर शतपूगै रष्टोतर, शतक भक्ष दीपाद्यैः ।
जिन शिखि देवी पदयोः, पूजा गुरु भक्तितः कार्या ॥६॥

अर्थ—फिर उन भगवान और देवीके चरणोंकी एकसौ आठ सुपारी और एकसौ आठ नैवेद्य दीप आदिसे गुरुमें भक्ति लगाकर पूजा करे ॥ ६ ॥

चंद्रादयः साक्षिणा इत्यथोक्ता हिरण्य निक्षिप्त घटस्य तोयैः।
दद्यात्ततः साधक सव्य हस्ते विद्या प्रदत्ता भवते मयेति ॥७॥

अर्थ—"चन्द्रमा इत्यादिकी साक्षी करके मैं तुमको यह विद्या देता हूँ" यह कहकर शिष्यके बाएं हाथमें सोनेके कलशमेंसे जलकी धारा डाले ॥ ७ ॥

श्री जैन धर्मानु रताय विद्या, त्वया प्रदेयेति च भाषणीयं।
मिथ्यादृशे दास्यसि लाभ तश्चेत्,
प्राप्नोति गौ ब्राह्मण घात पाप ॥ ८ ॥

अर्थ—"फिर उससे कहे" तुम यह विद्या जैन धर्ममें अनुरक्त पुरुषको ही देना। यदि मिथ्यादृष्टिको दोगे तो तुमको "गौ" और ब्राह्मणकी हत्याका पाप लगेगा ॥ ८ ॥

इति शिष्यको विद्या देनेकी संक्षिप्त विधि।

× × ×

ॐ नमो भगवते श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय शशांक शंख गौक्षीर हार धवल गात्राय घाति कर्मांनमूलोच्छेदनाय जाति जरा मरण विनाशनाय संसार कांतारोन्मूलनाय अचिंत बल पराक्रमाय अप्रतिहत महा चक्राय त्रैलोक्य वशंकराय सर्व सत्व हितं कराय सुरासुरोरगेंद्र मुकुट कोटि घटित पाद पीठाय त्रैलोक्य नाथाय देवाधि देवाय अष्टादश दोष रहिताय धर्म चक्राधीश्वराय सर्व विघ्न हरणाय सर्व विद्या परमेश्वराय

कुविद्याभ्रकाय त्वत्पाद पंकजाश्रय निषेवनी देवि शासन देवते त्रिभुवनजनसंक्षोभिणि त्रैलोक्य शिवाय कारिणि स्थावर जंगम विष मुख संहारिणि विष मोचिनि सर्वाभिचार कर्माय हारिणि परविद्योच्छेदिनी पर मंत्र यंत्र प्रणाशिनि अष्ट महा नाग कुलोच्चाटिनि काल दंष्ट्र मृतकोच्छायिनि सर्वरोग प्रमोचिनि ब्रह्मा विष्णु रुद्रो रगेन्द्र चन्द्रा दित्य ग्रह नक्षत्रोत्पात भय मरणभय पीडा संमर्दिनि त्रैलोक्य महते विश्वलोक वंश करे भुविलोक हितंकरे महा भैरवे भैरव शस्त्रोपधारिणि रौद्र रौद्र रूप धारिणि प्रसिद्ध सिद्ध विद्याधर यक्ष राक्षस गरुड गन्धर्व किन्नर किम्पुरुष दैत्यो दैत्योर गेंद्र पूजिते ज्वालामाल कराल दिगन्तराले महा महिष वाहिनि खेटक कृपाण त्रिशूल शक्ति चक्र पाश शरासन शंख विराजमान षोडशार्द्ध भुजे एहि२ हल्व्यूं ज्वालामालिनि ह्रीं क्लीं ब्लूं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः ह्रीं देवान् आकर्षय२ नाग ग्रहान् आकर्षय२ यक्ष ग्रहान् आकर्षय२ गंधर्व ग्रहान् आकर्षय२ ब्रह्म ग्रहान् आकर्षय२ राक्षस ग्रहान् आकर्षय२ भूत ग्रहान् आकर्षय२ व्यंतर ग्रहान् आकर्षय२ सर्व दुष्ट ग्रहान् आकर्षय२ कड कड कम्पाय२ शीर्षं चालय२ गात्रं चालय२ बाहुं चालय२ पादं चालय२ सर्वांगं चालय२ लोलय२ धनु२ कंपय२ शीघ्रमवतारय२ गृह्ण२ ग्राह्य२ अबोडय२ आवेशय२ जल्व्यूं ज्वालामालिनि ह्रीं ह्रीं क्लीं ब्लूं ह्रां ह्रीं ज्वल२ र र र र घग२ धूमांध कारेण ज्वल२ ज्वलन शिखेदेंव

ग्रहान् दह२ यक्ष ग्रहान् दह२ नाग ग्रहान् दह२ गंधर्व ग्रहान् दह दह ब्रह्म ग्रहान् महर राक्षस ग्रहान् दह२ भूत ग्रहान् दह२ व्यंतर ग्रहान् दह२ सर्व दुष्ट ग्रहान् दह२ शत कोटि देवान् दह२ सहस्र कोटि पिशाचानां राज्ञे दह२ घेर स्फोटय स्फोटय मारय२ धगर धगित मुखे ज्वालामालिनि ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः सर्व शत्रु ग्रह हृदयं दह२ पच२ छिंद२ भिंद भिंद हः हः हा हा स्फुटय२ घे घे क्ष्म्ल्व्र्यूं क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः स्तंभय२ म्ल्व्र्यूं भ्रां भ्रीं भ्रूं भ्रौं भ्रः ताडय ताडय म्ल्व्र्यूं भ्रां भ्रीं भ्रूं भ्रौं भ्रः नेत्रे स्फोटय२ दर्शय२ फ्ल्व्र्यूं य्रां य्रीं य्रूं य्रौं य्रः प्रेषय२ घ्ल्व्र्यूं घ्रां घ्रीं घ्रूं घ्रौं घ्रः जठरं भेदय२ ड्म्ल्व्र्यूं ड्रां ड्रूं ड्रूं ड्रौं ड्रः मुष्टि बंधेन बंधय२ खल्व्र्यूं ख्रां ख्रीं ख्रूं ख्रौं ख्रः ग्रीवां भंजय२ छम्ल्व्र्यूं छ्रां छ्रीं छ्रूं छ्रौं छ्रः अंत्रान् छेदय२ ढल्व्र्यूं ढ्रां ढ्रीं ढ्रूं ढ्रौं ढ्रः महा विद्युत्पाषाणा स्त्रेहंन२ बल्व्र्यूं ब्रां ब्रीं ब्रूं ब्रौं ब्रः समुद्रे मज्जय२ हल्व्र्यूं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः सर्व डाकिनी मर्दय२ सर्व योगिनी स्तर्जय२ सर्व शत्रून् ग्रासय२ ख ख ख ख ख ख ख खादय२ सर्व दैत्यान् ग्रासय२ सर्व मृत्युन् नाशय२ सर्वोपद्रवान् स्तंभय२ जः जः जः दह दह पच पच घरु२ धरु२ खड्ग रावणम् विद्यां घातय२ चंद्रहास खड्गेन छेदय२ भेदय२ डरु२ छरु२ हरु२ फुटरु घे घे आं क्रों क्षां क्षीं क्षौं ज्वालामालिनी आज्ञापयति स्वाहा ।

अयं पठित संसिद्ध, श्री ज्वालिन्याधि दैवत ।

माला मंत्रः प्रजाप्या दै, गृहरोग विषादिहृत ॥ १ ॥

अर्थ—यह श्री ज्वालामालिनीदेवीका माला मंत्र केवल पढ़नेसेही सिद्ध हो जाता है । इसका जप इत्यादि करनेसे ग्रहरोग और विष आदि नष्ट होते हैं ॥ १ ॥

इतिश्री ज्वालामालिनी माला मंत्र समाप्तम् ।

ज्वालामालिनी वश्य मंत्र

"ॐ ह्रीं क्लीं आं क्षीं ह्रीं क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं हंसः यहीं ज्वालामालिनी देवदत्तस्य सर्वजन वश्यं कुरु२ स्वाहा ।"

नित्य २१ दिन जपै रक्त विधानेन सर्वजन वश्यं वार ७–२१–१०८ अबीर मंत्र सिरपर नाखे स्त्री–पुरुष वश्य होय, सवा पैसेकी सोरनी बांटै ॥

अथ श्री चंद्रप्रभ स्तवनम्

ॐ चन्द्र प्रभु प्रभाधीशं, चन्द्र शेखर चंद्रजं ।
चंद्र लक्ष्म्यांकं चंद्रांकं, चंद्र बीज नमोस्तुते ॥ १ ॥
ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं चंद्रप्रभः, ह्रीं श्रीं कुरु कुरु स्वाहा ।
इष्ट सिद्धिः महारिद्धि, तुष्टि पुष्टि करोद्भवः ॥ २ ॥
द्वादश सहस्र जप्तो, वांछितार्थ फलप्रदः ।
महता त्रि संध्यं जप्तवा, सर्व व्याधि विनाशकः ॥ ३ ॥

सुरा सुरेन्द्र सहिता, श्री पांडव नृप स्तुतः
श्री चंद्रप्रभु तीर्थेशः, श्रियो चंद्रो ज्वलां कुरुः ॥ ४ ॥

श्री चंद्रप्रभु विद्येयं, स्मृता सद्य फल प्रदा ।
भवाब्धि व्याधि विध्वंसी, दायिनी मे वर प्रदा ॥ ५ ॥

इति मंत्र रूप चंद्रप्रभ स्तोत्रं समाप्तम् ।

विधि पूर्वक ए मंत्र साधै, ज्वालामालिनी स्तोत्र नित्य पढ़ै, सर्व कार्य सिद्धि कारक मंत्रोयम् ।

श्री चंद्रप्रभु स्वामी स्तवनम्

देवैर्यः स्तुष्टुवे तुष्टैः, सोम लांछित विग्रहः,
दद्याच्चंद्रप्रभः प्रीतिंः, सोम लांछित विग्रहः ॥१॥
येषा पूजां विधिः कर्मां, जनहृत्कमलालयः,
तेजिनाः पांतुवो भव्य, जनहृत्कमलालयः ॥२॥
कुतीर्थि सार्थेन दुरा, सदं भोग्या निरंजनंः,
श्रुतं सेवेत मोहाग्नि, सदं भो ज्ञानि रंजनः ॥३॥
पीतु गीर्वाः कृत्वा विद्यो, परमा कमलासना,
यत्प्रभोवा जनैं लैं मे, परमा कमलासना ॥४॥

इति श्री चंद्रप्रभु स्वामी स्तवनम्

अथ श्री चन्द्रप्रभ स्वामी स्तवनम्

मौक्तिक दामादि वृत्त बद्ध षट् भाषा रचना चमस्कृति

युक्त यथा । संस्कृत, प्राकृत, शौरसेनी, मागधी, पैशाचिक, चलिका, पैशाचिक, अपभ्रंश ।

संस्कृत—

नमो महासेन नरेन्द्र तनुज, जगद् जन लोचन भृंग सरोज ।
शरद्भव सोम सम द्युति काय, दया मय तुभ्यमनंत सुखाय ॥१॥
सुखी कृतु सादर सेवक लक्ष, विनिर्जित दुर्जय भाव विपक्ष ।
सुरासुर बंद नमस्कृत नंद, महोदय कल्प महीकर कंद ॥२॥

प्राकृत —

जयनिरसिय तिहुयण जं तुमंति,
जय मोह महीरुह वन नन्दंति ।
जय कुंद कलिय समदंत यंति,
जय जय चंद्र प्पह बंद कंति ॥ ३ ॥
जय पणय पाणि गण कप्परुरक,
जय जगडिय अपयड कसय परक ।
जय णिम्मल केवल नाण गेह,
जय जय जिणिंद अप्पडि मदेह ॥ ४ ॥

शौरसेनी —

विगद दुह देहु मोहारि केदूदयं,
दलिद् गुरु दुरिद् मध विहिद् कुमुद् कखयं ।
नाघतं नमदिजो सदट नद् वत्सलं,
लहदि निच्चदि गदिं सोदद्ं णिम्मलं ॥ ५ ॥

मागधी—

असुल सुल विलसन लनाय सेवित्र पदे,
नमिल जय जंतु तुदित्तासिव पुल पदे ।
चलन पुल निलद सिंसालि सलसी लुदे,
देहि महसा मिवं सालि सासद पदे ॥ ६ ॥

पैशाचिकं—

तलिता खिलतो सतया सतनं,
मदना नल नील मनान गुणं ।
नलिना रुण पात तलां पमते,
जिननो इधतं सशिवं लभते ॥ ७ ॥

चूलिका पैशाचिकं—

कल नालिक नातुल तप्प हलं,
चलनो कल चालु यशप्प सलं ।
लल नाचन कीत कुनं लुचिलं,
चिन लावम हंस मला मिचिलं ॥ ८ ॥

अपभ्रंश—

सासय सुक्ख निहाणु नाहन दिठो जेहिं तउं
पुन्न विहूण उजाणु निफल जं मुतिहं नर पशुहं ॥ ९ ॥
निम्मल तुह मुह चंदुजे पहु पिक्खुइं पसरिसिउं
इय निरूवय आणं दुतिह मुनि सामी त्रिप्फुरइ ॥ १० ॥

द्वयं सम संस्कृतं

हारि हार हर हास कुंद सुंदर देहा भय ।
केवल कमला केलि निलय मंजुल गुण गण मय ॥
कमला रुण करचरण चरण भर धरण धवल ।
बल सिहिर मणि संगम विलास लाल समल मवदल ॥ ११ ॥
भव नव दव जल वाह विमल मंगल कुल मंदिर ।
वाम काम कर केलि हरण हरिधर गुण बंधुर ॥
मंदर गिरी गुरु सार सबल कलि भू रूह कुंजर ।
देहि महोदय मेव देव सग केवलिं कुंजर ॥ १२ ॥
इति जगदभिनंदन जन हृदि चंदन चंद्र प्रभ जिन चंद्रवर ।
षड् भाषा भिष्टुत मम मंगल युत सिद्धि सुखानि विभो त्रिस्तर॥ १३

॥ इति श्री जिन प्रभ सूरि कृत चंद्रप्रभ स्वामि स्तवनं समाप्तम् ॥

ॐ नमो भगवते चंद्रप्रभाय चन्द्रेन्द्र महिताय,
चंद्र प्रभावमिति सर्व मुख रंजिनी स्वाहा ।
प्रभाते उदक मभि मंत्र्य मुखं प्रक्षालयेत्,
सर्वजन प्रियो भवति ॥

अथ चंद्रप्रभु मंत्र

ॐ नमो भगवते चंद्रप्रभ जिनेंद्राय,
चंद्र महिताय कीर्ति मुख रंजिनी स्वाहा ॥
चंद्रप्रभ जिन स्यास्य, शरचंद्र समुद्यतैः ।
मंत्रो नेक फलः सिद्धि, मायात्यऽयुत जाप्यतः ॥ १ ॥

अर्थ—शरत्कालीन चंद्रमाके समान कांतिवाले श्री चंद्रप्रभ भगवान्‌का यह मंत्र दश सहस्र जपसे सिद्ध होकर अनेक फल देता है ॥ १ ॥

तमग्रे दक्षिणे वामे, पृष्टे च सं जपेत्क्रमात् ।
वंद्यमानं जिनं ध्यायेत्, शक्रार्क श्रींदु चक्रिभिः ॥ २॥

अर्थ—इस मंत्रको क्रमसे भगवान्‌के आगे दाहिने बाएं और पीछे जप करे फिर उन भगवान्‌का ध्यान इंद्र सूर्य लक्ष्मी चंद्रमा और चक्रवर्ति रूपसे करे ॥ २ ॥

जपोस्य सर्व मप्यर्थं, साधये दपि वांछितं ।
विनिहंति च निःशेष, मभिचारोद्भवं भयम् ॥ ३ ॥

अर्थ—इस यंत्रका जप सब इच्छा किये हुए प्रयोजनोंको सिद्ध करता है। और सब मारण आदि अनुष्ठानोंसे पैदा हुए भयोंको नष्ट करता है ॥ ३ ॥

अभिषेको गव्यैर्वा, क्षीर तरु त्वक् कृथा सलिलै ।
वातोयै र्वा संजप्तैः, क्षुद्र ग्रह हृद्भवेदमुना ॥ ४ ॥

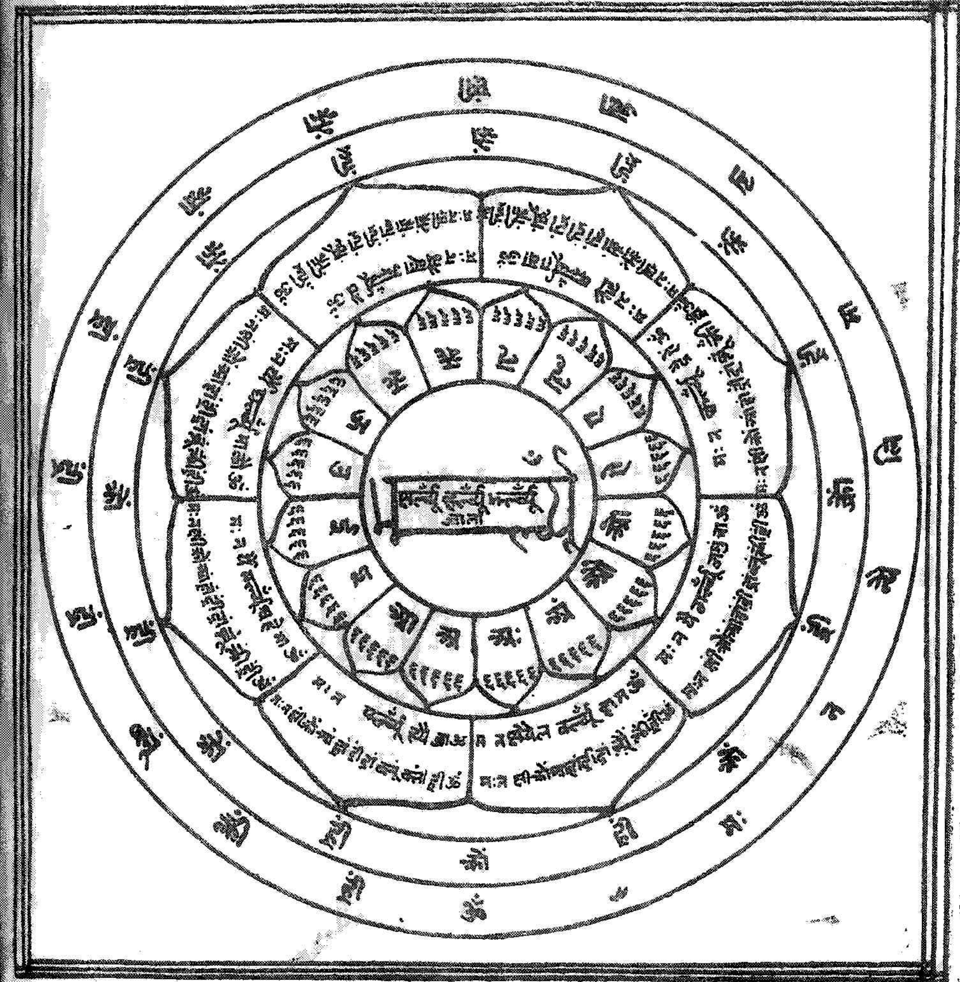
अर्थ—उन भगवान्‌का गौ के दूध अथवा दूधवाले वृक्षोंकी छालके बनाए हुए जल अथवा केवल जलसे अभिषेक करके जप करनेसे सब क्षुद्र ग्रह नष्ट हो जाते हैं ॥ ४ ॥

॥ इति श्री चंद्रप्रभ स्तवनम् ॥

इति ज्वालामालिनी कल्प सम्पूर्णम् ।

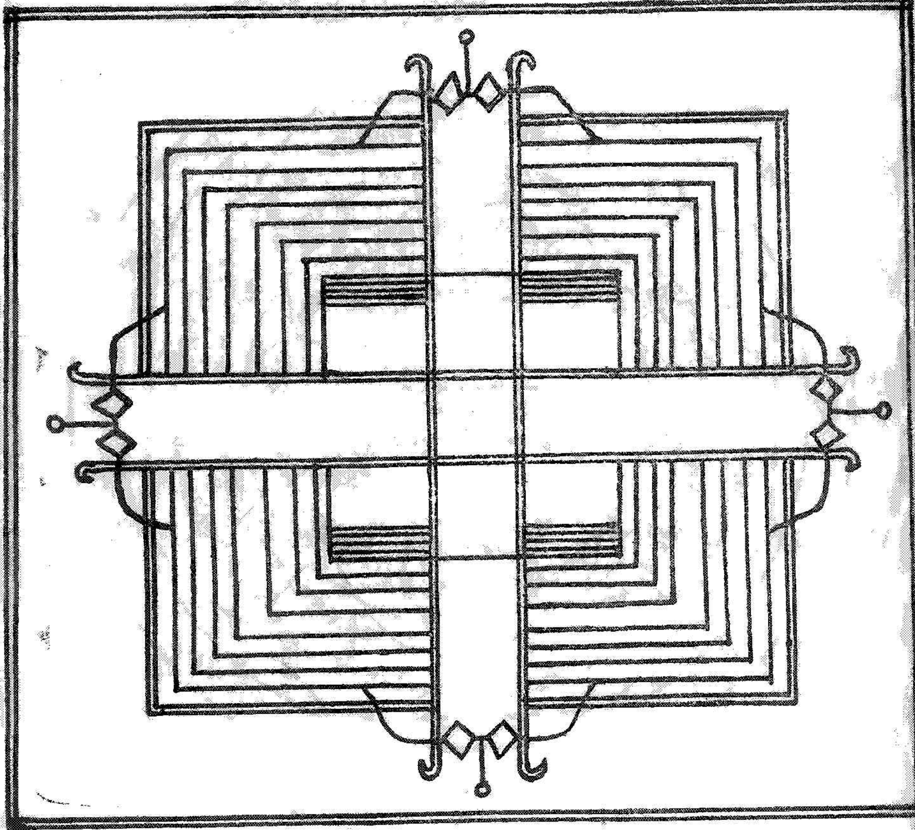


[१]

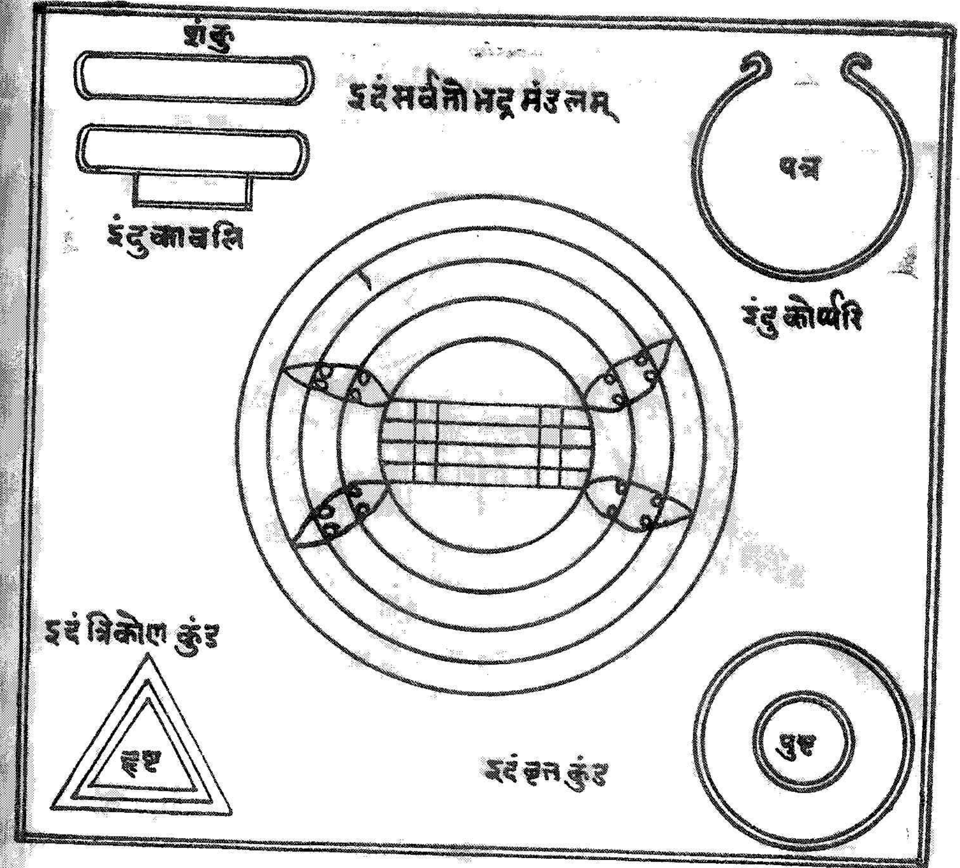


रक्षक यंत्र—परिच्छेद तीन श्लोक २५ से २८. पृ० २५

॥सामान्य मंडल॥



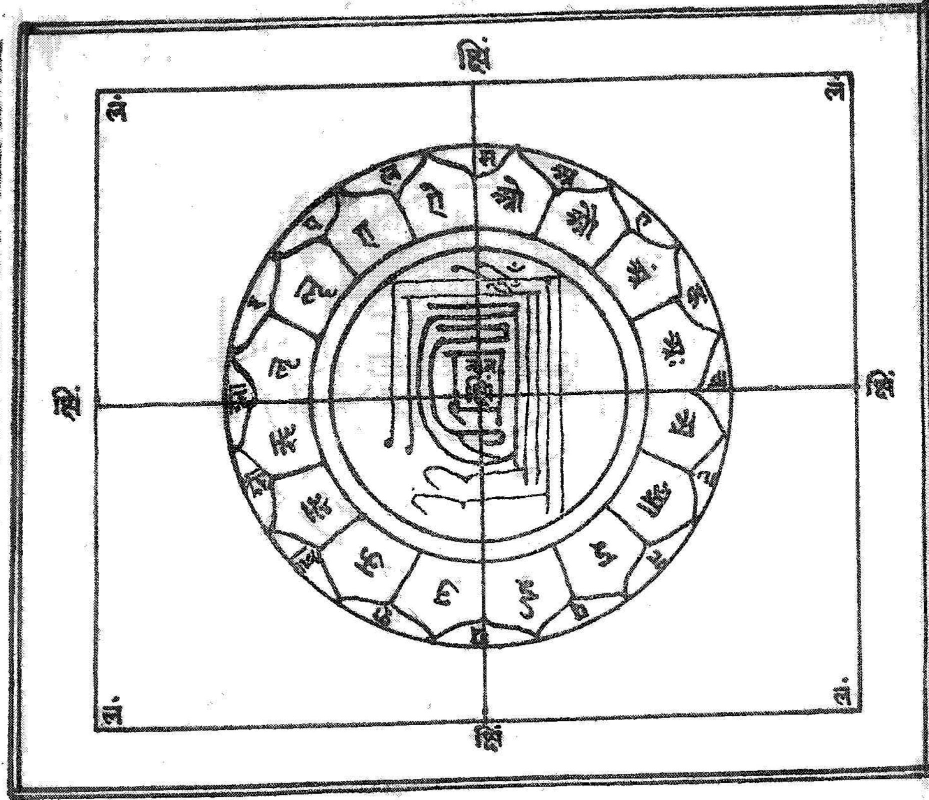
चथुर्थ परिच्छेद, श्लोक १०-११ पृष्ठ ३६ से



सर्वतो भद्र मण्डल

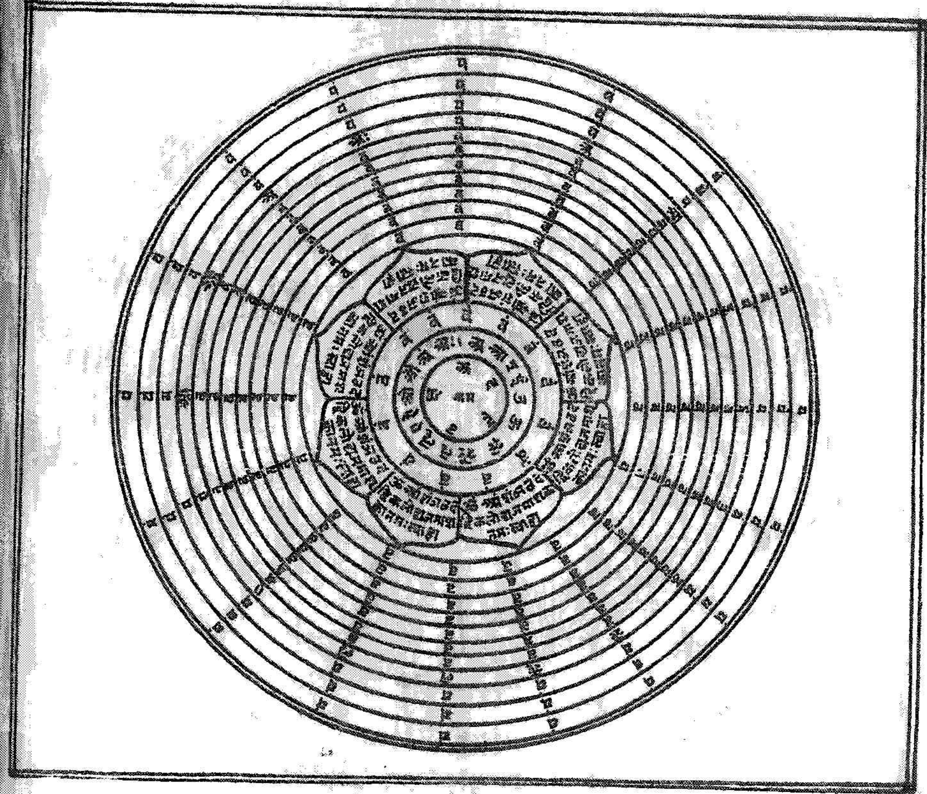
चतुर्थ परिच्छेद, श्लोक १२ से १४ पृ० ५५

॥सर्व रक्षा यंत्र॥ १ ॥

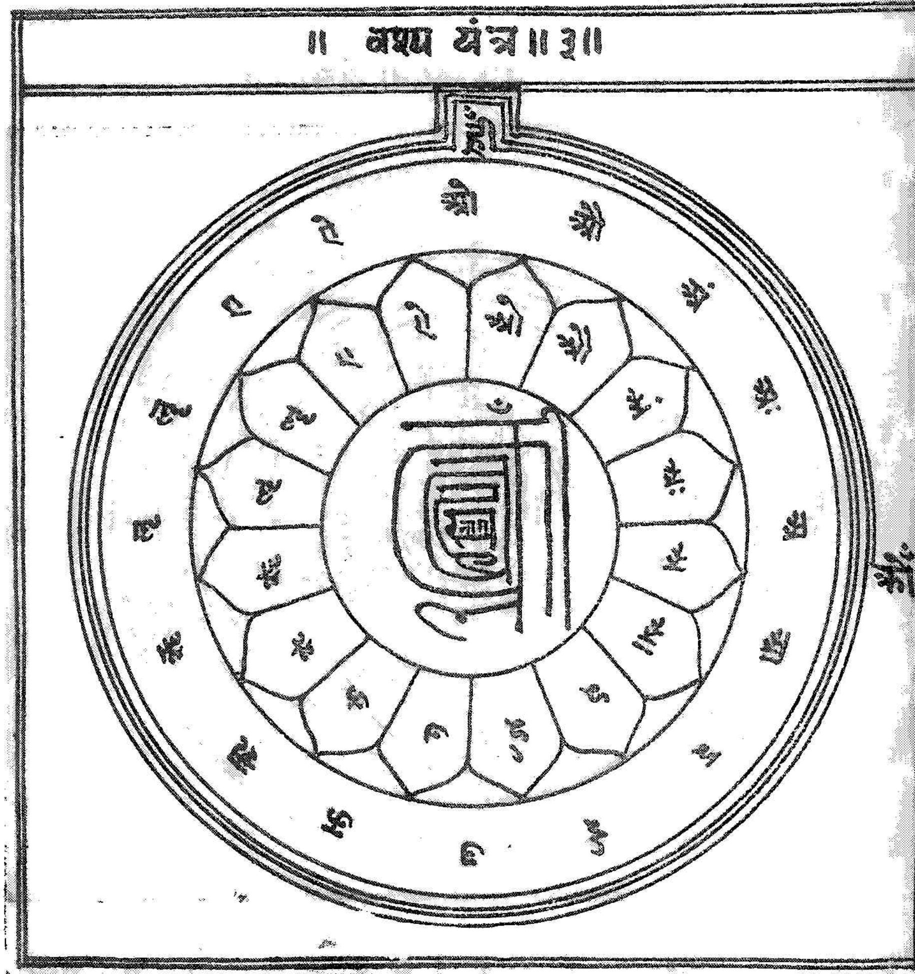


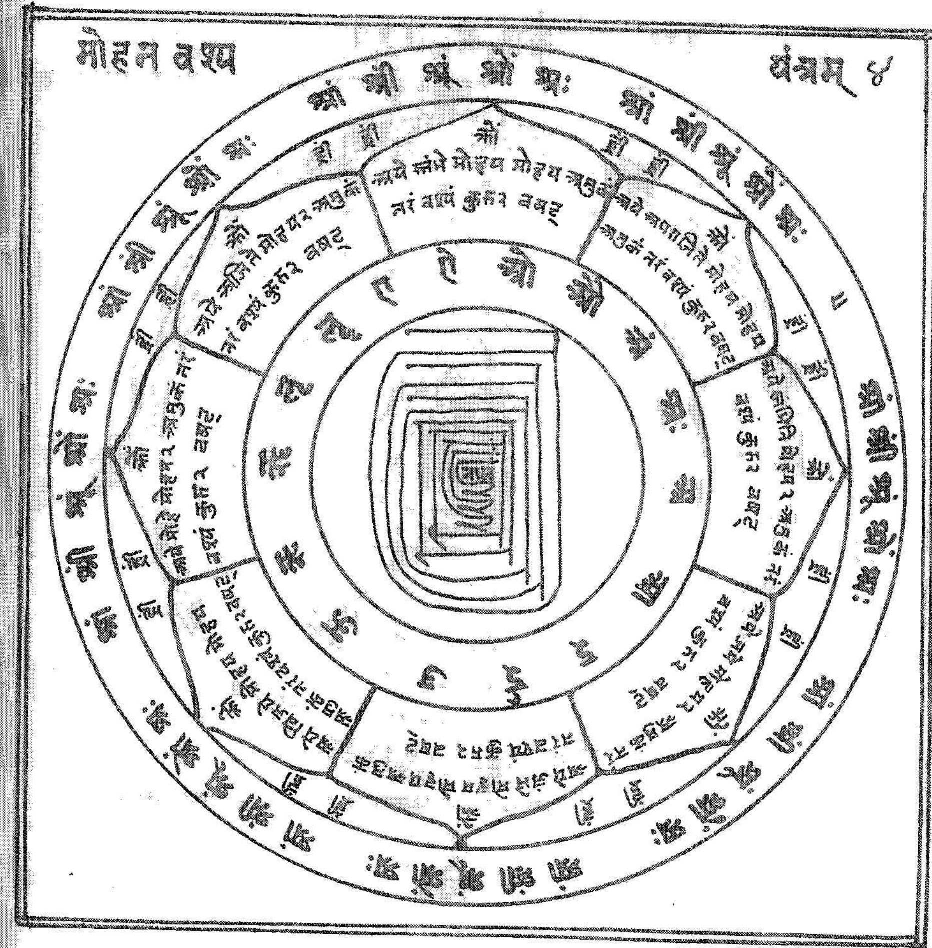
परिच्छेद ६ श्लोक १–२

॥ ग्रह रक्षक पुत्र दायक यंत्र॥२॥

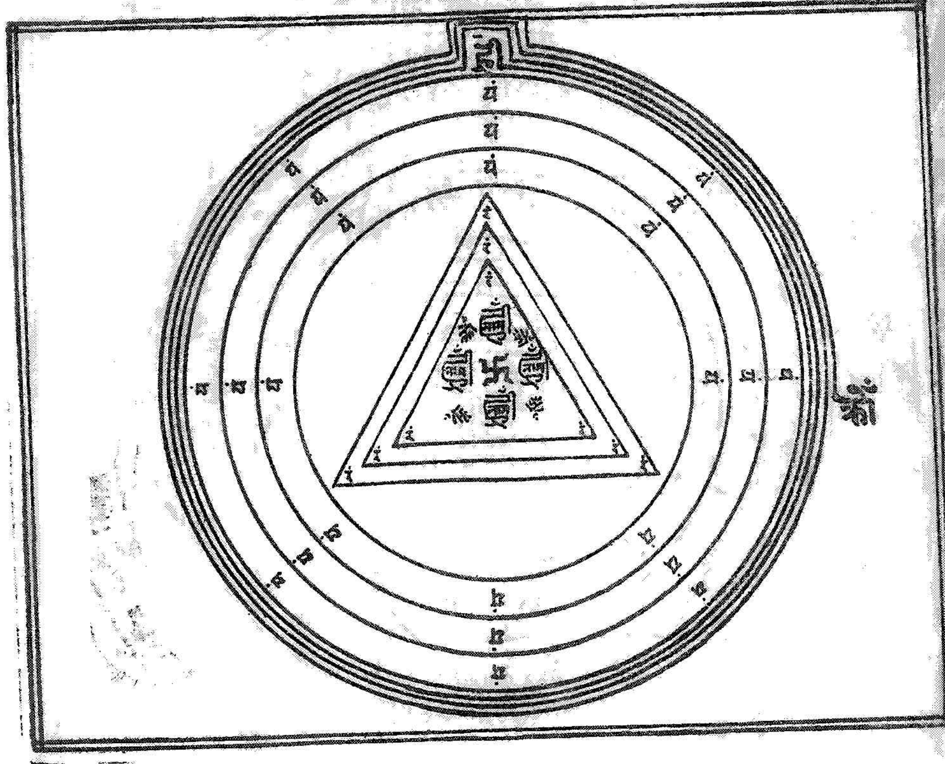


परिच्छेद ६ श्लोक ३ से ५


॥ वश्य यंत्र ॥ ३ ॥

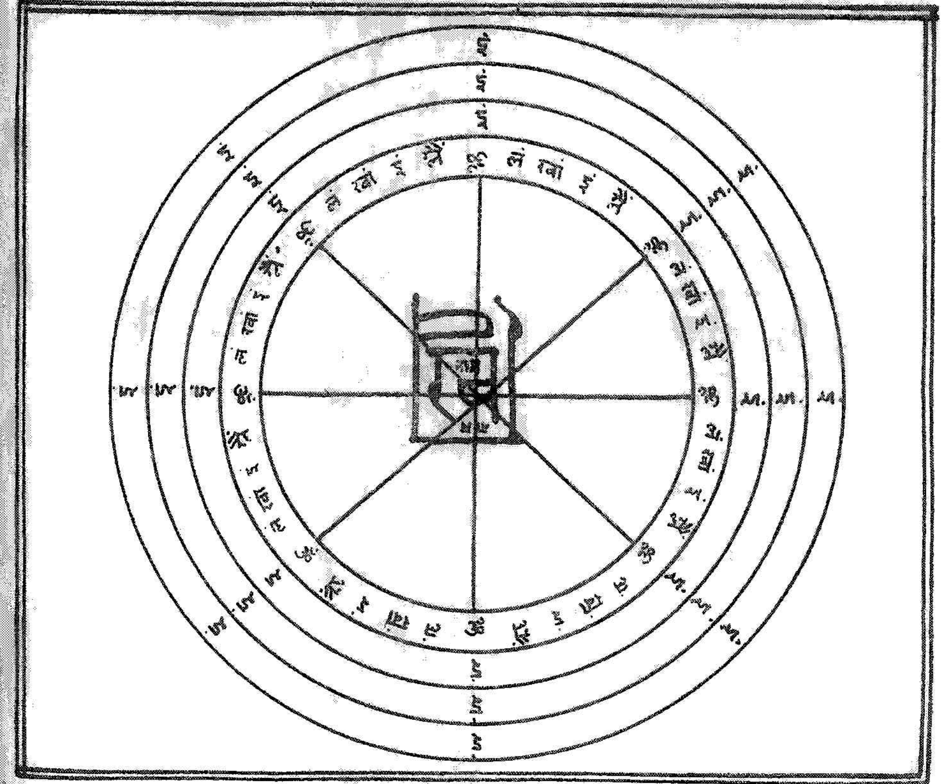

मोहन वश्य
यंत्रम् ४

॥ स्त्री आकर्षण यंत्र ॥ ५॥



परिच्छेद ६ श्लोक १०–१३ पृ० ७५

॥ दिव्य गति सेना जिव्हा और क्रोध स्तंभन यंत्र ॥



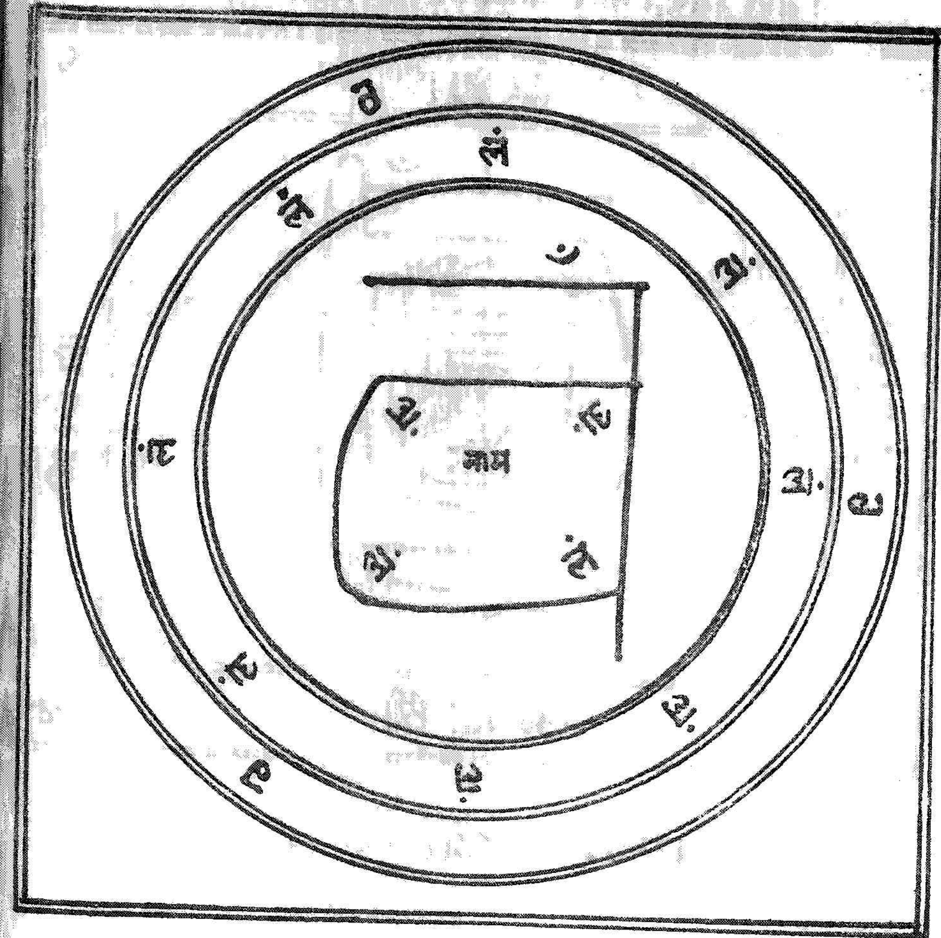
परिच्छेद ६ श्लोक १४–१५ पृ० ७७

स्तंभन यंत्र

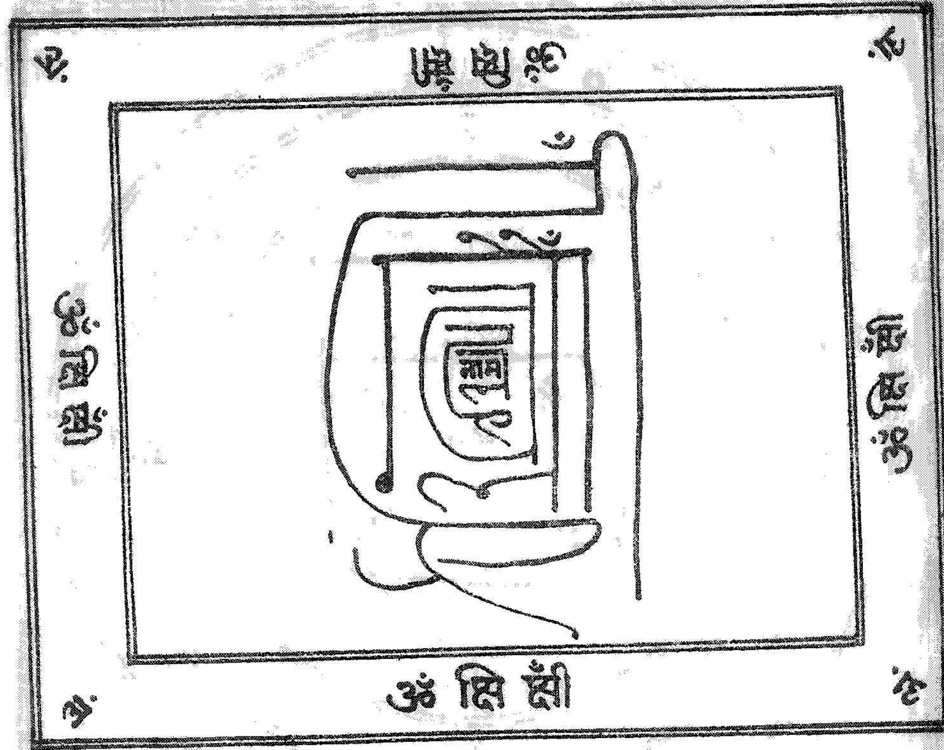
दह दह पच पच विध्वंसय विध्वंसय उत्क्षप

[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ

॥जिव्हा स्तंभन यंत्र॥

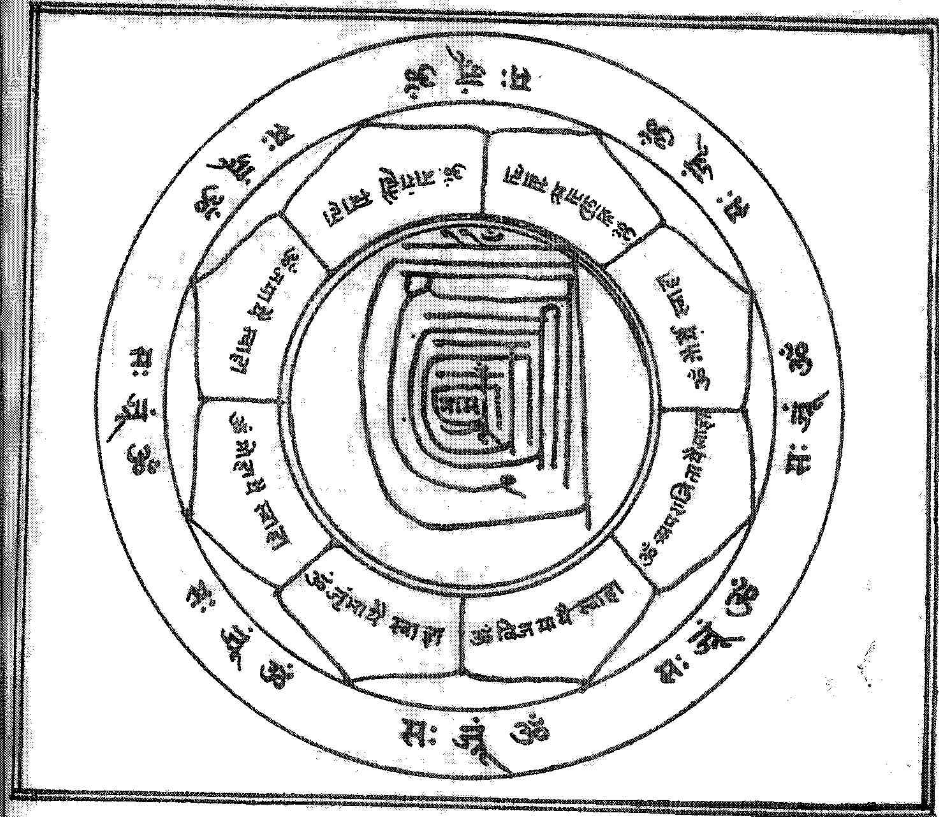


॥ गति जिव्हा और क्रोध स्तंभन यंत्र॥

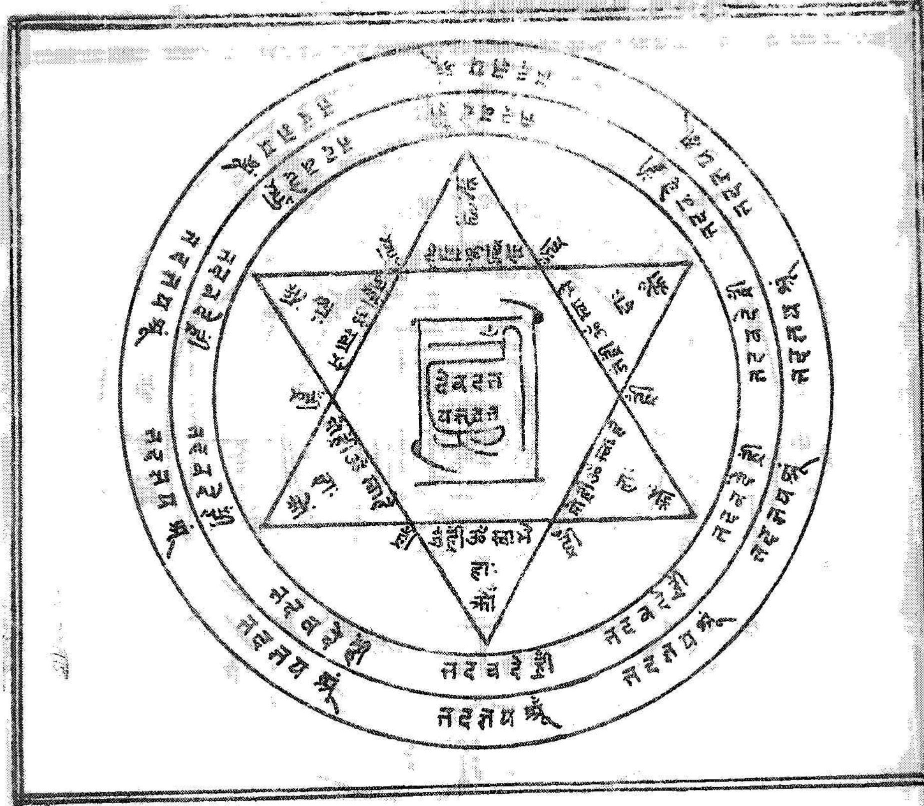


परिच्छेद ६, श्लोक २०--२१ पृष्ठ ८०

॥पुरुष वश्य यंत्र॥

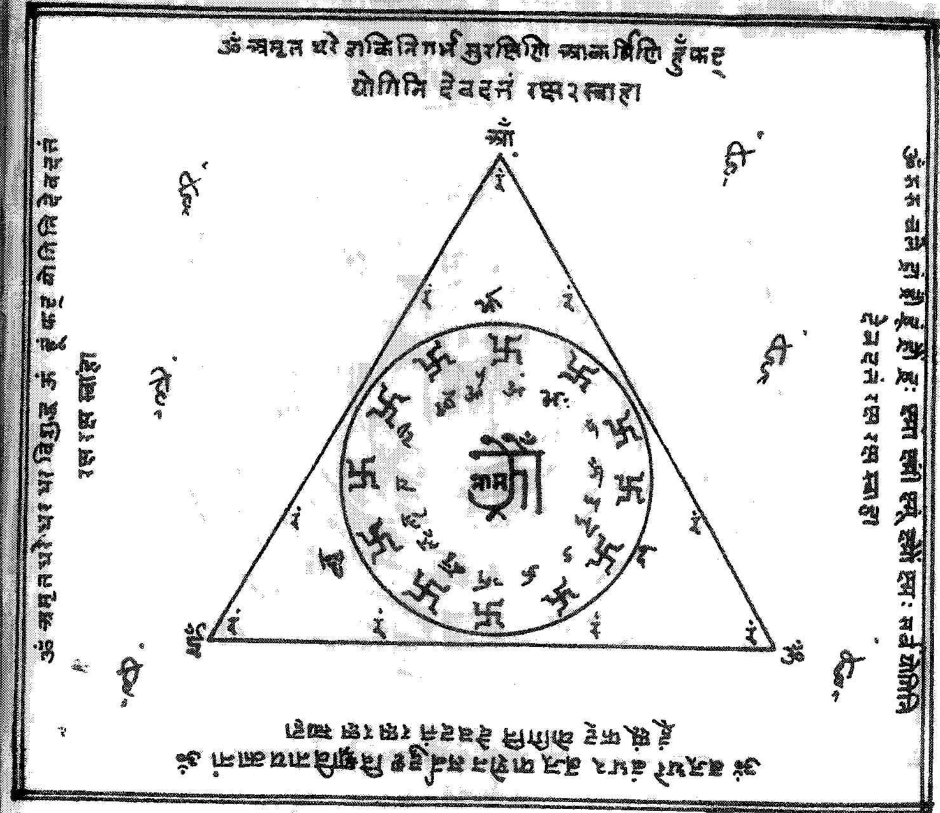


परिच्छेद ६ श्लोक २२--२४ पृ० ८१



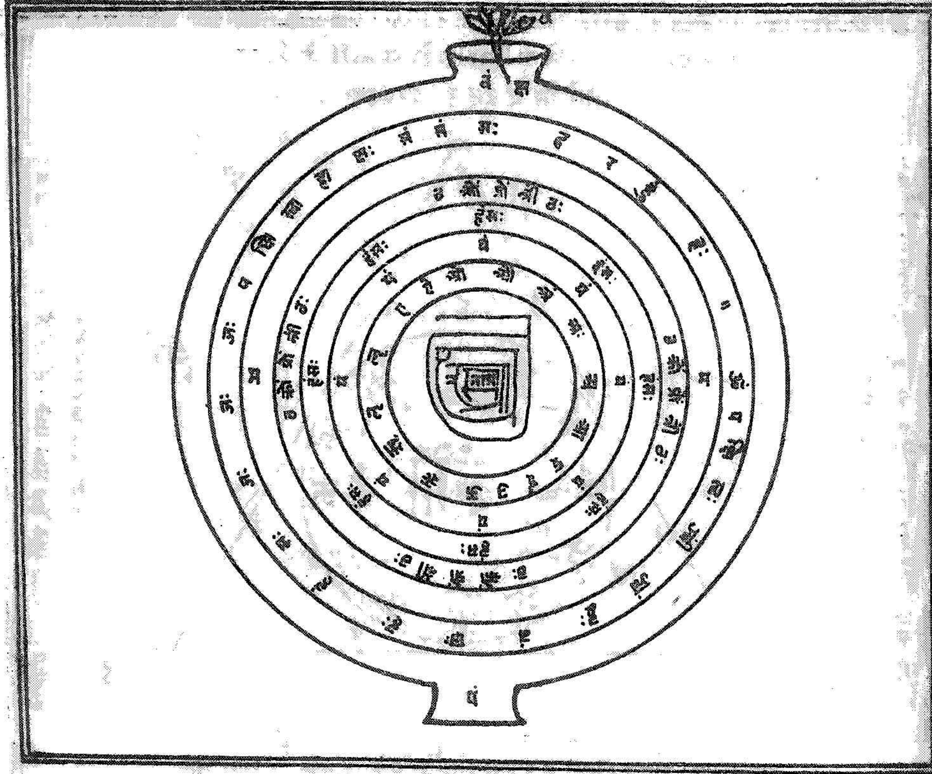
परिच्छेद ६ श्लोक २५–२७ पृ० ८२

॥ शाकिनी भय हरण यंत्र ॥ २ ॥



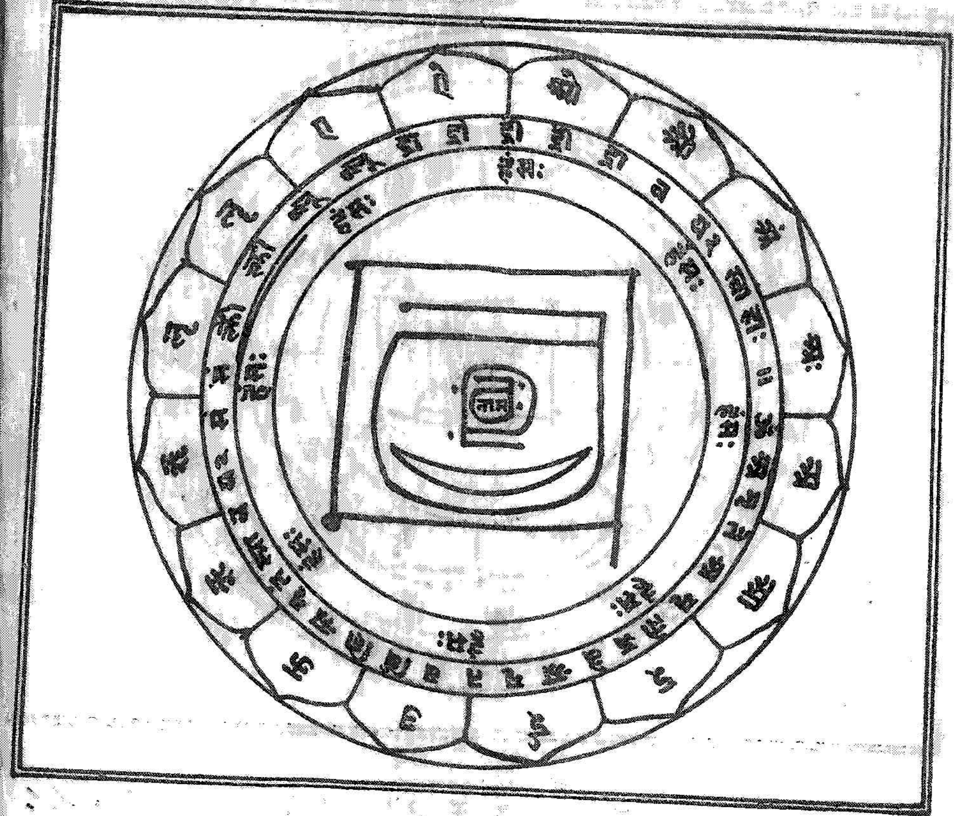
परिच्छेद ६ श्लोक २८ पृ० ८३

॥घट यंत्र॥



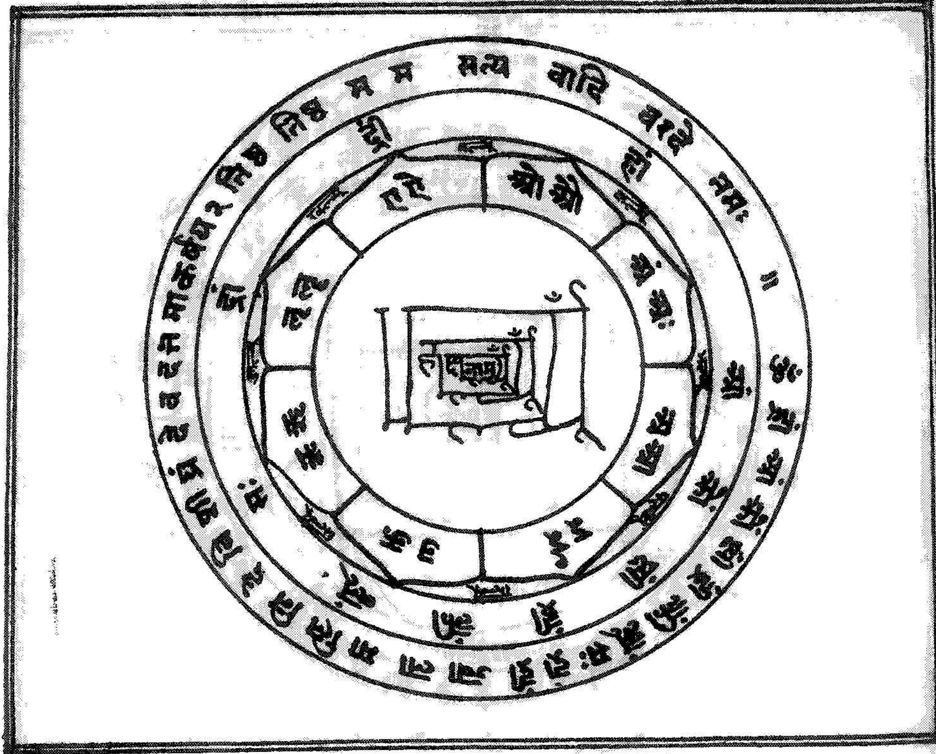
परिच्छेद ६ श्लोक २९–३४ पृ० ८४

॥सर्व विघ्न हरण यंत्र॥



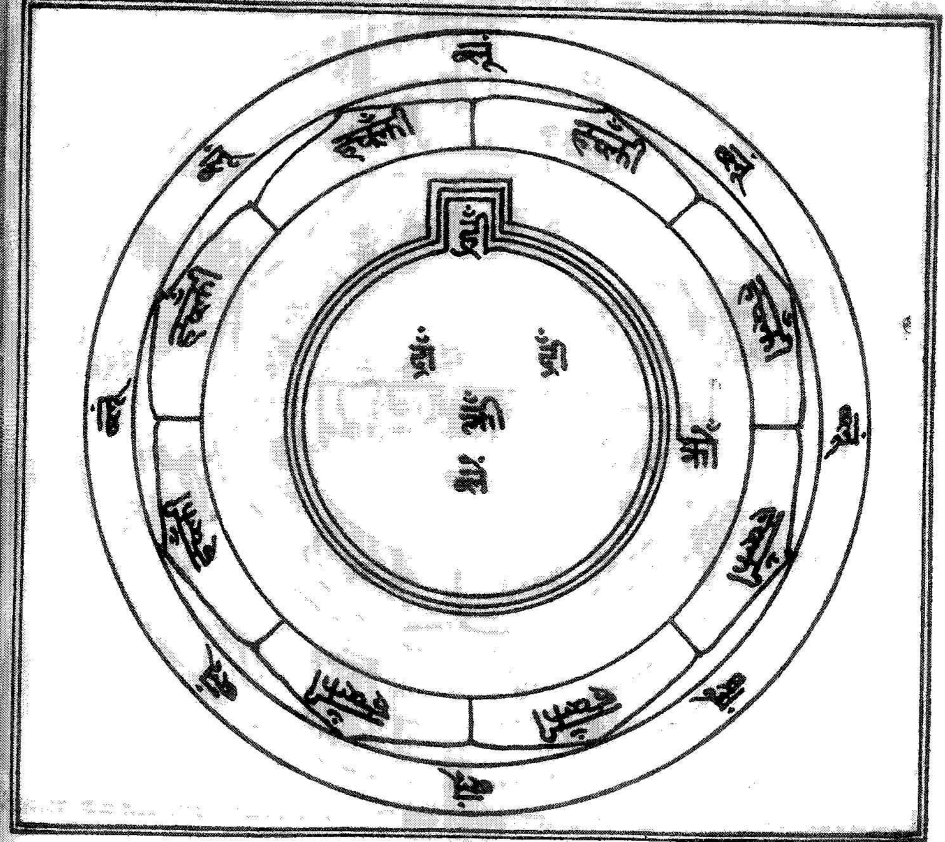
परिच्छेद ६ श्लोक ३६ से ४० पृ० ८६

॥आकर्षण यंत्र॥



परिच्छेद ६ श्लोक ४१ से ४३

॥परम देव ग्रह यंत्र॥



परिच्छेद ६ श्लोक ४४ से ४६

ज्वालामालिनी विधि । पृ० १३०

आकर्षण यंत्र । पृ० १३२

वशीकरण यंत्र ।

ज्वालामालिनी मंत्र ।





कविराज श्री इन्द्रनन्दीजी कृत

ज्वालामालिनी कल्प

२३ यंत्र, मंत्र व साधनविधि सहित ७५ मनचाहे विधान व सार्थ



ालिनीदेवी (श्री चंद्रप्रभुकी अधिष्ठात्री देवी)
ंदुस्तानकी धातुकी एक प्रतिमाजी, मदरास म्युझीयमके
–महान शोधक डॉ० उमाकांत प्रेमानन्द शाह एम.
ए. पी. एच. डी. आदि बडौदा।

प्रकाशक—दिगंबर जैन पुस्तकालय, गांधीचौक सूरत